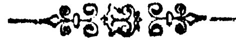
ईश्वर प्रार्थना माळा.



गद्य पद्य गायन सहित.

अमदावाद प्रार्थना समाजे
छपावी प्रगट करी

आवृत्ति बीजी

(२००० प्रतो)

सत्यमेव जयते.

अमदावाद मध्ये
सामानी हवेलीमां यु. मी. अने जनरल एजन्सी कंपनी "लिमिटेड"ना प्रेसमां
रणछोडलाल गंगारामे छापी.

संवत १९३१.   सने १८७५.

कीमत रु १)

ॐ तत् सत् परमात्मने नमः

प्रस्तावना.

आ जगतनो कर्ता अने नियंता परमेश्वर एक अप्रितम आनंदमय अने अद्वितीय छे; ए बधा गुणोनी साथे ते न्यायी तथा परमकृपालु छे, अने तेनां सरजेलां प्राणीओनुं ते पालन पोषण करीने तेओनी प्रार्थना यथा घटित सांभळे छे, ने पोताना सद्गुणी साचा भक्तोने मोक्ष आपे छे. ए समर्थ प्रभुना गुण महिमा तथा स्तुति गाइ तेनी शुद्ध भक्ति तथा उपासना करवी ए मनुष्यनो मुख्य धर्म छे. उपासना करवाना घणा विधि छे परंतु अप्रातिम ईश्वरनी अनन्य भावथी मानसिक भक्ति करवी एज उत्कृष्ट भक्ति अने एज तेने प्रियछे एम सर्व परमार्थदर्शक सर्वोत्तम पंक्तिनां शास्त्रनो सिद्धांत छे. ए सृष्टिनो कर्ता छे, ने तेनी भक्ति करवी ने तेने प्रसन्न राखवो ए ज्ञान माणस संपादन करी सकेछे माटे मनुष्यदेह उत्तमछे. ए ज्ञान ईश्वरदत्त छे, अने केवळ बीज रूपे माणस मात्रमां रहेलुं छे. जेम जेम विचार शक्ति वधती जाय तेम तेम ए बीज वधी पूर्णताने पोंचे, एवो ईश्वरी नियम जणायछे; प्राचीनकाळमां माणसोनी विचार शक्ति केळवाएली नहि

ने तेमना धर्म संबंधी काचा विचार हता. ते वेळा तेमनी समज्ञ प्रमाणे ईश्वरनां अनेक रूप कल्पी तथा तेने माणस प्रमाणे इंद्रिय भोग हशे एम मानी तथा ईश्वरी शक्तिना कल्पित विभागो करी तथा तेओनां जुदां जुदां काम कल्पी तेमनी सेवा पूजा करता हता ने हवडां पण लोको अज्ञानथी तथा वहेमथी एवी गौणी भक्ति करेछे. पृथ्वी उपर राजा जेम अलंकार वस्त्र, धन, अने भोजनादिकथी संतोषाय छे, अने प्रसन्न थायछे तेम तेओ थता हशे एमं धारी, अनेक प्रकारे एने शरीरे सुख अने वैभव दान करवा लाग्या, अने करेछे. अनेक देवोने विचित्र रूप आप्यां छे. पराक्रमी अने वीर पुरुषो तथा स्त्रीओने ईश्वरना अवतार किंवा अंश धारी पूजे छे. कोई होम हवन करी बळी आपे छे. उत्तम भक्तिनी पद्धतिनो विचार एके काळे माणसना मनमां आवी सकतो नथी, कारण के बुद्धि केळवाईने प्रकाशित थाय त्यारेज सत्यनुं ज्ञान प्राप्त थायछे. बुद्धि केळवाय नहीं त्यां सुधी माणसोनी विचारशक्ति मंद रहे अने अंतःकरण अंधकारमां रहे ए स्वाभाविक छे. बीजी विद्याओ जेमके यंत्रविद्या ज्योतिष्यविद्या, गणितशास्त्र, शारीरविद्या, भूस्तरविद्या इत्यादि वि-

द्याओनो विद्वान पुरुषो शोध करीने तेमने पूर्णतामां लाव्या-छे ने लावे छे, तेज रीते लोको सृष्टिनी रचना तथा नियमो उपर व्रधारे विचार करवा लाग्या त्यारे अखिल ब्रह्मांडनो ईश्वर एक अगोचर अने निराकार छे एवुं ज्ञान थयुं अने सृष्ट वस्तुने के कृत्रिम पदार्थोने ईश्वरमानी तेनी भक्ति करवी ए गौण अथवा नीची भक्ति छे, अने तेनुं मानसिक ध्यान तथा वंदन ए पराभक्ति एटले उत्तमभक्ति छे एवो सिद्धांत करीने ते विशे प्रमाण वचनो लख्यां. आ सिद्धांतो परथी, सृष्टिनी रचनापरथी, अने पाको विचार करवाथी श्री जगदीश्वरनी उत्तम भक्ति करवी ए मुख्य कर्तव्य धर्म छे ए नक्की जणाशे. ए विश्वपालकने भुली न जतां एनुं वारंवार चित्तमां स्मरण राखवाथी तेनो उपकार मानवाथी अने तेनी स्तुति करवाथी उभय लोकमां कल्याणछे. ईश्व-रनी स्तुति तथा प्रार्थना जे भाषा आपणे समजता होईए ते-मां करवी,कारण के आपणा मननी वात आपणा परमपिता परमेश्वरने निवेदन करती वेळा आपणे शुं बोलिये छिये ते आपणे समजवुं जोईए.ते विना प्रार्थनानी आपणा मन उ-पर असर तथा ईश्वर साथे तल्लीनता थई सकति नथी. आपणे शुं मागीए छीए ते आपणे जाणवुं जोईए. कृपाळु

ईश्वरनी सर्व भक्त जनो भेगा थईने भक्ति करे ए हेतुथी प्रार्थना समाज स्थापन थई छे ने तेना उपयोगने वास्ते प्रार्थना माळाना बार अंक तथा गायन भाग तथा गद्य प्रार्थना रचवामां आवेली ते पुस्तको घणां खरां खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति काढवामां आवी छे, तेमां घटतो सुधारो तथा वधारो करीने तेना पंदर आंक कीधा छे. प्रार्थना करनाराओने सुगम पडवा प्रत्येक अंकमां गद्य, पद्य, गायन अने छेली आरती ए रीते अनुक्रमथी गोठवण करवामां आवीछे. कठण शब्दोनो कोश आप्यो छे तथा गायननां पदना राग, ताळ ने चालनी समज गायननी अनुक्रमणिकामां आपी छे.

प्रार्थनामां ईश्वरना चरण तथा मस्तक हस्त ए मात्र अलंकार रूपे लखेलां छे. वस्तुतःईश्वर एक अप्रतिम अने अद्वितीय छे एज सिद्धांत मान्य छे.

माटे एवा परम कृपावान मंगलमय सच्चिदानंद परमेश्वर उपर श्रद्धा राखीने तेनी भक्ति करी तेने शरण थवुं एज मनुष्य देह धारण करवानुं फळ छे.

श्री जगदीश्वरो जयतु.

अंकनी अनुक्रमणिका.

गायननी अनुक्रमणिका.

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
,,	शरण तने भगवान.	काफी.	त्रिताल.	समरु सदा भरपूर.
,,	तुजविण अन्य नहीं प्रभु त्राता.	,,	,,	
,,	अवगुण दोषो दया-निधि.	खमायची जिल्लो.	दादरो.	बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.
५	जगदीश छो अनुप.	भैरव तथा सर्व राग-मां गवाय.	चोताल.	
,,	कृपानिधि पूर्ण मन काम करो.	विहाग.	त्रिताल.	निरधन को धन राम.
,,	स्तवन शुभ तारुं करुं रे.	खमायची जिल्लो	त्रिताल पंजाबी.	
,,	नाथ तारे चरणे हु नित्य नमु रे.	सोरठ जिल्लो.	त्रिताल.	
६	प्रणमु सदा परेश.	भैरव तथा सर्व राग-मां गवाय.	चोताल.	
"	करुणा करोरे कृपाल.	काफी.	त्रिताल.	समरुं सदा भरपूर.
,,	एक अखंड अनंत.	खमायची जिल्लो.	त्रिताल.	नारायण नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.
,,	प्रभु पद पंकजे सदा हु पाय लागुरे.	,,	दादरो.	बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.
७	भगवंत ब्रह्म प्रभु.	भैरव तथा सर्व राग-मां गवाय.	चोताल.	

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
,,	परमात्मा परिपूर्ण प्रभु.	खमायची जिल्लो.	त्रिताल.	नारायण नरसिंह नरोतम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.
,,	विनति करुं करजोडी.	,,	,,	
,,	जगदीश्वरने हुं वंदु.	सोरठ.	,,	
८	जय जगवंद्य जय.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जय जगवंद्य दयासिंधु.	जिल्लो.	एको.	मेरेगीरधर गोपाल दुसरा न कोइ.
,,	विनति प्रभु सांभळो मारी.	काफी.	दीपचंदी.	
९	तत् सत् ब्रह्मपद.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	अपराध क्षमा करो मारो.	काफी.	दीपचंदी.	
,,	नियंता नाथरे.	काफि जिल्लो.	,,	
१०	मंगल समय आज.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	प्रभुना तमारीछे मोटी.	सोरठ.	त्रिताल.	
,,	परब्रह्म प्रणाम करुं तमने.	,,	,,	
,,	तारोरे दयाल.	सोरठ जिल्लो.	त्रिताल. पंजाबी.	

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
११	सगुण समर्थ सत्य.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जग त्राता.	नट.	ब्रह्मताल.	
,,	जगदीशने शीश न- मावुं.	काफी.	दीपचंदी.	
१२	नमु नित्य विश्वपति.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	विश्वनाथ तु विना.	जिलो.	एको.	मेरे गीरधर गोपा- ल दुसरा न कोई.
,,	प्राणपती सुणो विन- ति अमारी.	खमायची मिश्र का- फी जिलो.	त्रिताल.	
,,	कृति साम प्रभु करी नव जुवोरे.	कहारवो.	,,	
१३	धन्य धन्य धन्य धन्य.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	विधाता धन्य छे.	काफी जिलो.	दीपचंदी.	
१४	वंदु परब्रह्म चरण.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जय हे जगदी- श्वर इश्वर.	यमन कल्याण.	दीपचंदी ता. लावणी नी गत.	

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
,,	सत चिदघनना स्वरूपमां.	खमायची जिलो.	दादरो.	बहुचर नाम तणी लेह मने लागी रे.
१९	शुभ गुण गायगायरे.	काफी.	चोताल.	
,,	नमु जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर पर पद मंगलदाता.	बिलावल.	त्रिताल.	अष्टपदी.




अंक १ लो.

ललितछंद.

जय जय प्रभू, ब्रह्मचिद्घना,
पतित पावना, पाप मोचना;
प्रणमिये अमे, प्रेम भावथी,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥१॥

सकल विश्वमां, व्यापिने रहो,
जिव प्रते करो--छो अनुग्रहो;
सबल सत्य छो, श्रेष्ठ सर्वथी,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥२॥

ऋषि मुनी वदे, वेदनी श्रुति,
तदपिना जडे, तारि तो गति;
अति अगम्य छे, सृष्टिनी कृति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥३॥

अवधि बुद्धिनी, बांधि छे तमे,
नियममां रही, चालिये अमे;
मति नहीं जशे, पारते थकी,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥४॥

तुज दया थकी, दुर्मती टळे,

तुज दया थकी, सन्मती मळे;
तुज विना कृपा---नाथ को नथी,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥५॥
पुषण प्राणिनां, प्रेमथी करो,
नियम ए दया---नाथनो खरो;
विभु वरेण्य छो, विश्वना पति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥६॥
क्षण प्रतिक्षणे, रक्षणो करो,
सकल दुःखसं---कष्ट संहरो;
नव कदी करो, नाथ दुर्गति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥७॥
कुशल क्षेमक---ल्याणकारक,
प्रणत प्राणिना, प्राण तारक;
नव जुवो तमे, दोष दुष्कृति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥८॥
करूणनाथ हे, हे कृपाघना,
दुरित कर्मनी, मागिये क्षमा;
विभु विचारशो, भक्तनी स्थिति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥९॥

प्रणमिये अमे, वारवाररे,
विनतिने करो, अंगिकार रे;
प्रभु प्रसादथी, थाय सद्गति,
प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥१०॥

(आ समे परमेश्वरनुं ध्यान करवुं, अने एक चित्ते तथा गंभीरपणे प्रार्थना करवी.)

ध्यान—आखा विश्वनो रचनार अने नियंता, प्राणीमात्रनो सरजनहार अने पाळनार जे सर्व शक्तिमान परमेश्वर तेनी दया अने तेनी कृपा पामवाने हुं शी रीते योग्य थाउं? ते महा प्रभुनुं स्वरूप केवुं हशे? ते महा कृपाळु, ते करुणा सागर, महा प्रतापी परमात्माने पगे लागी तेनी क्षमा मागवी ए मारो, अने माणस मात्रनो धर्म छे. मारा हृदयमां, मारा चित्तमां, आ वेळा कोण वश्युं छे? परमेश्वरना किया गुणो उपर हुं लक्ष दउं? तेना हरेक गुणथी हुं मोह पामुं छुं. बधा महान गुणोथी ते भरपूर छे, तेनो महिमा, तेनो प्रताप अतुल्य अने अपार छे. मारो आत्मा ए महा प्रभुने शी रीते पामे? तेना महा तेजनो कांइक अंश मारा हृदयमां, मारा मनमां प्रकासे तो तेनुं कांइ अ-

ल्प ज्ञान मने थाय. ओ मारा मन तुं आ वेळा एकला परमेश्वरना नामथी, परमेश्वरना स्मरणथी, अने परमेश्वरना ध्यानथी रोका.

(उपकार मानवो अने प्रार्थना करवी.)

हे जगत्पिता! हुं तमारो पाड किया शब्दोवडे मानुं? तमारी कृपाथी हुं आज सुधी जीवी मोटो थयोछुं. तमारी मेहेरथी मने खावाने अन्न मळ्युंछे, तथा रात्रे ओढवा पाथरवानुं मळ्युंछे. उंघुंछुं त्यारे तमे मारुं रक्षण करोछो, अने दिवसे मने पाळनार पण बापजी तमेज छो. मारो सघळो आधार तमे छो. तमारा आशराविना आ संसारमां माराथी एक घडी टकाय नहीं, एक क्षण पण जीवाय नहीं. जे जे सुख हुं पाम्यो छुं, अने हवे पछी मने सुख आपनार तमारा विना बीजुं कोई नथी. मारा बेली तमेज छो. जेम मने पाळनार छो तेम मने रुडे मार्गे चलावनार थाओ; मने सुमति आपो के हुं नीतिशास्त्र प्रमाणे वर्तीं सद्गुणी थाउं. मारी बुद्धिने भमावनार अने आडे मार्गे लई जनार संसारमां घणी लालचो छे ते सर्वेने पारखवाने ज्ञान आपी, अने तेओने जीतवाने दृढता आपी आपनो सेवक थवाने मने योग्य करो. कियां कर्मो कर-

वाथी पाप लागे, अने कियां कर्मो करवाथी पुण्य थाय ते समजवानी मने बुद्धि आपो, अने पापथी दूर रही माराथी पुण्यनां काम थाय एवुं करो. हे देवाधिपति, हे कल्याण-कारी महा प्रभु! तमे प्रसन्न थाओ एवी रीते हुं चालुं, ए प्रमाणे हुं वर्तुं, एज मारी मनकामना छे, एज मारो मनोरथ छे. हे दयाळु महापिता! आ मारी दीनवाणी सांभळी मारा दंडवत्‌ने अंगीकार करी मारी प्रार्थनाने सफळ करो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिखरिणीवृत्त.

अनाद्यंता देवा, अनुपम अविद्या थकिपरा,
परेशा विश्वेशा, प्रणमु परमात्मा प्रभुवरा;
सदा पादाब्जेहुं, अति विनयभावेथि विनवुं,
विभू विश्वा धीशा, अनुग्रह तमारा अनुभवुं. ॥१॥
अती पापी हुं छुं, विषय महि लाग्युं चित घणुं,
कृपादृष्टी वीना, नव रहि शकुं हुं क्षणु अणु;
नियंता त्राता छो, कुशळ सुखदाता दुखहरा,
विधाता धाता छो, शरण तुज आव्यो अघहरा. ॥२॥
चढो वारे मारे, अति दिन गणी सेवक मने,

कृपा सिंधू वंदुं, प्रणत जन बंधू प्रभु तने;
रची ब्रह्मांडोने, नियम अति भारे बहु करचा,
जिवो शुं विस्तारे, विध विध प्रकारेज पसरचा. ॥३॥
ग्रहो वर्गो सर्गो, गणित क्रमथीरे गगनमां,
तमारी सत्ताथी, निशदिन रह्याछे भ्रमणमां;
दया पूरी देखुं, सबल प्रभु प्रेखुं सकलथी,
जिवो संरक्षार्थें, प्रगट पय कीधुं प्रथमथी. ॥४॥
प्रभु सृष्टा जाणुं, फरि फरि वखाणुं विनयथी,
दया वीना तारी, मन नहि खसेरे विषयथी;
प्रभू आ संसारे, सकल शुभ कर्मोज करवा,
सुजाड्या जीवोने, भव विषय मोहोथि तरवा. ॥५॥
किधां दुष्कर्मोमें, क्यम करि शकुं शुद्ध मनने,
दया सिंधू वंदुं, विमलमति आपो प्रभु मने;
प्रभू घांटी मोटी, निजबलथि ना जाउ उतरी,
कृपा दृष्टी पूरी, करि करग्रहोरे प्रभु हरि. ॥६॥
महा सिंधूमांथी, तरणबल शुं हुंज पशुने,
प्रभू संभाली ल्यो, शरण गत जाणीज शिशुने;
असत्पंथे चालुं, तदपिज करोछो अनुग्रहो,
क्षमावंता देवा, अवगुण अमारा नव लहो. ॥७॥

दयावंता दाता, *दिन गणि निभावो प्रभु मने,
नमी साष्टांगे हुं, विनयथि विनंती करू तने;
अनूकंपाथी तो, प्रदिपित करो मारि मतिने,
प्रभू पोचाडी द्यो, परम सुख आपी सुगतिने. ॥८॥
करावो सत्कर्मो, सकल शुभ धर्मो प्रभु तमे,
शमावो जे कीधां, दुरित बहु कर्मो अहिं अमे;
सुउद्योगो आपो, दुख सकल कापो कारि कृपा,
भ्रमो मिथ्या जाशे, प्रभु कादि करोजो अवकृपा. ॥९॥
तमे कष्टो कापो, परम सुख आपो अहिं मने,
तमारो केवायो, विदित बाधि मारी कृति तने;
पिता माता भ्राता, परमपद दाता दुख हरा,
दया नाथा धाता, सकल भय त्राता भवधरा. ॥१०॥
क्षमा आपी देवा, दिन† प्रति दया नित्य करवी,
प्रजा केरी क्रीया, प्रभु कादि चितेतो न धरवी;
तरचा भक्तो तारा, भव जलथि तारा स्मरणथी,
भमावो मां भामां, विमुख नव राखो चरणथी. ॥११॥
प्रभू पापो कापो, परम करुणा लावि चितमां,
निवारो संतापो, त्रिविधि दुख तापो जगतमां;

*दीन. †दीन

कुडां कृत्यो मारां, भणि कदि न जोशो जगपति,
सदा सन्मार्गोंनी, अति विमल आपो प्रभुमति.॥१२॥
कृपालू मायालू, बहु बहु दयालू प्रभु हरे,
प्रमाणो छे शास्त्रे, निगम बहु वाक्योथि उचरे;
दया दृष्टी देवा, दिन जन प्रते नित्य करशो,
करूं तारी सेवा, सकळ दुख संताप हरशो. ॥१३॥
परा भक्तीथी हुं, प्रणिपत करूंछुं प्रभु सदा,
स्विकारी ल्यो स्वामी, अनुग्रह विसारूं नहि कदा;
थयोछुं विश्वेशा, बहुज अपराधी तदपि हुं,
तमारे विश्वासे, सुखथि भवमां हुं वशि रहुं. ॥१४॥
महा देवा दाता, नमि नमि करूं नम्र विनति,
प्रभू बीजो त्राता, तुज विण अमारो अहि नथी;
निराधाराधारा, निरुपम नियंता चिदघना,
पुरो अर्थो सारा, करि अति कृपा भक्त जनना.॥१५॥

नाराचवृत्त.

महाधिराज स्वामि सर्वना समर्थ छो तमे,
तमारि साह्यता थकीज विश्वमां वश्या अमे;
अनन्य भक्ति भावथीपसारि बेउ हाथने,

नमी नमी नमी हु नित्य वंदु विश्वनाथने. ॥१॥
प्रभू कृपानिधान सर्व शक्तिमान छो बहु,
सदापदारविंदमां हु ध्यान राखिने रहुं;
कदी महान भक्तो न पामशे विषादने,
नमी नमी नमी हु नित्य वंदु विश्वनाथने. ॥२॥
सृजावनार सृष्टिकार्यथी दिसो तमे अहीं,
अती दया क्षमा कृपा प्रभू स्वभावमां रही;
स्मरुं हु ते त्रिलोकनाथ एकरे अजातने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ३ ॥
असंख्य चक्रचकीत गोल व्योममां दिसे घणा,
ग्रहो उपग्रहो तणा गणीतमां नहीं मणा;
अपार शक्ति धारनार तारनार नाथने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ४ ॥
अतर्क्य शक्तिछे प्रवेश अल्प जीव शुं करे,
प्रभू कृपाथकीज भक्त कार्य सर्व तो सरे;
नमी गयाज नास्तिको मुकी दिधो विवादने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ५ ॥
अनीति दुष्कृती तणी क्रिया थई अती घणी,
अनाथ नाथ नित्य सत्य सर्वना तमे धणी;

कृपा कटाक्षथी करो क्षमा महापराधने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ६ ॥
समस्त जंतु पोषण क्रिया किधी कृपाथकी,
दया घना दया तमारि तो जणायछे नकी;
कदीज पुत्र दोषथी न रोष थाय तातने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ७ ॥
तमे दयालछो कृपाल भक्त पालरे प्रभु,
विनंति सर्व सांभली सहाय तो करो विभु;
प्रणाम वारवार हुं करूंछु प्राण नाथने,
नमी नमी नमी हु नित्यवंदु विश्वनाथने. ॥ ८ ॥

छंद मालिनी.

जय जय जगदीशा सृष्टिकर्ता कृपाला,
त्रिभुवन प्रतिपाला प्राणदाता दयाला;
तुजपद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ,
विदित विभु अमारी आपने सर्व वात. ॥१॥
अलपमति अमे आ मागणी सर्व कीधी,
कराव उचित केइ नाथ लक्षे न लीधी;
घटित विभु हशे जे तेज स्वीकारि लेशो,

प्रणत जन जिवोने पूर्ण आशीष देशो. ॥२॥

गायन.

पद.

प्रभु सर्व शक्तिमान, करूणा कृपा निधान,
धरिये तमारूं ध्यान, सन्निध पधारो, ॥
भगवंत तुं समान, नथि कोइ बलवान,
संकट सेवकतणां, सघळां निवारो, ॥ प्रभु०
अनुग्रह उपकार, करो तमे वारवार,
चित्तथी तमारा प्रभु, कादि न विसारो, ॥
किधा बहु अपराध, क्षमा करो विश्वनाथ,
विभु मात तात तमे, करूणा विस्तारो. ॥१॥ प्रभु०

पद.

करू प्रभुने हुं प्रणाम, पूरण प्रेम धरिरे प्रभु०॥
अचळ अगोचर त्रिभुवन व्यापक प्रभुछो अंतर्याम,
तुज यश महिमा गुण गावाने वाणी पामे विराम,
मति नहिं चाले जरिरे प्रभु ॥१॥ करू प्रभुने०॥
अनुग्रहथी अवगुण न जुवो करूणासागर नाम,
जीव तणा प्रतिपालक जाणुं राखी चित्तमां हाम,

भवथी जाउं तरिरे प्रभु ॥२॥ करू प्रभुने०॥
अगणित में अपराध किधा छे नव पामुं कहिं ठाम,
अति करूणा प्रभु करी मुज उपर आपो अविचल धाम.
धीरज धारूं खरीरे प्रभु. ॥३॥ करू प्रभुने०॥
सृष्टि तणी रचना रची पोते पृथक रह्या निष्काम,
भक्ति थकी भगवंत पमाशे दास हुं जाणुं आम,
अति सत्ता पसरिरे प्रभु ॥४॥ करू प्रभुने०॥
सर्व काल हुं शरण तमारे अन्य नहीं विश्राम,
ऐहिकामुष्मिक सुख आपी सफल करो शुभ काम,
करुणा पूर्ण करिरे प्रभु ॥५॥ करू प्रभुने०॥

पद.

ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं नित्य निरंतर ध्यान धरूं ०॥
भर्ग वरेण्यथी व्याप्त विभु विश्वेश पदे हुं प्रणाम करूं,
प्रेरो प्रभु मति सद्गति आपो ए वचनो मुखथी उचरूं॥१॥
॥ते सविता०॥
सर्वज्ञ सर्वान्तर्गत सकलेश्वरने हुं सदा समरूं,
सर्व कर्मना साक्षी गणुं हुं निंद्य कर्मथी नित्य डरूं ॥२॥
॥ते सविता०॥
सृष्ट वस्तुथी भिन्न अगोचर एक रूप जे अकल खरूं,

ते करुणा सागरने चरणे शरण रही करद्वय पसरुं ॥३॥

॥ते सविता०॥

भक्तिपरा भगवंत तणी अति श्रेष्ठ गणी न कदी विसरुं,

विश्वनाथ विश्वास तमारो धरी नीतिथी नव हुं फरुं ॥४॥

॥ते सविता०॥

अति दीन अल्पज्ञ अशक्त क्षण प्रतिक्षण अपराध करुं,

परम कृपाथी क्षमा करशो तो भवसिंधुथी सत्य तरुं॥५॥

॥ते सविता०॥

पद.

मन कर्म वाणी थकी प्रभुने वंदुरे ॥०॥

परमात्मा परब्रह्म परात्पर,

प्रणमुं प्रीते प्रणत जन बंधुरे ॥१॥ ॥मनकर्म०॥

विश्वोद्धारक विभु सुख कारक,

प्रभु तुज भक्तिमां सदा हुं आनंदुरे ॥२॥ मनकर्म०॥

शरण तने हुं दीन जन बालक,

तमे पालक समस्त जीवजंतुरे ॥३॥ मनकर्म०॥

पूर्ण करो प्रभु योग्य मनोरथ,

दीनदयाल छो कृपाल दयासिंधुरे ॥४॥ मनकर्म०॥

आरति.

जयदेव जयदेव जयजगदाधारा जयजगदाधारा,
अंतर्यामि अपारा (२) सर्वोत्तम सारा ॥१॥ जयदेव०
स्वायंभू विभु आप, त्रिभुवनमां व्यापो, (२)
सुख संतोषो आपी (२) किल्विष सौ कापो ॥२॥ जयदेव०
मंगल सुंदर रूप करुणा मय तारुं, (२)
प्रेम भावथी मारा (२) चितमां नित्य धारुं ॥३॥ जयदेव०
श्रद्धा रूपी अर्घ आपुं हुं चरणे, (२)
गंधाक्षत भक्तीनां (२) अर्पी रहुं शरणे ॥४॥ जयदेव०
एकाग्रेथी ध्यान धारुं हुं चित्ते, (२)
प्रेम पुष्प वधावुं, (२) प्रभु शीर्षे नित्ये ॥५॥ जयदेव०
सदाकाळ सन्निध जाणीने देवा, (२)
ज्ञानातीथी निरखुं, (२) ए उत्तम सेवा ॥६॥ जयदेव०
विस्तारी विश्वेश आति अद्भुत माया, (२)
साष्टांगे तमने हुं, (२) प्रणमुं जगराया ॥७॥ जयदेव०
अवगणना अपराध अतिशय छे मारा, (२)
क्षमा करो करुणाथी, (२) प्रभु जगदुद्धारा ॥८॥ जयदेव०


अंक २ जो.

छंद भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ साचा,
अमो प्राणियोनी सुणो नम्र वाचा;
तमे सर्व संकष्ट विघ्नो निवारो,
दया सागरा सत्य आधार तारो. ॥१॥
प्रभू पूर्ण विश्वास तारो अमारे,
महा संकटेरे चढो नाथ वारे;
अमारी स्थितीओ तमे लक्ष धारो, दया० ॥२॥
खरा भेद तारा न कोईज पाम्या,
यथा ज्ञान तर्को करीने विराम्या;
कृपानाथ तुं एक छुं सत्य सारो, दया० ॥३॥
तमे सत्य धार्युं हशे तेज थाशे,
अमारूं विचार्युं सहू व्यर्थ जाशे;
तमारा गणी सेवकोने उगारो, दया० ॥४॥
तमारा प्रभू सर्व संकल्प सत्य,
तथापी कृपाधीन छे सर्व कृत्य;
अमे जाणिये शुं तमारा विचारो, दया० ॥५॥
महा कष्टमां धैर्यताओ धरावो,
तमारूं रुडुं ध्यान नित्ये करावो;

अमारा बधा दोषनेरे विदारो, दया० ॥६॥
महा काळनुं चक्र माथे फरे छे,
जिवो देहनो गर्व मिथ्या करे छे;
क्षणू भंगु आ घाट छे रे अमारो, दया० ॥७॥
अरे कालरे इष्ट के रिष्ट थाशे,
जिवोने न किंचित्कदापी जणाशे;
तमारा अगम्यो गुणो छे अपारो, दया० ॥८॥
अमे पापियो पामरो अल्प प्राणी,
कृतीओ नथी तुं थकीरे अजाणी;
निवारो तमे क्रूरताना विकारो, दया० ॥९॥
अहंकार मिथ्या अभीमान मोटां,
करीए अमे मूर्खताथीज खोटां;
अरे रंकने रायनो एक आरो, दया० ॥१०॥
दिसे दृश्य वस्तू बधी नाशवंत,
तमे सत्य छो विश्व व्यापी अनंत;
महा सिंधुमांथी दयानाथ तारो, दया० ॥११॥
अमे आ जगत्मां बधारे प्रवासी,
तमारी कृपाथी रहीए निवासी;
करो छो तमे सर्वने ऊपकारी, दया० ॥१२॥

अरे ईश इच्छा तमारी बलिष्ठ,
तमारा थकी को नथीरे वरिष्ठ;
वदे वेद वाणी वळी शास्त्रकारो, दया० ॥१३॥
प्रभू जे करो धैर्यथी सर्व से'वुं,
तने शर्ण थै नित्य आधीन रे'वुं;
खरो धर्म छे ओ प्रभू ए अमारो, दया०॥१४॥
जगाधीश दीसे तमारा प्रतापो,
कृपा दृष्टिथी विश्वमां शांति आपो;
दयार्थी सुणो दीनताना उचारो, दया० ॥१५॥

॥ॐ तत्सत् परमात्मने नमः॥

पितासि लोकस्य चराचरस्य॥ त्वमस्य पूज्यश्च गुरोर्गरीयान्॥

हे ईश्वर! सर्व चर अने अचर वस्तुनो पिता (कर्ता) तुं छुं, सर्वनो पूज्य, परम गुरु तुं छुं.

हे परम कृपालु परमात्मा! आ वेळा तारुं चिंतन तारी स्तुति, अने तारी प्रार्थना करुंछुं. तारा गुण गाउछुं, तुं सर्वज्ञ अने सर्वव्यापक छे, मारुं मन आ समये शा काममां लागेलुं छे तेथी तुं अजाण्यो नथी. आ समय कोई बीजा विषय उपर मारुं चित्त न लागतां केवल तारा प-

वित्र स्मरणमां निमग्न रहे, तारुं ध्यान धरे, तारा स्वरूपने ओळखवाने प्रयत्न करे, एवी मारी संपूर्ण इच्छा छे. बिजा कोई जोडे सरखावी न शकाय एवो जे अनुपम महा प्रभु तने हुं अभिवंदन करुंछुं. तारी स्तुति करवाने हुं अल्प जीव असमर्थ छुं. मारा विचार अने मारी वाणी तारां वखाण करवाने, तारो उपकार मानवाने छेक अशक्त छे; तारा महात्मनुं वर्णन करवाने मारी भाषामां योग्य शब्दो नथी. हे अनादि अने अनंत परमेश्वर तारा कृत्योनो विचार करतां मारी अल्प बुद्धि पाछी हठे छे. आकाश भणी दृष्टि करुं छुं तो सानंदाश्चर्य पामुं छुं. सूर्यचंद्र ग्रहो उपग्रहो, असंख्य ताराओ जोई घणुं आश्चर्य पामुंछुं. तेओ शुं हशे, शा अर्थे रचेला छे, केवां प्राणियो तेओमां वसे छे, त्यांनी लीला तथा शोभा केवी हशे, तेओनां महत्व अने अंतरादिनो विचार करुं छुं, त्यारे मारी तर्कशक्ति निराश थई नीची पडेछे. नीची दृष्टि करुंछुं तो आ पृथ्वी चमत्कारोथी तथा अतिसुंदर वस्तुओथी भरेलीछे. ते जोइ मारी बुद्धि चाकित थई जाय छे, अने तुं आ जगतनो कर्ता नियंता अने पालन करनार छुं एवो मने स्वाभाविक बोध थाय छे.

हे प्रभु! हुं केवल अशक्त पामर प्राणी छुं. अज्ञान, अ-

हंकार अने मनोविकार प्रबल थईने मने आडे रस्ते दोरे छे, अपराध करवानुं सुजाडे छे, माटे हे महाप्रकाश-मान परमेश्वर! अति नम्रताथी तथा शुद्ध अंतःकरणथी तारी प्रार्थना करूंछुं के मारी बुद्धिने शुद्ध कर, मारा पापनुं ज्ञान मने थाय, तेनो पश्चात्ताप थाय, फरीथी तेवां काम न करवाने मारूं मन दृढ थाय, निरंतर तारी सेवा करूं, मारा संसार व्यवहारिक धर्म बजावुं अने तारी खरी भक्ति अने उपासना करूं एवो उत्साह तथा दृढता आपी मारा अपराध क्षमा करी मारूं, हे दयालु भगवान! रक्षण करो. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

स्त्रग्धरा वृत्त.

शान्ताकारा कृपालू, प्रभुविण नहि को, अन्य आधार मारे;
आवुं द्वारे तमारे, अति दिन जन हुं, राखि विश्वास भारे;
आशा धारी तमारी, विनयथि विनवुं, विघ्न संताप कापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करूणा, सन्मती नित्य आपो. १
सर्वान्तर्यामि साचा, सुख बहु करता, सर्व संताप हर्ता;
सत्ता सर्वत्र धर्ता, प्रिति अति करिने, प्राणिना प्राण भर्ता;
भक्ती भावे भजुं हुं, भव भय हररे, नीति सन्मार्ग आपो;

पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. २
सृष्टी शोभाप्रभाथी, प्रगट बहु किधी, पूर्ण शक्ती तमारी;
वस्तू मात्रे विचारी, विभु निज बळथी, धर्म दीधोज भारी;
व्यापो संपूर्णताथी, प्रभु त्रिभुवनमां, छे तमारा प्रतापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ३
आकाशे शोभि रे'छे, अगणित गतिथी, गोलसर्गोज सारा;
राशी चक्रे रवींदू, ग्रह उपग्रहथी, सर्व नक्षत्र तारा;
सानंदाश्चर्य पामुं, प्रभुनिज कृतिनी, छे कलाओ अमापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ४
अन्योन्याकर्षणोना, अतिदृढ जडने, मुख्य तें धर्म आप्या;
भेदो सर्वे ऋतूना, करि निश दिनने, काल प्रत्येक थाप्या;
भासे चातुर्य पूरुं, नहि कदि नियमो, ने तमेतो उथापो;
पापो कापो अमारां, प्रभुकरि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ५
जीवो संरक्षणार्थे, बहु बहु विधिथी, वस्तु सर्वे सृजावी;
सत्ता सर्वत्र व्यापी, प्रभु निज कृतिनो, हेतु दीधो बतावी;
एवा कारुण्यमूर्ती, शुभ गुण युतना, हुं करुं नित्य जापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ६
सर्वे स्थाने विराजो, विभु चिदघन हे, विश्वमांगल्यकारी;
श्रद्धा सद्भक्ति भावे, प्रणमि प्रभु करुं, शुद्ध अर्चा तमारी;

लज्जा राखो अमारी, मति विमळ करो, हेप्रभू माय बापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ७
विद्या सद्बोधज्ञाना, मृत जळरसनां, नाथ पानो न पीधां;
कार्यो रूडां न कीधां, दिन निरबळने, द्रव्य दानो न दीधां;
मानी आज्ञा न तारी, करि अवगणना, ते क्षमा नाथ आपो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ८
विश्वाधीशा महेशा, नहि कदि मनमां, लावशो भक्त दोषो;
पूरो वांछा अमारी, जगपति जगमां, आपि संपूर्ण तोषो;
सर्वे तारी दयाथी, भवपति टळशे, दुष्ट संस्कार शापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. ९
विघ्नापत्ती विदारो, त्रिभुवनपति हे, प्रार्थना लक्ष धारो;
वृत्ती मारी सुधारो, विपति दुख समे, सन्निधेरे पधारो;
पालीपूरी कृपाथी, प्रभु हरि हरजो, सर्व संसार तापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. १०

उपेंद्रवज्रा छंद.

नमुं नमुं अद्भुत कर्म कर्ता, नमुं नमुं सृष्टि समस्त भर्ता;
नमुं नमुं सर्वशरण्य नाथ, अनादि विश्वेश विभू अजात. १
अचिंत्य अव्यक्त परात्परेश, समस्त साक्षी अति श्रेष्ठ ईश;

अनाद्यनंता विभु निर्विकार, गुणो तमारा प्रभु छे अपार.२
अतर्क्य आनंदमयस्वरूप, अखंड छो एक तमे अनूप;
अपार सत्ता सघळे दिसे छे,जिवो तमारा बळथी जिवेछे.३
अनंत अंतर्गत वृत्ति जाणो,श्रुती तथा शास्त्र विशे प्रमाणो;
विचित्र लीला अति शक्ति तारी,कदी न पामे गति तोअमारी.४
तमे अविद्या थकि पार गाजो,सदा जिवोनी समिपे विराजो;
अदृश्य छे रूप प्रभू तमारुं,जुवो तथापी सहु कृत्य मारुं.५
नहीं तमे छो सुर दैत्य रूपे, नहीं पुरुषे नहि नारि रूपे;
स्वतंत्र सर्वादि विकारहीन,नथी थता नाथ उपाधि लीन.६
तरथा नथी कोइ तमारि माया,अतर्क्य स्वामी श्रुतिमां गवाया;
समान वृत्ती धरिने रहोछो,जिवो प्रते नित्य कृपा करो छो.७
अचर्ण छो तोय गती करो छो, करो नथी तोय करे ग्रहो छो,
अचक्षु छो तोय तमे जुवो छो,अकर्ण छो तोय तमे सुणो छो.८
तमे स्वइच्छा बल सुक्रियानी, धरो प्रभू शक्ति प्रपूर्णतानी;
स्वयंभु सर्वादि स्वयंप्रकाश, प्रभू करो पाप सहू विनाश.९
क्रिया जिवोनी तमने विदीत, नहीं अमारे वदवी विहीत;
समस्त साक्षी प्रभु तुं परेश, तने प्रभू शुं कहु हुं विशेष.१०
कृपानिधे हे करुणेश्वरा हे, दयानिधे हे परमेश्वरा हे;
नमी नमीने करिये प्रणाम, करो अमारां परिपूर्ण काम.११

छंद भुजंगी.

दया सिंधु देवा विनंती अमारी,
दयाथी दिलेनाथ लेशो विचारी;
खरूं हीत कल्याण जीवो तणुं जे,
जगाधीश जाणो तमे पूर्ण रीते. १
शिशू लाडिने मागणी सर्व मागे,
तथापी पिता जे घटे तेज आपे;
कृपालू तमे सर्वथी श्रेष्ठ सारा,
तमे पूरशो योग्य अर्थो अमारा. २

गायन.

पद.

तमे सर्वथी महान, आपो रूडुं नीतिज्ञान,
आश्रय आधार सत्य, राखिये तमारो;
प्रभु सत्वगुणमय, करिये अति विनय,
अल्पज्ञ जीवोनी स्थिति, मनमां विचारो. तमे०
अमेतो अशक्त प्राणी, वधु शुं वदिये वाणी,
क्षमा विना नाथ नथी, निर्वाह अमारो;
पाप कर्म परहरो, विघ्न सर्व दूर करो,

मंदछे अमारी मति, प्रभु ते सुधारो. तमे०

पद

प्रभु अपराध क्षमाकर मारो
निंदित कर्मो जे में कीधां,
ते प्रभु सर्व विसारो १ प्रभु०
शरण रही प्रभु चरणे वंदु,
भवजल पार उतारो २ प्रभु०
दास तणुं रक्षण करवानो,
छे प्रभु धर्म तमारो ३ प्रभु०
कृपाघना कृपा दृष्टि करीने,
मति प्रभु मारी सुधारो ४ प्रभु०
करद्वय जोडी विनति करूं छुं,
संकट सर्व निवारो ५ प्रभु०

पद

दीननो दयाळ छोडि कोने शरण जाउं, दीननो ०
मात तात जाणी प्रभु, चरण प्रते धाउं;
पामिने प्रसाद पूर्ण, कृतकृतार्थ थाउं. १ दीननो ०
नीति भक्ति रूपी पुण्य, तीर्थमां हुं नाहुं;

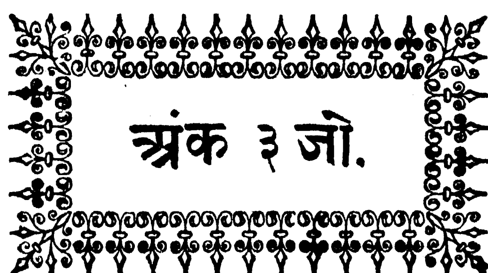
परम इष्ट ब्रह्मनी, हुं स्तुति गुण गाउं. २ दीननो ०
प्रभु कृपानिधाननी हुं, पूर्ण कृपा चाहुं;
संकट समय नाथ, पल्लव हुं साहुं. ३ दीननो ०
नमि नमी परात्परा हुं, शरण तारे आवुं;
प्रेम पुष्प अंजलि, प्रभुपदे वधावुं. ४ दीननो ०

आरति.

जयदेव जयदेव जयमंगळदाता जयमंगळदाता,
विश्व तणा विभुधाता(२) भक्तजनत्राता ।।१।। जयदेव०।।
करुणासिंधु कृपाळ कृतियो नव जोशो, (२)
अल्पमती जीवोना(२) अतिशय छे दोषो ।।२।। जयदेव०।।
सच्चिद्घन आनंद त्रिभुवनना स्वामी, (२)
सर्वज्ञांतर्यामी (२) सचराचरगामी ।।३।। जयदेव०।।
संकट समयेनाथ प्रभु आवो वारे, (२)
भय सर्व संहारो (२) शरण अमे तारे ।।४।। जयदेव०।।
अंतर्भावाथि नाथ करुं तारी सेवा, (२)
दुरित कृतीओ मारी(२)क्षमा करो देवा ।।५।। जयदेव०।।
अभिवंदन भगवंत करुं निशदिन तमने, (२)

कृपा करीने आपो(२)प्रभु सन्मति अमने ।।६।। जयदेव०।
सदाचार ए मुख्य छे भक्ति तारी, (२)
सदा तमारे चरणे(२) वृत्तिरहो मारी ।।७।। जयदेव०।
जगदीश्वर जगतात तापत्रय हरशो, (२)
मनवांछित प्रभु मारां(२) परिपूरण करशो ।।८।। जयदेव०।




अंक ३ जो.

ललित छंद.

जगतनाथरे, नम्र थै अमे, विनय भावथी, वंदिये तने;
श्रवण आकरो, स्वल्प प्रार्थना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १
विषय भोगमां, राखिछे रति, नव कदी अमे, भक्ति तो किधी;
शरण आविने, मागिये क्षमा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २
सबल शक्ति छे, ताहरी प्रभु, कदि कळी शका--ती नथी विभु;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ३
ग्रह गणो तणा, गोळ जे दिसे, भ्रमण शक्तिछे, सर्वने विषे;
प्रभु चमत्कृती, मां नथी मणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ४
जगत सृष्टिमां, चातुरी अति, नियम पूर्वके, छे बधी कृति;
जिव प्रते किधी, छे बहू दया, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ५
मनुषने दिधी, श्रेष्ठ सर्वथी, सत असत्यना, ज्ञाननी मति;
दुर करो प्रभू, दुष्ट वासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ६
सकल प्राणिना, मात तातरे, विदित छे तने, सर्व वातरे;
तदपि सांभळो, दीन याचना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ७
शमदमादिना, नीम ना लिधा, जन हितार्थरे, कार्य ना किधां;
निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८
अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;

नव जुओ तमे,दोष दीनना,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. ९
विपति काळमां,धैर्य आपशो,प्रभु कृपा करी,कष्ट कापशो;
तुज दया विना,सर्व छे वृथा,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १०
पतित पावना,प्राणना पति,परम प्रेमथी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने,नित्य वंदना,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. ११
जग हितार्थनां,कार्य जो थशे,प्रभु प्रसन्न तो,ते थकी थशे;
नव तने गमे,ढोंग गर्वना,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १२
विकट जाल छे,विश्वमां घणी,तुजविना नथी,अन्यरे धणी;
सघळि टाळशो,रे विडंबना,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १३
दिन दयालरे,दास तारशो,परम भक्तनां, कार्य सारशो;
दुरित कापशो,सर्व जन्मनां,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १४
चपल छे घणा,धर्म चित्तना,विकल छे घणा, वेग इंद्रिना;
वश नहीं थशे,रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १५
जगतमां रही,नीति पाळिये,सुकृतमां सदा,काळ काढिये;
अति वरिष्ठ छे,ए उपासना,प्रभु कृपानिधे,रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा,भक्ति तो गमे, तुज पदे रती,राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे,बाह्य साधना,प्रभु कृपानिधे,रेदयाघना. १७
नियम ताहरा, नित्य मानिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;
नहि कदी थशे,नर्क यातना,प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १८

तुज कृपाथकी, बोलिये अमे, तुज कृपाथकी, चालिये अमे;
तुज कृपाथकी, थाय कामना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १९
नबालि वाणिये, जे कह्युं अमे, प्रभु स्विकारि ल्यो, सर्व ते तमे;
सतत राखशो, प्रीति भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २०
समिप आविया, प्राणि पामरो, शरण राखिने, साह्यता करो;
अवगुणो अमा--रा अती घणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २१
कर पसारिने, वंदिये अमे, करगरी कही--ए खरुं तने;
प्रभु शरण्य छो, सर्व जीवना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २२
दिन प्रते दया--दृष्टि राखशो, दुरित कर्मने, कापि नांखशो;
प्रभु अमारि छे, एज वांछना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २३

हे परमदयाळु परमेश्वर ! आ संसार यात्रामां मारां कर्तव्य कर्म करवामां मने घणी तरेहनी अडचणो नडे छे. मारुं मन भ्रमित थई आडे मार्गे घसडाई जाय छे. तारी सहायता विना ए दूर थाय तेम नथी, माटे आ मारी अल्प प्रार्थना श्रवण करी मारुं मन निर्मळ कर.

बहारना बोलो अने देखावथी तुं कदी छेतरातो नथी. अंतःकरणमां जे जे खोटा विचारो थाय छे ते तुं अंतर्यामी जाणे छे, अने खोटां कर्म कर्यां होय तेज माफक

तेमने तुं गणे छे. दीन शब्दोथी तारी प्रार्थना करी क्षमा मागुं छुं अने नीति तथा सदाचरणमां रहेवानुं कहुं छुं. परंतु मनमां कोइने दगो देवाना, कोइनो विश्वासघात करवाना, कोइनी हत्या करवाना, कोइनो माल छीनवी लेवाना, के बीजा कोइ पाप कर्मना विचार चालता होय तो सघळी प्रार्थना निष्फळ जाय, अने तारी बमणी शिक्षाने लायक थाउं, ए निश्चय छे. अंतःकरण शुद्ध थया वगर आवा बहारना बोलथी तुं न्यायी प्रभु मारां पापनी कदी क्षमा करनार नथी. माटे हे करूणासिंधु! हुं एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करूंछुं, के मारूं अंतःकरण प्रकाशमान कर अने मने खरो रस्तो देखाड. एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करूं, अने पाप कर्म मनमां पण न आणुं तोज मारी मुक्ति छे. थएला कुकृत्यने वास्ते पश्चात्ताप करी माफी माग्या पछी वारंवार हुं एवांज कृत्य करवामां प्रवृत्त रहुं तो पछी तारी क्षमानी आशा राखुं ए फोगट छे. माटे हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! वारंवार पाप कर्म करतां अटकाववानी मने प्रेरणा कर, अने पाप कर्मना विचार पण मनमां न आवे एवी मति आप.

ज्यारे मारुं मन तारा विचारमां तल्लीन थइ जायछे त्यारे आ सृष्टिना दरेक चमत्कारमां तारी अथाग शक्ति अने डहापण जणाया विना रहेतां नथी. ते वखते तारुं तेजोमय स्वरूप अने तारा उपकार आपो आप देखाई आवेछे. तारा नियमो अने इच्छानी छाप मारा अंतःकरण मां एवीतो वागे छे, अने तेनी असर एटली तो थायछे के, तेथी उलटुं चालवानो धिक्कार आव्या विना रहेतो नथी. पण हुं आ संसारनी मायानां काम करुंछुं त्यारे, मारा अधम स्वभावने लीधे, मारा मनोविकारने लीधे, ए असर ओछी थइ जाय छे. लोभ, मोह, काम, प्रबळ थइ विवेकबुद्धिने दाबी नांखे छे, मारां ज्ञान चक्षु फुटी जायछे. हुं अंध थई मनोविकार दोरी जाय ते रस्ते चढुंछुं, अने घणी जाळोमां फसाई पडुं छुं. आवी वखते, हे जगत्पिता परमेश्वर! तारी मदद वगर हुं बहु अथडाई पडुं छुं. मनोविकार ने नरम पाडी विवेकबुद्धिने प्रबळ करवाने तारा विना मारे कोइनो आश्रय नथी. माटे हे कृपाळु, सर्व शक्तिमान परमेश्वर! खरा अंतःकरणथी, अने एक निष्टाथी हुं तारी प्रार्थना करूं छुं के तुं मने खरे रस्ते चढाव; स्वार्थ, लोभ, काम, वगेरे अनीतिथी मारा

अंतःकरणने दूर राख; द्वेष, अभिमान, लोभ, वगेरेने ली-धे मने अने मारा जाति भाइओने पोतानो खरो धर्म बजाववामां जे हरकतो पडे छे ते तुं दूर कर; निरंतर तारी इच्छा अने तारा नियमो प्रमाणे चालवाने मने मद्दद कर; मारां पाप अने संकट दूर कर; अने तारी इच्छा विरुद्ध होय एवी मारी सघळी मनकामनाओ, अने कृत्य नो समुळगो नाशकर. तथास्तु.

वृत्त स्त्रग्धरा.

विश्वाधारा अपारा, अति विनय थकी, वंदु पादारविंदे;
प्रेरो सद्धर्म नित्ये, नहि कदि फसुहुं, वासना दुष्ट छंदे;
संसाराब्धीप्रवाहे, प्रभु कर धरिने, धर्म नौकाथि तारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. १
जाणो अंतस्थ वार्ता, वधु प्रभु तमने, शुं करुंहुं विलापो;
विश्वासे हुं रहुं छुं, भवपति अमने, सर्वदा शान्ति आपो;
आराधुं एक चित्ते, प्रभु मुज हृदये, भक्ति श्रद्धा वधारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. २
कृत्यो कूडां करूं छुं, अविहित अवळे, मार्ग हुं संचरूं छुं;
तोए विश्वास राखी, प्रभु शुभ पदनुं, ध्यान चित्ते धरूंछुं;

जाणी मारी दयारे, ततक्षण करजो, नाश सर्वे विकारो;
वंदुं हुं विश्वानाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ३
दोषो मारा घणा छे, अगणित दुरितो, रे बहू क्रूर गूणो;
मागुं ते शी क्षमारे, नत्रलि स्नाति तणो, एक खूणो न ऊणो;
शर्णे राखी निभावो, प्रति दिन प्रभुना, मानुलुं ऊपकारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ४
तारो तारो प्रभूहे, कर ग्रहि अमने, विश्वसिंधूथि तारो;
बीजो एके न आरो, तुजविण विभुरे, विघ्न सर्वे विदारो;
साचो आश्रो तमारो, दिन जन मुजने, चित्तथी ना विसारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ५
भूलुं संसार माया--थकि भवपति हुं, भ्रान्तिमां पूर्ण डूलुं;
साचा मानी प्रपंचो, अतिशय मदथी, मूर्ख हुं खालि फूलुं;
साष्टांगे पाय लागी, प्रणिपत करूलुं, वृत्ति मारी सुधारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ६
शी शी शोभा वखाणुं, विभु तुज कृतिनी, शक्ति छेरे अपार;
मोटा मोटा महन्तो, अति श्रम करिने, थाकि पाम्या न पार;
अज्ञानी प्राणि हुं ते, तुज गुण महिमा--ना करुं शुं विचारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ७
अंतर्यामी अनादी, त्रिभुवनपतिने, श्रेष्ठ संपूज्य जाणुं;

एकान्ते एक चित्ते, अप्रतिम प्रभुनी, शुद्ध भक्ती वखाणुं;
श्रद्धाथी प्रार्थना जे, करू प्रभु तमने, लक्षमां सर्व धारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ८
प्रातर्मध्यान संध्या, अति शुभ समये, स्वामिने पाय लागुं;
वांछा पूरो अमारी, करद्वयपसरी, नित्य प्रत्ये हु मागुं;
मागुं पाप क्षमारे, क्षण प्रतिक्षण हुं, दुःख मारां विदारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. ९
आपो चारे[१] पदार्थो, प्रभु करि करूणा, पुत्र संतान पालो;
पालो सर्वे प्रजाने, सहु दिन जननां, दुःख दारिद्र टालो;
धारुं आश्रो तमारो, विनति करु प्रभू, वाणि मारी स्विकारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथि तमने, कष्ट सर्वे निवारो. १०

छंद वसंततिलका.

जेने न जाणि सकशे मन इंद्रि धर्म,
जेने न पामि सकशे गुण देह कर्म;
एवा परात्पर प्रभू अति शक्तिमान,
पादारविंद नमि नित्य धरुं हु ध्यान. १
जे पूर्ण ईश्वर प्रभू निज शक्ति योगे,

१ धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष ए चार.

उत्पन्न विश्व करि ते थकि छे वियोगे;
जीवो तणी गति कृती चितमां धरे छे,
भक्तोनु रक्षण कृपा थकि ते करे छे. २
जेना बले अखिल विश्व विराजमान,
जेणे अनेक रचना रचि छे महान;
ते एक ब्रह्म अविकार अनादि देव,
पामुं हु शर्णभजु ते करि नित्य सेव. ३
जेनो महान महिमा नहि कोइ पाम्या,
तर्कों करी ऋषि मुनी मनथी विराम्या;
ते एक नित्य अज ईश्वर लोकपाल,
बुद्धिप्रकाशक प्रभू नमु सर्व काल. ४
छो नित्य मुक्त अति शुद्ध विबुद्ध ईश,
सर्वोथि पार परिपूर्ण प्रभू अधीश;
जीवो तणी कृति तमे सघळी निहाळो,
सत्ये रही पृथक सृष्टि समस्त पाळो. ५
आ मृत्यु लोक महि छो प्रभु सत्य त्राता,
स्वर्गापवर्गसुख सन्मति शान्ति दाता;
शर्णागतो प्रति करो करुणा कृपाओ,
भक्तोनु कार्य करवा अति शीघ्र थाओ. ६

વિશ્વેશ ભક્ત જનના ભવ પાશ કાપો,
સામીપ્યમુક્તિપદનો પ્રભુ લાભ આપો;
અંતઃસ્થ વૃત્તિ જિવની તમને વિદીત,
પાદારવિંદ પ્રણમી ધરૂ ધ્યાન નિત્ય. ૭
હે દીનવત્સલ દયાનિધિ દીનબંધુ,
કારુણ્યમૂર્તિ તમને સ્મરિ નિત્ય વંદું;
વંદી કરૂં સ્મરણ હું ઉપકાર તારા,
ત્રાતા તમે ભવ વિશે પ્રભુ સત્ય મારા. ૮
કોટ્યાવધી પ્રતિદિને અપરાધ થાય,
માગું ક્ષમા પ્રભુ સદા કરશો સહાય;
આધાર આશ્રય કૃપાનિધિ સત્ય તારો,
સંસાર સિંધુ ભયથી પ્રભુનાથ તારો[1]. ૯
એકાગ્ર ચિત્ત થકિ ધ્યાન ધરૂં તમારૂં,
કલ્યાણ મંગલ કરો સઘળું અમારૂં;
સાષ્ટાંગ નાથ તમને કરિયે પ્રણામ,
પૂરાં કરો પ્રભુ તમે શુભ સર્વ કામ. ૧૦

---

૧ ઉદારો.

मालिनी छंद.

परम प्रभु तमारी, छे कळाओ अपार,
यश गुण महिमाना, कोइ पाम्या न पार;
स्तवन करि अमे आ, प्रार्थनाओ उचारी,
विहित विभु हशे जे, तेज लेशो स्विकारी. १
शरण रहि तमारे, वंदिये वार वार,
प्रभु अति करुणाना, मानिये ऊपकार;
नहि नहि नहि कोई, नाथ बेली अमारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथि तारो. २

गायन.

पद.

प्रभुछो अती दयाल, दीनजन प्रतिपाल,
शरणे तमारे अमे, भवसिंधु तारो;
करो सर्व रूडां काज, सेवकनी राखो लाज,
अवगुण अपराध, लक्षमां नधारो. प्रभु०
भक्तनो समाज आज, मळीने महाधिराज,
विनति करिये प्रभु, ते तमे स्विकारो;

कृपा करी करग्रहो, अवगुण नव लहो,

चित्तना शमावी क्लेश, शान्तिने वधारो. प्रभु०

पद.

भवपति संकट सर्व हरो.

अपराधो अतिशय में कीधा, अनुग्रह पूर्ण करो १

भवपति०

अनन्य भावथी राखुं तमारो, आश्रय एक खरो २

भवपति०

करजोडी हुं विनति करूं छुं, प्रभु ते चित्त धरो ३

भवपति०

करूणादृष्टिथी मुज हृदये, प्रेमल भक्ति भरो. ४

भवपति०

पद.

शरणागतने निभावो, प्रभु सर्व दोष शमावो;

क्षतियो न लक्षमां लावो, प्रभु सर्व दोष शमावो.

विनय थकी विनति अमे करिये, सन्मति नित्य बतावो.

प्रभु सर्व० १

जगदीश्वर जगवंद्य दयाला, दुख संकटथी बचावो.

प्रभु सर्व० २

दुष्ट विकारो तणी जालोमां, विभु नव अमने फसावो.

प्रभु सर्व० ३

सदा सदाचरणमां अमारी, वृत्ति विशेष रखावो.

प्रभु सर्व० ४

अवलंबन आधार तमारो, सद्धर्म कर्म करावो.

प्रभु सर्व० ५

प्रतिपालन प्रभु नित्य करो छो, ते उपकार स्मरावो.

प्रभु सर्व० ६

कृपाकला कर ग्रहीने अमारां, किल्बिष सर्व हठावो.

प्रभु सर्व० ७

भक्ति थकी भगवंत अमारुं, चित्त कदी न डगावो.

प्रभु सर्व० ८

क्षमाकरी अपराध अमारा, उत्तम मार्गे चडावो.

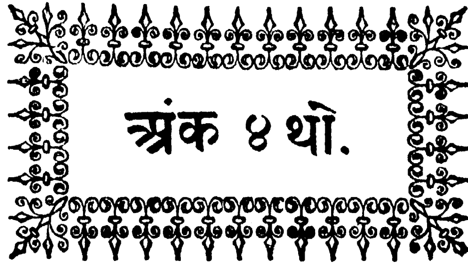
प्रभु सर्व० ९

आरति.

जयदेव जयदेव जय करूणासिंधु, जय करूणासिंधु,

करजोडी प्रभु तारे(२)चरणे नित वंदुं ॥१॥ जयदेव०॥

तत् सत् ब्रह्म महेश मुक्तितणा दाता, (२)
व्यापि रह्यो सत्तार्थी(२)विभु सविता धाता ॥२॥जयदेव०
प्रात समे परमेश प्रभु पदने वंदुं, (२)
सत् कर्मो करवानो (२) विधि हुं आरंभुं ॥३॥ जयदेव०
सायंकाळ सुरेश सकळ क्रिया मारी, (२)
तुज चरणे अर्पीने (२) मागुं कृपा तारी ॥४॥ जयदेव०
सर्वात्मा सर्वेश सुखशांति आपो, (२)
कृपाकरी करूणानिधि(२)कष्ट सकळ कापो ॥५॥जयदेव०
कीधा अति उपकार वळि नित्ये करशो, (२)
दोष दयानिधि मारा(२)चितमां नव धरशो ॥६॥जयदेव०
अवलंबन आधार सत्य प्रभु तारो, (२)
शरणागत सेवकने(२)भव थकि उद्धारो ॥७॥जयदेव०॥
अभिवंदन करिनाथ ध्यान चित्ते धरिये, (२)
प्रेम तणी पुष्पांजलि(२)चरणार्पण करिये ॥८॥ जयदेव०॥


अंक ४ थो.

छंद भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ सत्य,
किधुं छे तमे आ बधुं सृष्टिकृत्य;
त्रिलोके तमारा प्रकासे प्रतापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. १
अतीशे तमारुं प्रभू छे महत्व,
सृज्यां छे महच्छक्तिथी सर्व तत्व;
भुमी व्योम वायू अने तेज आपो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. २
तमारी स्तुती वेद शास्त्रे वखाणी,
विरामी मुनीओ तणी वृत्ति वाणी;
जगाधीश तारा गुणो छे अमापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ३
परा भक्तिथी प्रार्थना वंदनाओ,
कृपाथी स्विकारी सदा साह्य थाओ;
करो नाथ मारां क्षमा सर्व पापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ४
अमे मंदबुद्धी अती अल्प प्राणी,
कृतीओ नथी तुं थकीरे अजाणी;

विना तुं सुणे को अमारा विलापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ५
कृपानाथ होवो न जोशो कदापि,
अमे पाप कर्मो करीये तथापि;
अमारां बधां दुःख दारिद्र कापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ६
महा कष्टमां धैर्यताओ धरावो,
सदा सर्वदा कार्य रूडां करावो;
निवारो त्रिवीधी तणा सर्व तापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ७
तमे छो प्रभू अन्नदाता अमारा,
तमे छो प्रभू सर्वथी श्रेष्ठ सारा;
तमे छो अमारा प्रभू माय बापो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ८
नमस्कार साष्टांग छेरे अमारा,
स्मरीए अमे ऊपकारो तमारा;
सदा दासने सद्गती नीति आपो,
कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ९

हे जगदीश्वर! तारूं स्वरूप माराथी कळी सकातुं नथी, तुं महा शक्तिमान, परमपवित्र, अने दयावानछुं, आ वेळा हुं तने नमस्कार करी शांत मनथी तारा उपकारनुं स्मरण मनमां राखी तारी प्रार्थना करूंछुं. हुं केवळ रंक अशक्त, पापी प्राणीछुं; संसारी प्रपंच, तथा विकारोना पाशमां गुंथायलोछुं; तारी शुद्ध उपासना माराथी थई सकती नथी. सवार थयुं सांज पडी, ए रीते घटमाळ चाली जायछे, माराथी तने सारूं लागे एवुं कांइ कार्य थतुं नथी, माटे हे विश्वोद्धारक, विश्वपालक पिता! तारा आगळ केवळ लज्जायमान थई तने साष्टांग दंडवत वंदन करीने कहुंछुं के, तुं मारा अपराध उपर विचार नहीं करतां मारूं नित्य पालन पोषण तथा रक्षण करेछे, ए तारो मारा उपर घणो उपकार तथा प्रीतिभाव छे. मारां पातक जे क्षमा करवा जेवां हशे ते क्षमा करीश ए तारा दयालु स्वभावनो मने पूरो विश्वासछे. जे पाप में जाणी जोइने कीधां हशे ते तुं क्षमा करवानो नथी एवो मने भय लागेछे. पण हे कृपाळु प्रभु तुं मारा शरीरनी तथा मननी नबळाई जाणेछे, ए नबळाइने लीधे थयेला दोष तुं क्षमा करीश अने फरीथी न थाय एवी मने बुद्धि आपीश.

मने खरेखरो विश्वासछे के, तारी खरी भक्ति तथा शुद्ध उपासना उपर मारो लक्ष रेहेशे, अने नित्य तारी प्राथंना हुं करीश तो माराथी कुकर्मथी दूर रहेवाशे, कारणके, तारी भक्ति तथा उपासनामांज ए फल रहेलुंछे, माटे हे दीनदयाल परमेश्वर! तने महा समर्थ, अने सर्व प्राणीनो तारनार समजीने, खरा प्रेमथी तारे चरणे मारुं मस्तक नमावी प्रार्थना करूंछुं के दुष्ट नठारां कर्मोथी मारुं मन खशेडी तारी भक्ति तथा उपासना करुं अने सदाचरणथी चालुं एवी मने तुं सदा चेतवणी आपी मारुं रक्षण कर. मारुं कर्तव्य कर्म करवामां गमे तेवी विपत्ति के दुःख पडे तो ते सहन करवानी मने शक्ति, उत्साह, अने धैर्य आपजे.

हे परम कृपाळु ईश्वर! तुं सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, तथा, सर्वनो नियंता छुं. तारा प्रकाशथी आ सर्व जगत प्रकाशमान छे. तारुं रूप हुं मारां चक्षुवडे देखी सकतो नथी पण आ सृष्टिनी सुंदर रचना, तथा आकाशमां ग्रह, ताराओनी शोभा तथा तेना नियमो जोवाथी मारा मनमां दृढ निश्चय थाय छे के तुं आ जगतनो कर्ता छुं. तारा सरजेला प्राणीओ उपर करूणा करवी ए ता-

रो स्वभाविक गुण छे. तें मने विवेकबुद्धि आपीछे ते व-
डे विचार करूंछुं तो मने एज प्रेरणा थायछे के, तें आ
संसारमां मने तारी भक्ति तथा मारा स्वजाति मनुष्य प्रा-
णियो उपर प्रीति राखवाने उत्पन्न कर्यो छे, अने ए मा-
टे मारुं मुख्य काम करवामां हुं आलस्य करीश तो हुं
तारो खरो सेवक गणाइश नहीं, तथा तारी प्रीतिने पात्र
थइश नहीं, तारी प्रीति मेळववाने माटे मारे तारी इच्छा-
ने अवश्य आधीन रेहेवुं जोइये, ने तेम न रहुं तो मने
आ लोकमां अथवा परलोकमां दुःख थाय तेमां तारो वां
क कहाडवानो नथी, मारुं कर्म मारे भोगववुंज जोइये.
आ विचार मारा मनमां दृढ थवाने तारी सहायतानी जरूर
छे, माटे हे करुणामय प्रभु! तने वारंवार प्रणाम करीने
कहुंछुं के कृपादृष्टि करीने मने एवी सुबुद्धि आप के हुं
कोइ उपर वैरभाव राखुं नहीं, बीजानी अदेखाइ करुं
नहीं, कोइनुं द्रव्य लेई लेउं नहीं, कोइनो घात करुं न-
हीं, मारा मनुष्य भाईओ उपर समान भाव राखी तेओने
सुखी करवामां, तन मन अने धनथी श्रम करुं, अने स-
दाकाल नीतिना नियम पाळुं. आ मारि विनति हे परमकृ-
पाळु पिता तुं स्वीकारजे. शांतिः शांतिः शांतिः

ललित छंद.

सकल विश्वना, नाथरे तमे, शरण आविने, वंदिये अमे;
अलपजीव ते, शुं करे स्तुति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.१
नियम तें प्रभू, जे किधा हशे, तदनुसार तो, ते क्रिया थशे;
नहि कदी फरे, एकरे रती, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.२
जिव जनो घणा, यत्नने करे, तदपि आदर्युं, तारु ना फरे;
अकळ छे प्रभू, तारिरे कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.३
नमि नमी अमे, विश्वनाथने, विनविये सदा, मात तातने;
प्रभु कळा कळा--ती नकी नथी, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.४
क्षणज मात्रमां, शुं थशे अहीं, दिन अमे जिवो, जाणिये नहीं;
अति तमारि छे, रे चमत्कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ५
प्रभु मनोरथो, धारिये घणा, नहि पुरा थशे, रे कृपाविना;
अनुग्रहो करो, राखिने प्रिति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.६
नियम नाथछे, सत्य ताहरो, जनम जे थयो, जाय ते खरो;
सबल सत्य छो, सर्वना पति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.७
अवसरे तमे, साह्यता करो, प्रभु कृपा करी, कष्टने हरो;
पतित पावना, प्रेर सन्मति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.८
विकट पंथ छे, विश्वमां घणो, सरव आशरो छे दया तणो;

प्रभु पदे सदा राखिये रति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.९
विषय भोगमां, लिप्त ना थवुं, सतत शुद्ध स--न्मार्गमां जवुं;
दुर करो दया--नाथ दुर्मति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.१०
प्रभु तने गमे,तेज थायछे,जिवतणा श्रमो,व्यर्थ जाय छे;
दिन प्रते करो,रे दया अति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.११
सदगुणी जनो,धैर्य ना मुके,जन हितार्थनां,कार्यना चुके;
तुज कृपा थकी,थाय ना क्षति,गहनतारि छे,रे प्रभू गति.१२
नियम ताहरा,जे विधे हशे,सुख दुखो क्रमे,प्राप्त तो थशे;
विपति संकटे,द्यो तमे धृति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.१३
धन युवा तणो,व्यर्थ गर्वछे,तुज कृपा विशे, अर्थ सर्व छे;
शरण राखजो,आपि सद्गति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.१४
प्रणत प्राणियो, पामरो अमे, हृदयमां सदा, चिंतिये तने;
प्रभु सुणो तमे,नम्र वीनाति,गहन तारि छे,रे प्रभू गति.१५

छंद वसंततिलका.

हे ब्रह्मईश जगदीश जगन्निवास,
पादारविंद नमि नाथ तने हु दास;
नित्ये निरंतर करुं स्तुति प्रार्थनाओ,
हे विश्वनाथ प्रभु नित्य प्रसन्न थाओ. १

तारा अपार महिमा नहि कोइ पामे,
वाणी सहीत मन वेग सहू विरामे;
तारा अभेद्य पटमां नहि कल्पनाओ, हे विश्वनाथ २
तारी कृपा थकि वदे विभु मूक वाणी,
तारी कृपाथि गिरि पंगु चढेज प्राणी;
तारी कृपाथि जगमां सघळी क्रिआओ, हे विश्वनाथ ३
मारां कुकर्म सघळां तमने विदीत,
विस्तार नाथ करवो नहिरे घटीत;
कारूण्य भावथि करो करूणा कृपाओ, हे विश्वनाथ ४
लज्जा रहीज सघळी प्रभु हाथ तारे,
मारो निभाव करवो नहि नाथ भारे;
तारा प्रसाद बळथी भयना अभावो, हे विश्वनाथ ५
तुं नित्य एक अज ईश्वर लोकपाळ,
बुद्धिप्रकाशक तने नमु सर्व काळ;
टाळो कृपा करि बधी दुरवासनाओ, हे विश्वनाथ ६
जे जे अहीं बहु सुखो प्रभु प्राप्त थाय,
ते सत्य तारि सघळी करूणा जणाय;
सद्भक्तनी पुरि करो प्रभु वांछनाओ, हे विश्वनाथ ७
संसारमां सकलमंगलक्षेमदाता,

तारा विना नहि अहीं प्रभु अन्य त्राता;
भक्तो तणी दुर करो दुख आपदाओ, हे विश्वनाथ ८
सृष्टिस्थितिप्रलयकारक लोकनाथ,
अल्पज्ञ प्राणि जननो ग्रहि नाथ हाथ;
प्रेमे करी प्रभु करो प्रतिपालनाओ, हे विश्वनाथ ९
विद्या विवेक मति संपाति सर्व आपो,
संभाल मारि करि संकट सर्व कापो;
द्यो धर्म कर्म करवा शुभ सूचनाओ, हे विश्वनाथ १०
माता पिता प्रभुवरा अति दीन बाल,
एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरूं त्रिकाल;
नित्ये प्रणाम करिने करू याचनाओ, हे विश्वनाथ ११
आधीन छुं प्रभु मने भयथी उगारो,
संकष्ट दुःख समये समिपे पधारो;
मागुं विनंति करि पाप तणी क्षमाओ, हे विश्वनाथ १२
संपूर्ण प्रेम करिने उपकार कीधो,
आ मृत्यु लोक महि मानुष देह दीधो;
राखो सदाचरणमां चितभावनाओ, हे विश्वनाथ १३
हे भक्तवत्सल दयानिधि दीनदोषो,
क्रोधायमान थइ ईश कदी न जोशो;

हुं दीन दास शरणागतने निभावो, हे विश्वनाथ १४
तारूं सदा स्मरण ध्यान करूं हुं दास,
द्वारे अड्यो नव करो मुजने निराश;
पूरी करो प्रभु तमे मनकामनाओ, हे विश्वनाथ. १५
कर्तव्य कर्म जगमां रहि नाथ थाय,
सद्धर्म नीति नियमो सघळा पळाय;
ए शुद्ध तारि अति उत्तम अर्चनाओ, हे विश्वनाथ १६
विश्वेश वंद्य विभु आश्रय सत्य तारो,
संसारसागर थकी प्रभु नाथ तारो;
साष्टांग नित्य तमने करू वंदनाओ, हे विश्वनाथ १७

शिखरणी छंद.

पिता माता नित्ये, प्रणमि करिये नम्र विनति,
दयादृष्टी राखी, श्रवण करशो रे जगपति;
अमारी इच्छाओ, विदित किधिछे सर्व तमने,
रूडी केई तेनुं, नथि क्वचित तो ज्ञान अमने. १

अमो जीवोनुं छे, मन प्रभु अतीमंद नबळुं,
तमे जाणो स्वामी, जिवतणुं हिताहीत सघळुं;

मनोर्थो माग्याछे, शुभ स्तुति तमारी करि अमे,
हशे जे जे रूडा, पुरण करशो ते प्रभु तमे. २

गायन.

पद.

मंगल छे नाम तारूं, मंगल छे धाम तारूं,
मंगल छे काम तारूं, त्रिभुवननाथतुं;
तुज पद छे वरद, कृतकर्मफळप्रद,
अव्यक्त अखंड एक, अकल अबाधतुं. मंगल छे०
एवो तुं प्रभु महान, सघळे विराजमान,
जाणी ले बधी अमारी, अंतरनी वाततुं;
अवगुण छे अगाध, गणती न थाय नाथ,
नरवुंछे तारे हाथ, प्रभु मात ताततुं. मंगल छे० १

पद.

शरण तने भगवान, प्रणमुं पाय पडीरे प्रभु शरण०
वृथा गयो भवजन्म अमारो, नव राख्युं निजभान;
दास सदा जाणीने तारो, तारो भवथी निदान,
करि करूणाज वडीरे प्रभु शरण तने० १
सगुण स्वरूपे गुप्त रह्याछो, अन्य नथी तुंसमान;

नव जाण्युं महा ऋषि मुनियोये, तारुं निश्चल स्थान,
विरम्या नेति वदिरे प्रभु शरण तने० २
किंचित् नथी हुं योग्य परन्तु, मागुं छुं वरदान,
कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्, मानीने बलवान,
आवुं तुजद्वार चडिरे प्रभु शरण तने० ३
शरणागतनी लज्जा राखो, विश्वाधीश महान,
मनवांछितफल निश्चय आपो, हे प्रभु कृपानिधान,
अवसर आव्यो अडिरे प्रभु शरण तने० ४
परमात्मा परब्रह्म प्रभुनुं, गाउं शुभ गुणगान,
भक्ति परायी करुं हुं तमारा, ज्ञानामृतनुं पान,
सफली एज घडिरे प्रभु. शरण तने० ५

पद.

तुज विण अन्य नहीं प्रभु त्राता ०
विनय थकी हुं विनति करुं छुं,
विश्व तणा विभु धाता तुज० १
सर्वे ऋषि मुनि शुकसनकादिक,
तुज महिमागुण गाता तुज० २
दीनदयाला तुज करुणा विण,
कोण करे सुख शाता तुज० ३

आश्रय एक तमारो धारुं,
सुख दुखना प्रभु ज्ञाता तुज० ४
साष्टांगे हुं वंदुं विभुने,
परपद मंगल दाता तुज० ५

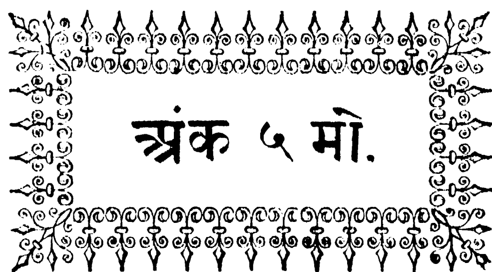
पद.

अवगुण दोषो दयानिधि नवलहोरे ०
धर्मनियम उलंघुं तथापि,
प्रेमे करो परम अनुग्रहोरे अवगुण० १
शरणागत आधीन तमारे,
दास जाणी अमारो कर ग्रहोरे अवगुण० २
भक्त जन प्रभु परम कृपार्थी,
नव पामे संकट दुःसहोरे अवगुण० ३
हे भगवंत दिन जन उपर,
दयादृष्टि तमारी नित्य रहोरे अवगुण० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय जगदाधीशा जय जगदाधीशा,
प्रकृतिपरा परमेशा (२) प्रणमुं प्रभु ईशा ॥१॥ जयदेव०
साक्षि तमे सर्वत्र सत्ता थकि व्यापो, (२)

कृपाकरी सेवकने (२) मति निर्मल आपो ॥२॥ जयदेव०
नमि नमि नमि नमिनाथ पाय तने लागुं (२)
प्रभु आपो पुरूषार्थो (२) ए शुभ वर मागुं ॥३॥ जयदेव०
मुज अपराध अगाध चितमां नव धरशो, (२)
कृपाघना करूणा करि(२)पाप क्षमा करशो॥४॥ जयदेव०
प्रभु छो परम कृपाल कार्य सफल करवां, (२)
संरक्षण करि मारां (२) कष्ट सकल हरवां ॥५॥ जयदेव०
परमेश्वर अस्तित्व सत्य करी मानुं , (२)
श्रद्धा भक्ति उपासन (२) शुभ अर्चन जाणुं ॥६॥ जयदेव०
पराभक्ति प्रभु ध्यान हृदय विषे धारी, (२)
अभिवंदनपूर्वक हुं (२) करूं अर्चा तारी ॥७॥ जयदेव०
ए उत्तम उपचार अर्पुं तुज चरणे , (२)
अंतर्यागथि अर्चन(२)करि रहुं प्रभु शरणे ॥८॥ जयदेव०


अंक ५ मो.

ललित छंद.

प्रभु परात्परा, पूर्ण कामदा, प्रणमु हुं तने, प्रेमथी सदा;
विनति जे करूं, चित्तमां धरो, प्रणत प्राणिनां,पापने हरो. १
परम ब्रह्मनुं, ध्यान हुं धरूं, परम भक्तिथी, प्रार्थना करूं;
बहु बलिष्ठ छे,शक्ति ताहरी,नव कळी शके,वृत्ति माहरी. २
अखिल विश्वना,नाथ नित्य छो,सगुण रूपथी,पूर्ण सत्य छो;
अकल छे कला,सृष्टिसर्गनी, नहि तहीं गती,जीव वर्गनी. ३
दुरित कर्मतो, में किधां बहु, तदपि आशरो, आपनो ग्रहुं;
अवगुणो तणा,दोष ना लहो, करूणसागरा, ए अनुग्रहो. ४
भव निमग्न हुं, भ्रान्तिमां भमुं, विषय मोहना, छंदमां रमुं;
अति दया करी,हाथ झालशो,त्रिविधि दुःख सं-ताप टालशो.५
दिनदयाल हे, हे कृपाघना, कर पसारिने, याचु याचना;
विपति संकटे,साह्य तो करो,प्रभु कृपा तणो, आशरो खरो.६
शरण छुं प्रभू, प्रार्थना करूं, विनय भावथी, वाक्य ऊचरूं;
निषिध कर्मथी, नित्य हुं डरूं,विहित धर्ममां, सत्य संचरूं. ७
विषय वासना--मां हु ना फसुं,सुजन संगती--मां जई वसुं;
विमल ए मती, मागु हुं विभु, परम प्रेमथी, प्रेरशो प्रभु. ८
नमि नमी कहुं, नित्य नाथने,प्रभु उगारि ल्यो,भक्त साथने;

दिन जनो तणा, दुःखहारक, तुज विना नहीं, अन्य तारक. ९
उभय हस्त हुं, जोडिने उभो, अभय दान द्यो, रे मने विभो;
प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो, समिप मुक्तिनो, लाभ आपशो. १०
विनति सांभळो, विश्वना धणी, विभु स्वभावमां, छे दया घणी;
सदय चित्तजो, राखशो सदा, नहि कदी प्रभू, पामु आपदा. ११
विदित आपने, सर्व मर्मरे, प्रभु क्षमा करो, दुष्ट कर्मरे;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, पुरिकरो प्रभू, भक्त कामना. १२

हे विश्वेश्वर! विश्वव्यापक! हुं आ वेळा तने प्रेमपूर्वक प्रणाम करी मारा चित्तमां तारुं ध्यान धरुं छुं, तें मारा उपर दया तथा उपकारो कीधा छे तेनुं स्मरण करुं-छुं; तुं सर्वज्ञ छुं तुं सर्वनो पिता छुं, हुं तारो नम्र, दीन अने अशक्त बाळक अनेक दोषोथी भरेलो छुं. छोकरांना दोष उपर मात पिता लक्ष आपतां नथी अने तेनुं कल्याण तथा सुख चाहे छे; ए न्यायथी तुं तारा सरजावेला जीवोनुं पालन करेछे, हे करुणामय प्रभु! बे हाथ जोडीने तने हुं नमस्कार करी मागुं छुं के हुं तने कादि भुली जाउं नहीं एवी बुद्धि मने आपजे, अने सदा सारे मार्गे चडावजे. तें मने विवेकबुद्धि आपी छे, पण मारुं अशक्तपणुं केटलुं छे

ते तुं जाणे छे; तारी कृपा तथा सहायता विना माराथी कांइपण सत्कार्य थइ शकवानुं नथी, माटे तुं वारंवार सारां काम करवानी मने प्रेरणा करजे. तुं न्यायी छे तेनी साथे दयाळु छे, तेथी मारा नाना अपराधोनी क्षमा करीश एवो मने विश्वास छे. तारा विना हुं कोने शरण जाउं ? तारा विना हुं कोनी पासे माफ मागुं? तुं मने पाळनार तथा तारनार छुं, माटे हे भक्तवत्सल भगवान! मारी दीनवाणी सांभळी हुं आ जगतमां रहुं त्यां सुधी तारा ध्यान, भजन, तथा रूडां काममां मन रहे एवो मने रस्तो बतावी मारूं संरक्षण करीने हे विश्वनाथ ! मारो उद्धार करजे.

छेल्ले तने साष्टांग नमस्कार करी कहुंछुं के मने अनीति तथा दुराचारथी सदा दूर राखजे.

वसंततिलका छंद

हे विश्ववंद्य जगदीश्वर दीननाथ,
शक्ती तमारि सघळी सबळी अगाध;
व्यापी रही जगतना जिवतारवाने,
भक्तोनु ज्ञान बहु मान वधारवाने. १

एवा महान बळवान महेश्वराने,
विज्ञानवान भगवान भवेश्वराने;
पायेपडी नमिनमी स्तुति हुं करूं छुं,
प्रीत्यर्थ पूर्ण परब्रह्म तने नमुंछुं. २
जीवो सृज्या जगतमां प्रभु हेतथी तें,
भूल्या भमे भव विशे निज कर्मथी ते;
तेमां हु दोष करि पेट भरी रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ३
संभाल लीधि अति तें करूणा कृपाथी,
पृथ्वी विशे वशि रहुं प्रभुनी दयाथी;
दोषो अनेक वळि दुष्कृतियो करूंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ४
विश्वेश संकट सहस्र अनंत काप्यां,
संहारि सर्व भयने सुख नित्य आप्यां;
मिथ्या प्रपंच मद मोह विषे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ५
माया महान मदथी नथि नीज भान,
अज्ञान कापि मति शुद्ध करो निदान;
बीजो न आश्रय धरूं अति दीन हुं छुं,

तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ६
तारा अनुग्रह थकी वदुछुं हु वाणी,
तारा अनुग्रह थकी गति पाद पाणि;
तारा अनुग्रह थकी जगमां वसुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ७
जो ना करो प्रभु कृपा क्षणमात्र एक,
कार्यों न थाय मुजथी तृण मात्र छेक;
थाओ सहाय शरणागत थै रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ८
हे विश्वपालक विभू अज तुं समर्थ,
तारी दयाथि सरशे सघलाज अर्थ;
प्रेमे करी परमइष्ट तने भजुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ९
आसद्य काल वळि सर्व थतेज काळे,
धारुं सदा स्मरण तारु समस्त काळे;
तारो अनुग्रह दया कदिना भुलुं हुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १०
तारा अनुग्रहवडे वडिदेह धारुं,
कर्तव्यधर्म वळि ज्ञान रुडुंज तारुं;

आपो सुनीति तमने विनती करूंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ११
सद्धर्मकर्म करतां चितती चळेछे,
अज्ञानथी विषयभोगविषे मळेछे;
आपो प्रभू सुमति दुर्गतिथी डरूंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १२
हे पूज्यपाद परमेश्वर हीतकारी,
धारो चिते धरि दया विनती अमारी;
राखो मने हृदयमां भ्रमणे चडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १३
पापो किधां अति घणां अगण्यां अपार,
लोभी थई न किधु कर्म रूडुं लगार;
सर्वे विदीत तुजने भवमां भमुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १४
जाणो समस्त अपराध अगाध मारो,
आपो क्षमा घटित धर्म खरो तमारो;
साष्टांग पाय नमि नाथ तने कहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १५
कामादियुक्त मनमां विचरे विकार,

ते शुद्ध स्वच्छ थइने सुधरे विचार;
मागुं हु भक्ति परब्रह्म तने स्मरुं छुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १६
हे विश्वदेव करु सेव सदा तमारी,
द्यो धर्मकर्म करवा मति निर्विकारी;
राखो समीप प्रभु प्रार्थन हुं करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १७
स्वामी समर्थ जिव सर्व उगारवाने,
तो शो प्रयास निजदासज तारवाने;
माटे महेश परमेश पदे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १८
अत्यंत लाभ जगमां जगदीश थाय,
तोए न वृत्ति कदि गर्व थकी भमाय;
थारो दया प्रभु हुं द्वार अडी रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १९
जे जे भलुं भव विशे भवनाथ देखुं,
ते ते विशे परम प्रेरक तुंज प्रेखुं;
चिद्रूप व्याप्त परिपूर्ण चिते धरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. २०

संसारपंथ चरतां चितमां हुं धारुं,
तारुं स्वरूप सुखरूप अनूप सारुं;
थाओ सहाय प्रभु ए विनती करुंछुं,
तारो प्रभू शरणछुं चरणे नमुंछुं. २१
संबंधि होय जगमां वळि मित्र मारा,
तेने मने सुख हजो सुफळोज सारां;
सर्वेनु मंगळ सदा शुभ चिंतवुंछुं,
तारो प्रभू शरणछुं चरणे नमुंछुं. २२
भावे थकी भवपतीपदने पुजे जे,
चित्ते चिदात्म धरि ध्यान करी भजे जे;
पूरे मनोर्थ प्रभु सत्य करी कहुंछुं,
तारो मने शरणछुं चरणे नमुंछुं. २३
सौभाग्य तेनु शिवरूप सदैव धारे,
दुर्भाग्य तेनु चितथी प्रभुने विसारे;
विश्वेश पादरजने स्परशेथि जाय,
दोषो अशेष वळि निर्मळ चित्त थाय. २४
आलस्यवृत्ति वळि निर्दयताविकार,
चित्ते रह्या बहुज दुर्गुणना विचार;
माटे कृपाथि मन शुद्ध करो महेश,

पाये पडुं प्रभु तने वदु शुं विशेष. २५

छंद भुजंगी.

जगन्नाथ हेदेव हे स्वामि साचा,
नमुं हाथ जोडी वदुं नम्र वाचा;
दया लावि चित्ते दयादान आपो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १
महा मोहना पाशमां हुं पड्योछुं,
महाकाळने मूख आवी अड्योछुं;
महापापना पूंज छे रे अमापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. २
प्रभूपादमां राखिये पूर्ण लक्ष,
तमे प्राणदाता विधाता समक्ष;
तमारी कृपाथी टळे सर्व पापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ३
तमे कष्ट कोट्यावधीनांज काप्यां,
पुरो प्रेम आणी कृपादान आप्यां;
तमारी कृपाथी वधेछे प्रतापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ४

अरे मोटि आशा चितें तारि राखुं,
बहू दीनथी दीन वाणी हु भाखुं;
कदीना जुवो मेंकिधां सर्व पापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ५
तमे विश्वकर्त्ता तमे विश्वभर्त्ता,
दयाळू प्रभू दुःखिना दुःखहर्ता;
तमे शक्त संहारवा सर्व शापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ६
मने रंकने रक्षणो सर्व दाता,
महा सिंधुमांछो तमे सत्य त्राता;
उगारो सदा सद्गती आप आपो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ७
सदा सर्वदा ओथ आखी तमारी,
महा कष्टमां मूकशो ना विसारी;
विना तुं नजाणे अमारा विलापो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ८
जुवो जो तमे कर्म मारांज सामुं,
अती पापि हुं केम रे प्रेम पामुं;
किधा में नथी धर्मसत्कर्मजापो,

प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ९

प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे,
नमीने नमीने नमीने कहुंरे;
नथी अन्य त्राता क्षमा आप आपो,
प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १०

अती प्रेमना भावथी चिंतवुंछुं,
अती नम्रथै नम्र. वाक्यो वदुंछुं;
नथी आशरो आशरो एक सत्य,
प्रभू हुं नमुं हुं नमुं नित्य नित्य. ११

अतीदीन जीवोनि संभाळ लीधी,
अती प्रेम आणी कृपादृष्टि कीधी;
मने तारवाने क्षमावंत थाओ,
दयावंत थै दीननो हाथ साहो. १२

अनुष्टुप छंद.

कृपाळुछो जगन्नाथ, जीवना प्रतिपालक;
शरणे राखशो स्वामी, जाणीने दीन बालक. १
इच्छा आशा अमारी जे, हती ते आपने कही;
कोइ तेमां हशे योग्य, ते अमे जाणिये नहीं. २

मनोर्थो जे हशे सारा, ते तमे नाथ आपशो;
कृपादृष्टि करी नाथ, किल्विषो सर्व कापशो. ३
सत्य आधार छे नाथ, अमारे आपनो खरो;
सुतवात्सल्यभावेथी, कृपासिंधु कृपा करो. ४

पद.

जगदीश छो अनुप, करूणामयस्वरूप,
श्रवण करो अमारी, विनति कृपा करी;
सात्विकगुण प्रधान, धारो छो दयानिधान,
भक्तपर छे तमारी, दृष्टि तो दयाभरी. जगदीश०
भासे जे बधो विराट, प्रभु छे तमारो थाट,
सघळो ए सत्य घाट, राखो सत्ताथी धरी;
तमे छो प्रभु वरिष्ठ, सत्ता छे अति बलिष्ठ,
अमारां बधां अरिष्ट, लेजो संहरी हरि. १. जगदीश०

पद.

कृपानिधि पूर्ण मनकाम करो.
अति दुर्गमदुस्तर भवपंथ, भक्तने नथी अघरो. १
कृपानिधि०
प्रभुचिंतन शुभपदवंदनथी, मंद मुज मति सुधरो. २
कृपानिधि०

सहृदयहृदय करुणामयमूर्ति, चित्तमां नित्य ठरो. ३

कृपानिधि०

दीनवत्सल दीनबंधु दयाल, दुर्मति सर्व हरो. ४

कृपानिधि०

पद.

स्तवन शुभ तारूं करूं रे, प्रभु अल्पमति अतिदीन
स्तवन शुभ तारूं करूंरे.
प्रभु तारी प्रभुताई, त्रिभुवनमां गवाई,
सदा रहुं छुं तने आधीन. स्तवन शुभ तारूं करूंरे १

पद.

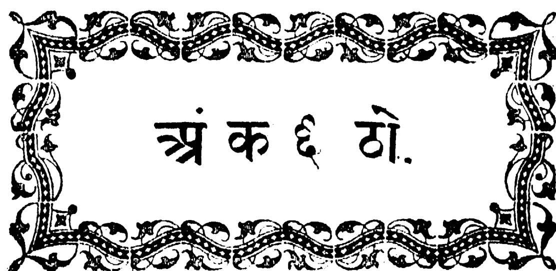
नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे;
जगन्नाथ जगतात प्रभु, तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे.
नाथ तारे०
सत्य सबल सर्वांतर्यामी, नित्य निरंतर प्रभु निष्कामी;
करुणामय मंगलमूर्ति सदा, तारूं स्मरण हृदय
धरूंरे १ नाथतारे०

आरति.

जयदेव जयदेव जय मंगलकारी जय मंगलकारी,

अति करुणा विस्तारी(२) प्रभु छो उपकारी १ जयदेव०
षड्गुणयुत भगवन् भक्ति सदा आपो, (२)
करुणा करि सेवकनां(२)भय संकट कापो २ जयदेव०
शुभ मंगल गुणगाय भक्त जनो तारा, (२)
अविचल शुभ पद आपो(२)विभु विश्वोद्धारा ३ जयदेव०
कोटयावधि अपराध प्रभु निश दिन देखो, (२)
दया करी दिनदोषो (२)चितमां नव लेखो ४जयदेव०
सकल विश्वमां व्याप्त प्रभु सत्ता भासे, (२)
सुंदर नियमो निरखी(२)चित नित्य उल्लासे ५ जयदेव०
प्रेम पुष्पनी माळ प्रभुने शुभ चरणे,(२)
अर्पण करि दृढ श्रद्धा(२)थकि रहिये शरणे ६जयदेव०
दुराचारथी दूर प्रभु राखो अमने, (२)
दिव्य पिता प्रभु करिये(२)विनति अमे तमने ७जयदेव०
मळि मंडळि महाराज अभिवंदन करिये, (२)
सदा पराभक्ति थकी(२)स्मरण हृदय धरिये ८जयदेव०





अंक ६ ठो.

छंद भुजंगी.

परब्रह्म विश्वेश व्यापी परेश,
परात्मा प्रभू सर्वसाक्षी महेश;
कळाती नथी शक्ति तारी अगाध,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १
तमारा थकी सृष्टि विस्तार पामी,
तमे पूर्ण रूपे रह्याछो विरामी;
जगत्तंत्र सर्वे तमारेज हाथ,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. २
नियंता तमे नाथ सर्वत्र भासो,
सहूस्थानमां पूर्णताथी प्रकासो;
अखंडीत आनंदरूपी अबाध,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ३
किधा सृष्टिना वर्ग आश्चर्यकारी,
नथी चालती त्यां मती तो अमारी;
अमारुं करो रक्षणो दीन रात,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ४
खगोळे ग्रहो मंडळो सूर्य चंद्र,
विराजी रह्योछे रुडो राशियंत्र;

रच्योछे तमे सर्व ए सत्य घाट,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ५
तमारुं अधिष्ठानछे शुद्ध सत्य,
थयुंछे तमारा थकी सृष्टिकृत्य;
तमेछो स्वयंभू अनादी अजात,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ६
त्रिलोके तमारा प्रकासे प्रतापो,
सदा सर्वदा चित्तने शांति आपो;
विभू विश्वव्यापी विदारो विषाद,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ७
तमे शुद्ध चैतन्य रूपे विराजो,
सदा काळ सर्वत्र सत्ताथि गाजो;
तमे सर्व जाणो प्रभू गुप्त वात,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ८
अमारे खरो आशरोछे तमारो,
कृपानाथ नित्ये करो ऊपकारो;
प्रभू सर्वनाछो तमे मात तात,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ९
सुणो प्रेमथी सर्वदा प्रार्थनाओ,

करो पूर्ण भक्तो तणी कामनाओ;
प्रभूपादपद्मे सदा जोडि हाथ,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १०
अमारी स्विकारो सदा वंदनाओ,
कृपाथी करो सर्व पापक्षमाओ;
सदा सन्मती प्रेरशो प्राणनाथ,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ११
करे जे पराभक्तिथी प्रार्थनाओ,
पुरी थाय तेनी सहू वांछनाओ;
न पामे प्रभूधामथी ते निपात,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १२
अमे नम्र थै वंदिये वारवार,
विनंती अमारी करो आंगिकार;
दयानाथ देजो शुभाशीरवाद,
अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १३

यतोवाइमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्तियत् प्रयन्त्यभिसंविशंति तमनाद्यनंतमेकं परमेश्वरं प्रणतोस्मि.

जे थकी आ सृष्टि उत्पन्न थई छे, जेणे करीने प्रा-

णीओ जीवे छे, अने अंते जेनी पासे जाय छे, एवा अनादि अनंत एक परमेश्वर तमने हुं प्रणाम करूंछुं.

हे प्रभु तमे आ वेळा मारी पासे विराजमान छो, हुं अति नम्रभावथी तमारा समीप आवी प्रार्थना करूंछुं ते कृपा करीने श्रवण करो.

तमे निरंजन निराकार सर्वव्यापी सर्वनियंता सर्व कर्मना साक्षी छो.

तमे मारूं रक्षण करो, मने पापथी वेगळो राखीने मारूं मन पवित्र करो, मारा मनने शान्ति आपो. मनोविकार एवा तो प्रबल छे के मारी नबलाइने लीधे हुं तेने निःशेष कहाडी शकतो नथी; तेमज आसपासना मोह, लालच, अने विषयो एटला बधा छे के मारा पोताना श्रमथी तेओने हुं दूर करी शकतो नथी. माटे हे जगदीश्वर हुं तमारे शरण छुं, तमारे आधीन छुं; हुं अल्पज्ञ अने अशक्त छुं ते तमे जाणो छो, माटे नीतिमार्गे चढवामां तमे मने सहाय थाओ; असत्यता, क्रूरता, अंतरनां तथा बहारनां पापकर्मथी दूर राखी मने सन्मार्ग बतावो, अने सन्मति आपो. हे भक्तवत्सल भगवान! मारी सद्गति करो. हुं तमने पूज्य मानीने तमारी भक्ति करूं, सर्व मनुष्य

जाति उपर प्रीति राखुं, मारा वेरीओने पण क्षमा करूं, अने कर्तव्य धर्म बजावुं, एवी मने प्रेरणा करो; मारा अंतःकरणमां पवित्रता, दया, दृढता, अने श्रद्धानुं स्थापन करो, तमारी साची भक्ति तथा शुद्ध उपासना करूं अने सत्य निर्दोष धर्म पाळुं एवी मने सद्बुद्धि आपो. तथास्तु.

छंद वसंततिलका.

हे देव ईश जगदीश जगन्निवास,
धारूं न आश्रय बिजो करु तारि आश;
आधार सत्य हरिनो चितमां धरूंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. १
विश्वेश सर्व शुभ कर्म कदी न जाण्यां,
कृत्यो महान मनमां हरि में न आण्यां;
भक्ती तमारि करवा सुमती चहुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. २
अत्युग्र पाप करवा मति मारि थाय,
ते ना जुवो धरि दया करजो सहाय;
हुं भक्तपाळ भवतारकने भजुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ३

तारी कृपा जगधरा कदि जो न थाय,
मिथ्या प्रयास सघळा श्रम व्यर्थ जाय;
आधारहीन अतिदीन मलीन हुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ४
साक्षी तमे सकळ कर्म विकर्म ईश,
पाळीं निभाव करशो त्यम हुं नमीश;
शिक्षा भयोथि चितमां अति हुं डरुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ५
देहाकृती गति दिसे अति शुद्ध सारी,
अंतःस्थ वृत्ति चितनी अति दुर्विकारी;
एवो थई हु प्रभु सन्निध संचरुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ६
हे भक्तवत्सल विभू भयथी उगारो,
पूरी कृपाज करि हाथ ग्रहो अमारो;
चित्ते धरी फरिफरीं प्रभु वीनवुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ७
अत्यंत पाप वळि दोष थया विशेष,
ते सर्व टाळि मति शुद्ध करो महेश;
संसार सागर थकी तरवा जपुंछुं,

पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ८
जाणुं समस्तजगलोकसहायकारी,
तो ए वृथा भ्रमित छे चितवृत्ति मारी;
गावा पुरा प्रभु गुणो असमर्थ हुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. ९
आस्वरूप श्लोक जग लोकजपे मनेथी,
पामे सदैव सुख संपति सर्व शांति;
तेनां समस्त भगवान् भवदुःख कापे,
अंते सहाय थइ ते शुभ धाम आपे. १०

गीति.

ज्यां नव भासे दिनमणि, निशमणि ग्रहगण हुताश नव भासे;
भासे ब्रह्म सदा त्यां, ते थकि त्रिभुवन प्रदीप्तअति भासे. १
जे थकि उद्भवजगनो, जेणे करिने प्रकाशने पामे;
जेमां जई विरामे, जे तणि करूणा दिसे सहू ठामे. २
जय जय जय जगदात्मा, जगदीश्वर जन्म रहित प्रभु जेछे;
जाणी जीवदयाओ, अतिशय संभाळ तेनि ते लेछे. ३
ते परब्रह्म परात्मा--पदपंकज हुं प्रणाम करि मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, निशदिन प्रभु भक्तिमां हु अनुरागुं. ४

त्रिभुवनपति हुं तारो, भवसागरथी कृपा करी तारो;
शान्ति सदैववधारो, प्रार्थन स्तवमारूलक्षमां धारो. ५
अपराधी हु थयोछुं, तुज विण नथि को शरण्य प्रभु मारे;
आव्यो छुं तुज द्वारे, आश्रय छे तुज कृपातणो भारे. ६
भवपति भवसागरथी, तरवा नथि नाथ शक्ति तो मारी;
अल्पमती अविचारी, नव करि सकु हुं स्तुती पुरी तारी. ७
गगने ग्रहगणरचना, रचिछे सुंदर अती चमत्कारी;
निश्चल नियमो बांधी, अतिशय सत्ता तमेज विस्तारी. ८
सर्वेश्वर सर्वात्मा, सच्चिद्घन स्वामि सन्मतीदाता;
धाता त्रिभुवनत्राता, सर्वांतर्यामि विश्वपितुमाता. ९
नमु नमु नमु नमु नित्ये, निर्मळ मनथी नमुं तने देवा;
दिव्य पिता प्रभु तारी, इच्छा अनुसरि सदा करूं सेवा. १०
अवलंबन छे तारूं, नव तरछोडो मने दयाधीश;
बालकशिशुनी कृतिथी, कदि नव चितमां चढावशो रीस. ११
प्रभुअस्तित्वप्रमाणो, जगरचनामां अती प्रबळ भासे;
सुंदर नियमो निरखी, निश दिन मनवृत्ति मारि उल्लासे. १२
प्रभुता एज तमारी, दोषो देखी न रोष चित धारो;
अति करूणा विस्तारो, सेवक जनने कदी न वीसारो. १३
अर्भक हुं प्रभु तारो, यद्वा तद्वा वदुं हु जे वाणी;

मामि कृपानिधि लेशो, सुतवात्सल्यस्वभाव चित आणी. १४
सप्रेमांतःकरणे, परमेश्वरने पदे हु अभिवंदुं;
शुभमंगलफलदाता, तुज शरणे रहि सदा हु आनंदुं. १५
अपराधि हु अपराधी, अतिशय तारो थयोछु अपराधी;
वळग्यो बहू उपाधी, उत्तम भक्ती तमारि नव साधी. १६
उत्तम गती अमारी, निश्चय उत्तम कृती थकी थाय;
कोटयावधि मुज दोषो, प्रभु तुज करूणाकटाक्ष थकि जाय. १७
पतितोद्धारक प्रभु छो, पावन करशो तमे मनेनाथ;
श्रम नथि किंचित तमने, वर मागुंछु पसारिने हाथ. १८

छंद मालिनी.

कर चरण वडे जे, में किधां कर्म खोटां,
श्रवण नयन चित्ते, जे किधां पाप मोटां;
अतिशय करूणाथी, द्यो क्षमा नाथ हुंने,
जय जय करूणाब्धे, हुं नमुं नित्य तुंने. १

उपेंद्रवज्रा छंद.

शरीर वाणी मनथीज पापो, प्रभू किधां में अगण्यां अमापां;
क्षमा करीने चितमां शमावो, दया करीने दिनने निभावो. १

उपजातिवृत्त.

तमे प्रभू सर्व पिताज माता, तमे सखा बंधु तमेज धाता;
विद्यामतीसद्गतिशांतिदाता, तमे प्रभू प्राणि समस्त त्राता. १

शार्दूलविक्रीडित छंद

साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिदघना,
अंतर्यामि विदीत सर्व तमने जीवो तणी कामना;
दोषो छे अगणीत शी गति थशे अंते अमारी प्रभु,
राखीए करुणा दया तुज तणी आशा अमे तो बहु. १
माग्या छे प्रभु प्रार्थना स्तुति करी अर्थो अतीशे अमे,
ते मध्ये परिपूर्ण अर्थ करशो जे योग्य जाणो तमे;
त्राता छो प्रभु आप सर्व जिवना शर्णे सदा राखशो,
लोकोनां उपयोगि कार्य करवा रूडी मती दाखशो. २

गायन.

पद.

प्रणमुं सदा परेश, पराभक्तिथी विशेष,
विमल अमारी मति, करशो दया करी;

सत् चिद्घन तमे, अति अल्प जीव अमे,
प्रभुपदमां अमारी, श्रद्धा छे खरेखरी. प्रणमुं०
तमे छो स्वयंप्रकाश, सघळे तमारो वास,
कृपा थाय तो जवाय, भवसिंधुथी तरी;
अखंड अंतर्याम, पूर्ण करो मनकाम,
करिये अमे प्रणाम, तमने फरी फरी. प्रणमुं०

पद.

करुणा करो रे कृपाळ, मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु करुणा०
अद्भुत शक्तिथी सरजाव्युं, भूमिमंडळ विशाळ;
गगन महीं ग्रहनक्षत्रोनी, शोभी रही मणिमाळ.
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. १ करुणा करो०
जीव संरक्षण अर्थे कीधां, अन्नौषधी रसाळ;
ए रचनाना पूर्ण भेदनी, नव लागे कदि भाळ.
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. २ करुणा करो०
अनुग्रह पूर्ण करी प्रभु ल्यो छो, सेवकजनसंभाळ;
प्रेम थकी प्रभुपदपंकजे, वंदी वदुं हुं बाळ.
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. ३ करुणा करो०
पतितपावन परमपवित्र, भक्ततणा प्रतिपाळ;

शांतसौम्यसात्विकगुणरूपे, दर्शन द्योनी दयाल.
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. ४ करुणा करो०

पद.

एक अखंड अनंत अगोचर ईश अद्वितिय उपासुंरे
अति अद्भुत जगनी रचनाने, निरखी निरखी उल्लासुंरे;
सत्य शुद्ध सचराचरव्यापक, ब्रह्मपदे हुं विलासुंरे. १
एक अखंड०
विषय वासना तुच्छ गणीने, चिद्घनने अध्यासुं रे;
रटन भजन प्रभुयशगुणकीर्तन, निश दिन हुं अभ्यासुंरे. २
एक अखंड०
में अपराध अगाध किधाछे, अतिशय मने विमासुं रे;
क्षमा करो करुणासिंधु प्रभु, ए वचने विश्वासुं रे. ३
एक अखंड०
पराभक्तिथी प्रभु सेवुं तो, नरक थकी नव त्रासुं रे;
परात्परा परलोक विषे प्रभु, चरण समीप निवासुंरे. ४
एक अखंड०

पद.

प्रभु पद पंकजे सदा हुं पाय लागुंरे
निर्मल मनथी स्मरण करीने,

परामक्तिमां हुं वृत्ति अनुरागुंरे. १ प्रभु पद०
आ भवमां प्रभु परम कृपानी,
नौकाविना कदी हुं नव तागुंरे. २ प्रभु पद०
शरणागत दीन दास तमारो,
अपराध तणी क्षमा हुं मागुंरे. ३ प्रभु पद०

आरति.

जयदेव जयदेव जय भगवन् देवा जय भगवन् देवा,
भक्तिपराथि तमारी (२)करुं निश दिन सेवा १ जयदेव०
प्रभुनो पार अपार ऋषिमुनि नव पाम्या, (२)
स्तुति गुण गाइ तमारी(२)मन थकि विश्राम्या २ जयदेव०
सर्व स्थले प्रभुवास सत्य करी जाणुं, (२)
ए अति उत्तम विधिनुं (२) आवाहन मानुं ३ जयदेव०
प्रेम पात्र परिपूर्ण भरुं श्रद्धा जलथी, (२)
पाद्य अर्घ्य अर्चन विधि(२)करुं निर्मल मनथी ४ जयदेव०
परमेश्वरप्रणिधान धरि नित्ये मनमां, (२)
गंध पुष्प भक्तीनां (२) अर्पुं प्रभुपदमां ५ जयदेव०
मंगलमय महाराज मंगल पद आपो, (२)

कृपा करी मुज शीर्षे(२)हस्त वरद स्थापो. ६ जयदेव०
परमात्मानुं ध्यान हृदय विशे धारुं, (२)
अति उपकार तमारा(२)कदि नव वीसारुं ७ जयदेव०
दर्शन द्यो महाराज दिनवत्सल दाता, (२)
विनय थकी विनवुं छुं (२) विश्वपितामाता ८ जयदेव०




अंक ७ मो.

ललित छंद.

परम ब्रह्मरे,प्राणतारक, प्रणत भक्तना, पापहारक;
चरणपंकजे, वंदिने सदा, प्रभु हु मागुछुं, पापनी क्षमा. १
प्रभु अतर्क्य छो, तर्क शुं थशे,मति मनुष्यनी, तो भमी जशे;
नव करी सके,कोइ कल्पना,प्रभु हु मागुछुं, पापनी क्षमा. २
विदित छे तने,कृत्य तो बधुं, विनति शुं करूं, नाथने वधु;
तुज पदे धरी,शुद्ध भावना, प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा. ३
गणतरी नथी,दुष्कृती तणी, तदपि नाथनी,छे दया घणी;
नमि नमी करूं,नित्य वंदना, प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा. ४
विधि निषेधना,नीम तें किधा,नहि कदापि में,लक्षमां लिधा;
सुमति सूचवो,सत्य चिद्घना, प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा. ५
प्रभु कृपा करी,रक्षणो करो,दिनजनस्थिती,लक्षमांधरो;
नथि शरण्य को,नाथ तुं विना,प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा.६
परम देव हे, हे दयाघना, अनुग्रहो करो--छो तमे सदा;
पुरिकरो तमे,भक्तकामना, प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा. ७
अति मलीनता,छे मती विषे, शुभकृती थकी,शुद्धतो थशे;
प्रभुकरो कृपा--दृष्टि सर्वदा, प्रभु हु मागुछुं,पापनी क्षमा. ८
मुज विरामछे,आपनो घणो, दुर करो दया--नाथ दुर्गुणो;

शुभ मनोरथो, धारु हुं घणा, प्रभु हु मागुछुं, पापनी क्षमा. ९
प्रभु प्रणाम सा--ष्टांग हुं करुं, हृदयमां रहुं, ध्यान हुं धरुं;
भवपती सुणो, स्वल्प प्रार्थना, प्रभु हु मागुछुं, पापनी क्षमा. १०

हे परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर! तमे सत्य छो, पवित्र छो, ज्ञानमय छो, तमारो पार हुं पामर जीव पामि सकतो नथी. आ संसारमां सत्कर्म करवा तमे मने जन्म आप्यो छे, एम तमे आपेली विवेकबुद्धिवडे विचार करवाथी मने बोध थाय छे, पण हे मातपिता! हुं तमारी इच्छा प्रमाणे चाल्यो नथी. मारां पाछलां कृत्यनो विचार मारा मनमां करुंछुं, त्यारे मारा चित्तने अतिक्लेश खेद अने दुःख थाय छे; मारी शी गति थशे ए विषे विचार करुंछुं तो हुं केवळ भ्रामित तथा भयभीत थाउं छुं; घणी वेला तमने भुली जइने दुष्ट नठारां कर्मों में कर्यां छे; परोपकार, दया, क्षमा, तथा मारा भाइ मनुष्यजनने सुख थाय एवां कांइ पण पुण्यनां काम करवां जोइये तेवां में कर्यां नथी. उलटो तेओनो द्रोह करीने, तेमना उपर समानभाव राखवाने बदले, तेओने तुच्छ गण्या छे; तेओनुं द्रव्य लेवामां तथा तेओने दुःखी करवामां अनेक प्रकारना प्रपंच कपट त-

था छलभेद कर्या छे. मारां कुकर्म आ वेळा संभारुं छुं तो मारा शरीरनां रोम उभां थाय छे, मने कंपारो छुटेछे. एटलोज मात्र विश्वासछे के, तमे पतितपावन परमकृपाळु अने क्षमावंत छो. ए विश्वासथी मारा मनने कांइक शान्ति थई आशा थाय छे के, हुं मारां पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने, हवेथी पाप नहीं करुं एवी सत्य प्रतिज्ञा करीश तो, तमे मारां पापकर्मनी क्षमा आपशो. माटे हे परात्पर प्रभु! तमने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करीने विनति करुंछुं के, तमे मारां पाछलां पातकोनी क्षमा आपी मारुं मन शुद्ध करो, मने सन्मार्ग बतावो, अने सदाकाळ तमारी साची भक्ति तथा उपासना करुं अने तमारा उपकारोनुं स्मरण राखी तमारी इच्छा प्रमाणे चालुं, लोकहितार्थनां काम करुं, अने मारा आत्मानुं कल्याण थाय अने परलोकमां अक्षय सुख भोगवुं एवो हे करुणासिंधु प्रभु! मने आशिर्वाद देजो. शांतिः शांतिः शांतिः

शिखरिणी छंद.

परात्मा हे ब्रह्मन्, भवजळधिउद्धारक प्रभु,
षडैश्वर्ये व्यापो, सकलदुखसंहारक विभु;

नमी साष्टांगे हुं, प्रणिपत करूंछुं प्रभुवरा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १
विना तारा कोई, विपतिभयत्राता अहि नथी,
सदा सामुं जोई, अचल सुख आपो जगपति;
पिता माता तारा, अनुग्रह दयामां नथि मणा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. २
जगदंबा देवा, त्रिभुवन महीं शक्ति पसरी,
तमारा भक्तोने, कदि नव जशो नाथ विसरी;
न जोशोरे दोषो, अवगुण अमारा अति घणा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. ३
कळा तारी देवा, कदि नव कळाशे जिव थकी,
पराभक्ती सेवा, दिन निश करुं शुद्ध मनथी;
जगत्कर्ता मानुं, निरखि सघळी विश्वरचना,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. ४
स्वयंभू छो स्वामी, नव कदि रहे गुप्त तमथी,
तने अंतर्यामी, विनति करियेरे विनयथी;
करो सन्मार्गोमां, प्रवृत मनवृत्ती प्रभु सदा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. ५
प्रभाते मध्यान्हे, वळि प्रभु दिनांतेज तमने,

सदा हुं एकांते, नमन करूछुं निश्चळ मने;
कृपासिंधू तारा, चरणथि न राखो दुर कदा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करूणा. ६
सहू प्राणी तारां, पृथिवि महि विस्तारथि रह्यां,
तथापी ते मध्ये, मनुष जनने तें करि दया;
दिधी छे सद्बुद्धी, सतत सतमार्गे विचरवा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करूणा. ७
निषिद्धाचारोमां, नबळु मन मारूं नित भमे,
सदा सद्धर्मोमां, अति त्वरित वाळो चित तमे;
कुपुत्रो तो थाशो, नहि कुपित थाशो कदि पिता,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करूणा. ८
क्रिया मारी खोटी, नवकदि चिते नाथ धरशो,
चुको कीधी मोटी, गणतरि करीने न गणशो;
निभावी ह्यो देवा, दिन गणि तमे एज प्रभुता,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करूणा. ९
नथी शक्ती मारी, स्तुति गुण तमारा उचरवा,
अती हुं अज्ञानी, तदपिज करोछो बहु दया;
नथी किंचित् देवा, श्रम पतितउद्धार करवा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करूणा. १०

जगाधीशा तारो, अति प्रबळ आधार अमने,
तमे ना वीसारो, चित थकि कदी भक्तजनने;
कृपादृष्टी राखी, भवभय निवारो चिदघना,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. ११
विनंती स्वीकारो, निजशरण राखी भवपति,
सदा सद्विद्यानी, अति विमळ आपो प्रभु मति;
प्रभू अंते मुक्ती, समिप पदनी द्यो अविचला,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १२
शुभाशिर्वादो द्यो, कुशलसुखक्षेमार्थ अमने,
तथास्तू बोलीए, प्रति वचन उच्चारि तमने;
पुरो वांछा मारी, सदय चित राखी प्रभु सदा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १३

मालिनी छंद.

प्रभुपद बहु मोटुं, विश्वनुं आदि कार्य,
सकल सबल व्याप्युं, विश्वमां विश्व बाह्य;
अजर अमर पोते, छो चिदानंद सर्व,
ऋषिमुनिजन सर्वे, छोडि दीधोज गर्व. १
अति गहन विशाले, विश्व विस्तार कीधो,

मनुष सरस जाणी, बुद्धिसंस्कार दीधो;
नमि नमि नमि नित्ये, भक्ति सन्मार्ग मागुं,
विनययुत थईने, नाथ हुं पाय लागुं. २
नहि नहि कदि जाणे, जीव तारा विचार,
नहि नहि कदि पामे, पार तारो अपार;
अकळ सकळ तारी, छे कळाओ अगाध,
षड विधि गुण संपन्वंदु विश्वाधिनाथ. ३
करद्वय पसरीने, भक्तिमार्गे करीने,
अति विनय धरीने, प्रार्थना उच्चरीने;
हरख मन भरीने, हेतथी आदरीने,
नमु नमु नमु नित्ये, ऊपकारो स्मरीने. ४
प्रभुपद प्रणमीने, याचना हुं करूंछुं,
स्मरण शुभ तमारुं, चित्तमां हुं धरूंछुं;
नबळि सघळि वाणी, ल्यो कृपाथी स्विकारी,
नहि नहि मति चाले, ए थकी पार मारी. ५
चिदघन विभु व्यापी, विश्ववंद्या विधाता,
सकळकुशळदाता, सर्वना सत्य त्राता;
अतिशय सुखकारी, भक्तिआपो तमारी,
सतत सदगुणोमां, वृत्ति राखो अमारी. ६

प्रभुपरमकृपाथी, मूक वाणी वदेछे,
प्रभुपरमकृपाथी, पंगु गीरि चढेछे;
प्रभुपरमकृपाथी, सर्व कल्याण थाय,
प्रभुपरमकृपाथी, मोक्षमार्गे जवाय. ७
त्रिभुवनपति तुंने, वंदिये वारवार,
निश दिन प्रभु तारा, मानिये उपकार;
शरण नथिज बीजुं, सत्य आधार तारो,
करग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथि तारो. ८

उपेंद्रवज्राछंद.

तमे अमारा प्रभु मात तात, विदीत छे सर्व अमारी वात;
क्षमा करी किल्बिष सर्व कापो, दया निधे सन्मति नित्य आपो. १
सुणी तमे प्रेम थकी अमारी, विनंति लेशो चितमां विचारी;
जणायजे मागणि नाथ सारी, दयाथि लेशो प्रभु ते स्विकारी. २

गायन.

पद.

भगवंत ब्रह्म प्रभू, परिपूर्ण व्याप्तविभु,

सबल तमारि शक्ति, त्रिभुवनमां जणाय;
अविचिंत्य इष्ट एक, किधी तें सृष्टि अनेक,
अकळ अत्यद्भूत, तारि न कळा कळाय. भगवंत०
प्रभु छो अनाथनाथ, अमे जोडी बेउ हाथ,
विनवीए विश्वनाथ, करुणा करो सदाय;
विश्वंभर विश्वपाल, दीनवत्सल दयाल,
जाणीने तमारां बाल, करो सर्वदा सहाय. भगवंत० १

पद.

परमात्मा परिपूर्ण प्रभु परमेश्वरने हुं प्रणाम करुं.
महत् शक्तिथी जग सरजाव्युं, भुमि जल फल पाषाण तरु;
ए अद्भुत कृति गहन गतीने, मंदमति हुं शुं विस्तरुं. १
परमात्मा०

जे बलथी आ विश्व प्रकासे, जे थकि भासे सत्य खरुं;
ते विश्वंभर व्याप्त विभुनुं, ध्यान निरंतर चित्त धरुं. २
परमात्मा०

प्रेम थकी परब्रह्म तमारी, इच्छाओने अनुसरुं;
दया कृपा उपकार प्रभुना, चित्त थकी न कदी विसरुं. ३
परमात्मा०

साष्टांगे प्रभु चरण नमीने, विनति करी हुं कर पसरुं;
आ संसार विशे विश्वेश्वर, सत्कर्मोमां सदा हुं सरुं. ४
परमात्मा०

शरण रही परमेश तमारा, भक्तिपथे हुं सदा विचरुं;
विनय थकी जगवंद्य तमारुं, मंगल नाम मुखे उचरुं. ५
परमात्मा०

पद.

विनति करुं कर जोडी, विनति करुं कर जोडी,
त्रिभुवन त्रातारे, विनति करुं कर जोडी;
प्रभुमहिमागुणस्तुति करवाने,
मंद अल्प मति मारी थोडी, त्रिभुवन त्रातारे,
विनति करुं कर जोडी. १
करग्रहीने करुणानिधिमुजने, कादि नव देशो प्रभु छोडी,
त्रिभुवन त्रातारे विनति करुं कर जोडी. २
पतितपावन गुण शुभ धारो, माटे प्रभु द्वार आवुं दोडी.
त्रिभुवन त्रातारे. ३
षड विषयोनां अति दृढ बंधन, तत्क्षण नांखो तमे तोडी,
त्रिभुवन त्रातारे विनति करुं कर जोडी. ४

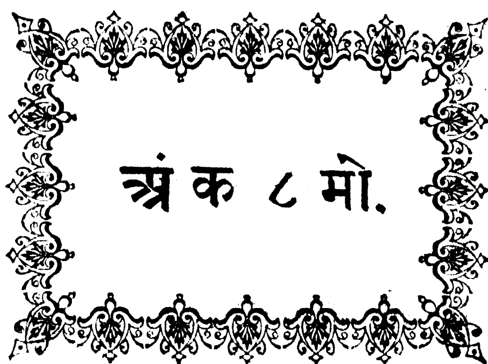
पद.

जगदीश्वरने हुं वंदु प्रभु भव तारोरे, जगदीश्वरने हुं वंदुं
शरणागतनुं रक्षण करशो, हे करूणाना सिंधु जग० १
सप्रेमांतःकरण थकी हुं, नमुं प्रभु चरणार्विंदु जग० २
अवगुण उपर लक्ष न देशो,दीनवत्सल दीनबंधु.जग० ३
पराभक्तिनी लेह मुने लागी, प्रभुपदमां आनंदुं. जग० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय विश्वाधारा जय विश्वाधारा,
विश्वंभर अविकारा (२) विभु अपरंपारा १ जयदेव०
सकल विश्वनानाथ सत्य तमे भासो, (२)
सर्व स्थलमां प्रभुनो(२)छे निश्चय वासो २ जयदेव०
अंतर्ध्यान विधान अति प्रिय छे तमने, (२)
अविहित निंद्य कृतिथी(२)दुर राखो अमने ३ जयदेव०
सद्विद्या सज्ञान सत्संगो आपो, (२)
अंतर्यामी अमारां(२) दुष्कर्मो कापो ४ जयदेव०
करिये कोटि प्रणाम परमेश्वर चरणे, (२)

कृपाकरी अमने प्रभु (२) राखो निज शरणे ५ जयदेव०
प्रभु उपकार अपार स्मरण सदा करिये, (२)
जनहितकारि क्रिया करि (२) भवसागर तरियें६ जयदेव०
प्रेमभक्तिथी ध्यान धारि प्रभु आराधे, (२)
भवबाधाओ तेने (२) निश्चय नव बाधे ७ जयदेव०
भक्त तणी संभाल प्रभु निश दिन लेशो, (२)
भव थकि पार उतारी (२) मुक्ति समिप देशो ८ जयदेव०


अंक ८ मो.

छंद भुजंगी.

कृपासागरा सर्वआनंददाता,
प्रभू प्राणिना छो तमे सत्य त्राता;
स्तुती गूण गावा नियंता तमारी,
नथी चालती कांइ शक्ती अमारी. १

कृपानाथ कीधा बहू ऊपकारो,
कई वीधिये वाळिये पाड तारो;
सदा सर्वदा क्षेम आरोग्य आपो,
अमारां महा संकटो दुःख कापो. २

जगत्तंत्र छे सर्व आधीन तारे,
भरूसो खरो ताहरो छे अमारे;
तमारी दयाथी रूडां कार्य थाय,
महाविघ्नने व्याधियो सर्व जाय. ३

तमे मातने तात छो रे अमारा,
अमे बालको शर्ण आव्या तमारां;
अतीशे किधा छे अमे नाथ दोषो,
कृपादृष्टि राखी प्रभू ते न जोशो. ४

सदा ऊपकारो किधाने करो छो,

विनंती तमे सर्व लक्षे धरोछो;
तमारा विना को नथी रे समर्थ,
तमारी कृपाथी थशे पूर्ण अर्थ. ५
अती निंद्य कर्मो प्रभू नित्य थाय,
तमे जो गणो तो गती केम थाय;
तमे सर्व वस्तू थकी सत्य सारा,
करो सर्व दोषो क्षमा नाथ मारा. ६
पराभक्तिथी वंदिये वारवार,
प्रभू प्रार्थनाओ करो अंगिकार;
तमारुं किधुं ते न कोईथि थाय,
प्रभू सर्व काले करोछो सहाय. ७
स्विकारो नमस्कार नित्ये अमारा,
स्मरीए सदा ऊपकारो तमारा;
विनंती अमारी तमे मानि लेजो,
कृपादृष्टिथी पूर्ण आशीष देजो. ८

हे परमपवित्र परमात्मा परमकृपाळु परमेश्वर! हुं आ संसारना मोहपाशमां पडेलो छुं तेमांथी मुक्त करनार तुं समर्थ छुं; मारे साचो आश्रय मात्र तारो छे. तुं मारुं

रक्षण करनार भयथी बचावनार छुं ए मने मोटो आधार,आशा तथा विश्राम छे.कुटिलता क्रूरताथी भरेलो अने पापिष्ठ एवो हुं ते तारा विना कोने शरण जाउं? तारी दयानी छाया विना हुं क्यां जईने विराम पामुं ? हे दयासिंधु प्रभु! हुं तारो छुं, तारी आगळ मारा मनना बधा उभरा कहाडीने अभिवंदनपूर्वक प्रार्थना करूंछुं के मारां पापकर्मोने बाळी नांखी मारूं मन पवित्र कर. सघळी दुर्वासना, सघळा पापसंकल्पो तथा सघळा दुर्विकारो मारा मनमांथी जडमूळथी काढी नांख. हे कारूण्यमूर्ति प्रभु! हुं मारा मनमां विचार करूंछुं तो तारी साथे मारे गंभीर, पवित्र, अने दीर्घ संबंध केटलो बधो छे, अने ते संबंध भुली जईने में केटलां बधां दुष्ट अने घोर कर्म कर्यां छे, मारो अधर्म, अनाचार केटलो छे, जो तारो दयाळु स्वभाव न होततो हुं कदी पण क्षमाने पात्र थात नहीं, तारी शुभ प्रेरणा पाळवाने बंधायलो छतां घणी वेळा ते उलंघी छे, तारा उपकारो भुली जईने कृतघ्नी थयोछुं, तें मने सारे मार्गे जवानी तथा भयथी बचवानी सूचना आप्या छतां तेना उपर में लक्ष आप्यो नथी, तारी मारा उपर प्रीति छतां में तारा उपर प्रीतिभाव राख्यो नथी, मारी

प्रीति संसारनां क्षणिक सुखो साथे अमर्यादे वळगी रही छे--आ बधो विचार करुंछुं तो तारा आगळ हुं एक शब्द पण उच्चार करवाने योग्य नथी. मारां दुरित कर्मथी लज्जा पामी ध्रुजतो ध्रुजतो तारी पासे उभो रह्यो छुं. अपराधी छुं. तुं मारुं रक्षण कर, मारो उद्धार कर. हुं पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने क्षमा मागुंछुं, ते कृपा करी मारी आ प्रार्थना स्वीकारीने मने सद्विचार तथा सुमति आप, अपवित्र विचारथी मने वेगळो राख. खोटा संगथी मने छोडाव;धार्मिकपणाना खोटा ढोंग तथा दंभथी मनें दूर राख; मिथ्याभिमान तथा गर्व तथा प्रपंचथी मुक्त कर. जे क्रियाथी तारा उपरनी मारी प्रीति घटे एवी क्रियाथी मारुं मन निवृत्त कर. मारामां जे भुल खोड होय ते कहाडी नांखी नीति तथा सदाचारमां मारुं मन प्रवृत्त थाय एवी योजना कर; मारा मनमां खोटी वासना तथा खोटा संकल्प उत्पन्न थाय ते वेळा तारुं स्मरण करीने ते विचारोने मनमांथी कहाडी नांखवानी मने शक्ति आप; अध्यात्मिक सुख मळवानो हुं यत्न करुं तेमां तुं सहायथा.

हे परात्पर भगवन्!

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मनावा प्रकृतेःस्वभावात् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै परात्परायेति समर्पयामि ॥१॥

काया, वाणी, मन, इंद्रिय बुद्धिवडे तथा आत्मावडे तथा प्रकृतिना स्वभाववडे जे जे सत्कर्म करूंछुं ते हे परमेश्वर! हुं तने अर्पण करूंछुं.

दयालु पिता सर्व रीते हुं तारोछुं तुं मारूं सर्व काल रक्षण कर.

त्वमेव माताच पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥१॥

तुं मारो मात पिताछुं तुं मारो बंधु तथा तुं मारो मित्र छुं मारी विद्या तथा द्रव्य तुं छुं हे देव तुं मारो परमदेवछुं.

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर ॥१॥

हुं अहर्निश सहस्रावधि अपराध करूंछुं; मने तारो दास जाणीने हे परमेश्वर! मारा अपराध क्षमा कर.शांतिः शांतिः शांतिः

ललितछंद.

जगतवंद्यरे, वंदिये तने, प्रणत प्राणियो, पामरो अमे;

प्रणिपतो प्रभू, लक्षमां धरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. १
सकल सिद्धिना, छो महोदधि, नव स्तुती थशे, रे यथाविधि;
अनुग्रहो दया, पूर्ण विस्तरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. २
अणचित्यां तमे, कार्य तो करो, विपति संकटो, भक्तनां हरो;
प्रभुप्रताप तो, छे खरेखरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ३
मुक जनो वदे, वाणि शुद्ध रे, गिरि उलंघशे, पंगु वृद्ध रे;
प्रभु कृपा तणो, सत्य आशरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ४
अनुग्रहो किधा, ने करो सदा, सघलि टालशो, दुःख आपदा;
अति दया करी-ने ग्रहो करो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ५
नव गण्यो अमे, धर्मनो विधि, दुरित दुष्कृती, रे बहू किधी;
प्रभु बतावशो, पंथ पांशरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ६
पुत कुपूत तो, थाय यद्यपि, नव पिता करे, त्यागतो कदी;
नियम न्यायए, राखशो खरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ७
प्रभु समर्थ छो, प्राणना पति, प्रणत भक्तने, द्यो रुडी मति;
पतितपावना, पाप संहरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ८
परमब्रह्म रे, प्रार्थना सुणो, अवगुणो कदी, नाथ ना गणो;
प्रभु शुभाशिषो, नित्य उच्चरो, करूण सागरा, रे कृपाकरो. ९
प्रभु कृपा सुधा-वृष्टियो करो, मुज चिते सदा, सद्गुणो भरो;
घटित कामना, भक्तनी पुरो, करूण सागरा, रे कृपा करो. १०

शालिनी छंद.

विश्वाधीशा विश्ववंद्या विधाता,
सत्यानंता सच्चिदानंद कंदा;
श्रद्धा भक्ती ध्यान योगे हु वंदुं,
तारे शर्णे हुं सदा दीनबंधु. १
देवा तारुं छे अधिष्टान सत्य,
सर्ज्युं छे तें सृष्टिनुं सर्व कृत्य;
दीसे लीला सर्व आनंदकारी,
विश्वे व्यापी पूर्ण शक्ती तमारी. २
शीशी शोभा सृष्टि केरी वखाणुं,
सत्ता तारी सर्व ठामे हु जाणुं;
जीवो सर्वे देहधारी विकारी,
तेओथी शुं थाय स्तूती तमारी. ३
दोषो देखी ऊपकारो करो छो,
प्राणीओने अन्न पानो भरोछो;
एवा स्वामी छो प्रभूरे कृपाल,
संभाळो छो भक्तने सर्वकाळ. ४
देवा तारी जो कृपादृष्टि थाशे,

સત્કર્મોના શુદ્ધ માર્ગે જવાશે;
આપો નિત્યે દાસને બુદ્ધિ રૂડી,
કાપો મારી વાસના સર્વ કૂડી. ૫
જાણો મારી ગુપ્ત વાતો સહૂરે,
લજ્જા સર્વે હાથ તારે પ્રભૂરે;
ઊગારી લ્યો સંકટોથી દયાલ,
જાણી હુંને દાસ અલ્પજ્ઞબાલ. ૬
આવ્યો તારે દ્વાર હું દીન દાસ,
કાઢો દેવા ના મને તો નિરાશ;
વારેવારે છે પ્રભૂને પ્રણામ,
પૂરો ભક્તોના તમે સર્વ કામ. ૭
આપો આપો ચિત્તને શાન્તિ આપો,
કાપો કાપો પ્રાણિનાં કષ્ટ કાપો;
ધારો ધારો પ્રાર્થના લક્ષ ધારો,
તારો તારો વિશ્વસિંધૂથિ તારો. ૮
કામક્રોધાદીક બંધો ન છૂટે,
નિત્યે ખોટા ચિત્ત સંકલ્પ ઊઠે;
આ સંસારે સત્ ક્રિયા જો ન થાય,
નિશ્ચે મુક્તીધામમાં ના જવાય. ૯

अज्ञानी हुं सत्यमार्गे चढावो,
दोषो मारा नाथ सर्वे शमावो;
मोहाब्धीथी पार हुंने जवानी,
आपो देवा सत्य नौका कृपानी. १०
साष्टांगे हुं वंदिने वारवार,
मानुं तारा सर्वदा ऊपकार;
कृत्यो मारां नाथ लक्षे न लेशो,
सद्विद्या सज्ज्ञाननो बोध देशो. ११
नीती नीमोनो सदा भंग थाय,
तोए तारी प्रीति पूरी जणाय;
प्रेरो स्वामी सन्मतीओ सदाय,
जेथी निश्चे मोक्ष मार्गे जवाय. १२
सर्वात्माने शुं कहुंरे वधारे,
सर्वे दोरी हाथछे नाथ तारे;
प्राणीने छे सत्य आधार तारो,
तेनां सर्वे संकटोने निवारो. १३
थाशे क्रीया तुं प्रभू जेम धारे,
संकल्पो छे सत्य तारा बधारे;
तारुं धार्युं सर्वदा सिद्ध थाय,

मिथ्या यत्नो जीवनां सर्व जाय. १४
शर्णे राखो दास हुं छुं तमारो,
व्याधी कष्टो सर्व मारां निवारो;
वंदुं तारे चर्ण बे हाथ जोडी,
कामादीना नांखशो पाश तोडी. १५
सत्कर्मोथी चित्तनी शुद्धि थाय,
भक्तीद्वारे मोक्ष धामे जवाय;
ढोंगो वेशो बाह्यना सर्व ठाली,
अंतःशुद्धी छे तने नाथ व्हाली. १६
नीती मार्गे चालतां कष्ट थाय,
तोए ते सन्मार्गने ना मुकाय;
इच्छा तारी मानि आधीन रे'वुं,
माथे आवे कष्ट ते सर्व से'वुं. १७
एवी बुद्धी प्रेरशो प्राणनाथ,
वांछा पूरो दासनी मात तात;
अंते देवा तुं विना को नथी रे,
त्राता मारो हे दयाना निधीरे. १८
रूडां कार्यो लोकनां जो न थाय,
मिथ्या फेरो जन्मनो सर्व जाय;

आ विज्ञप्ती स्वल्प मारी स्विकारो,
सत्कर्मोना सूचवो सद्विचारो. १९
आपत्काळे धैर्यता नाथ आपो,
भक्ती सेवामां प्रभू वृत्ति थापो;
द्रव्यादीनो लाभ संपूर्ण थाय,
त्यारे पूरी तो परीक्षा जणाय. २०
विश्वस्वामी जो हशोरे सहाय,
वृत्ती मारी गर्वथी ना भमाय;
सन्मित्रो आ सृष्टिमां जे अमारा,
तेओने द्यो सद्गुणो बोध सारा. २१
शत्रूओनी दुर्मतीने सुधारो,
सर्वे स्थाने शांतियोने वधारो;
जीवोनुं जे वस्तुथी थाय हीत,
अंतर्यामी आपने छे विदीत. २२
सर्वे प्राणी शर्ण छे नाथ तारे,
तारो चित्ते सत्य विश्वास धारे;
सृष्टीसृष्टा सत्य छो ते प्रमाणुं,
सर्वे कर्मोना प्रभू साक्षि जाणुं. २३
मानी लेशो प्रार्थना नम्र मारी,

आशा राखुं नाथ पूरी तमारी;
आ संसारे चित्तनी शांति पामुं,
अंते तारा क्षेम धामे विरामुं. २४

ललित छंद.

प्रभुपदे अमे, पाय लागिये, दुरित कृत्यनी, माफि मागिये;
पतितपावना, प्रेम लावशो, अनिति दुष्कृती-थी बचावशो. १
शुभ गुणो सदा, नाथ आपशो, मनमलीनता, कापि नांखशो;
सुणि तमे प्रभू, नम्र वीनाति, शरण राखशो, रे दयानिधि. २
प्रभु मनोरथो, मागिये अमे, घटित जे हशे, पूरशो तमे;
नव विसारशो, दासने कदा, सुनिति सन्मती, दाखशो सदा. ३

गायन.

पद.

जय जगवंद्य जय, जय भगवंत जय,
जय परब्रह्म जय, जगदीश धन्य छो;
अखंड अव्यक्त शुद्ध, चिद्घन नित्य मुक्त,
असंग अचिंत्य सत्य, अतर्क्य अनन्य छो. जय जगवंद्य०
प्रणमीए वारवार, मानी बहु उपकार,

कृपाथी करो उद्धार, वरिष्ठ वरेण्य छो;
शक्ति छे अति प्रबल, मति करो निर्मल,
आपो पद अविचल,सकलशरण्य छो. जय जगवंद्य १

पद.

जय जय जगवंद्य दयासिंधु ऊपकारी.
मंगलमयमूर्ति महा मंगल शुभकारी,
मंगलप्रद पूर्ण प्रभु मंगलगुणधारी. १ जय जय जगवंद्य०
सृष्टिमां दिसे तमारी सर्व शक्ति भारी,
भक्तनी विनंति विश्वनाथल्यो स्विकारी.२जय जय जगवंद्य०
पापकर्म सर्व कृपानाथ द्यो विसारी,
शरण राखिने दयाल द्यो मति सुधारी.३जय जय जगवंद्य०
प्रणमि अमे पाप क्षमा मागिये तमारी.
आत्म उन्नति करो कृपाघना अमारी.४जय जय जगवंद्य०

पद.

विनती प्रभु सांभलो मारी, दया धारी, विनती०
करजोडी हुं प्रणाम करूंछुं, मागुं क्षमाओ तमारी;
आ भवमां सुख सन्मति आपो, अंते मुको न विसारी,
प्रभु बहु छो उपकारी. १ विनती०
दया करी मानुष देह दीधो, प्रेरो मति शुद्ध सारी;

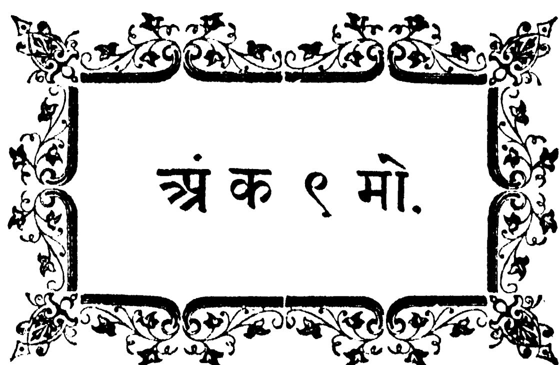
कर्तव्य कर्म करावो विश्वमां, रह्मे सदा साह्यकारी,
प्रार्थना चित्तमां धारी. २ विनती०
क्षणे क्षणे उपकार करो छो, संकट सर्व निवारी;
प्रत्युपकार केई पेरे वाळुं, अल्प हुं जीव विकारी,
प्रभु तारी सत्ता भारी. ३ विनती०
षड्गुणयुतभगवंत तमे छो, भक्त तणा भयहारी;
भक्ति थकी निश्चय हुं पामुं, प्रभुपद मंगलकारी,
लज्जा तमे राखो मारी. ४ विनती०
चित्त करुं चरणार्पण नित्ये, प्रभु शुभ नाम उच्चारी;
आ स्वल्प वाक्यथी विनति कीधी जे, ते तमे लेजो स्वीकारी,
कृति मारी सर्व विचारी. ५ विनती०

आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगत्राता जय जय जगत्राता,
सात्विक शुभ गुण धाता(२)दिनवत्सल दाता १ जयदेव०
स्थिरचरव्याप्त महेश मंगलशुभकारी, (२)
भवपति भक्त जनोना (२) भयसंकटहारी २ जयदेव०
सृष्टिवस्तुवत्नाथ नथि प्रतिमा तारी, (२)
चिन्मय मंगल अविचल(२)अनुपम अविकारी ३ जयदेव०

शिर साष्टांग प्रणाम करिये प्रभु तमने, (२)
भव थकि पार उतारो (२)करुणा कारि अमने ४ जयदेव०
पतितोद्धारक नाथ पापक्षमा करशो, (२)
अल्प जिवोना दोषो (२) नव लक्षे धरशो ५ जयदेव०
सर्वोत्तम सर्वेश सर्वांतर्यामी, (२)
सत्य सदाशिव स्वामी (२) निर्मळ निष्कामी ६ जयदेव०
अंतर्ध्यानथि नाथ आराधन करिये, (२)
तुज करुणादृष्टि थकी(२)भवसागर तरिये ७ जयदेव०
प्रभु द्यो आशिर्वाद सद्गुण आचरिये, (२)
अति उपकार तमारा (२) नित्य अमे स्मरिये ८ जयदेव०





अंक ९ मो.

ललित छंद.

प्रभु परात्परा, प्राणना पति, प्रणमिने करूं, नम्र वीनति;
सबल सत्य छो, सन्मतिप्रदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. १
अति अशक्त छुं, भक्ति शुं करूं, मन मलीनता-थी बहू भर्युं;
विभु विचारशो, दासदीनता, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. २
विकट घांटि छे, विश्वनाथरे, तुज विना ग्रहे, कोण हाथरे;
नव पडे मने, दुःख आपदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ३
जिव करे सदा, कर्म निंद्यरे, नव जुवो तमे, विश्ववंद्यरे;
विभु तमारि छे, ए वरिष्ठता, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ४
दिनजनस्थिती, लक्ष धारशो, भव थकी मने, नाथ तारशो;
जिव समस्तने, भक्तिमुक्तिदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ५
विनति हुं करूं-छुं यथामति, कुशळतां करो, रे कृपानिधि;
मुज बतावशो, सन्मती सदा, प्रभुकरो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ६
हृदयमां मने, नाथ राखशो, नियम नीतिना, नित्य दाखशो;
दुर करो बधी, चित्तनी व्यथा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ७
चरणपंकजे, पाय लागुछुं, दुरित कर्मनी, क्षांति मागुछु;
पतितपावना, पूर्णकामदा, प्रभुकरो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ८
परम प्रेमथी, प्रार्थना करूं, हृदयमां दया-सिंधुने स्मरूं;
नव विसारशो, दासने कदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ९

प्रभु तने महा, पूज्य जाणुछुं, तुज अनुग्रहो, नित्य मानुछुं;
नमु नमुं नमुं--छुं सहस्रधा, प्रभुकरो कृपा--दृष्टि सर्वदा. १०

हे विश्वेश्वर विश्वव्यापी शान्तरूप, सर्वनो प्रकाश करनार, सत्तावान, स्वतंत्र, सकल सुखनो आपनार, सर्वनो साक्षी, सत्य, पूर्ण, अजन्म, अमर, एवो तुं परब्रह्म परमेश्वर, हुं तने प्रेमथी प्रणाम करी मागुंछुं के, आ संसारमां मारो बधो काळ तारी सारी भक्ति तथा सेवामां काढुं एवी मने सुमति आप. तारा उपर प्रीति रखाव. ताराथी विमुख थवाय, तारा उपरनी प्रीति उठी जाय एवी कांइ पण वस्तु आ संसारमां मने आपीश नहीं. मने सर्व वाते तारो पोतानो करी राख, के हुं निरंतर तारूंज अवलंबन राखीने रहुं. सुखमां तथा दुःखमां, सारी अथवा दुर्बळ अवस्थामां, नीरोगी अथवा रोगी होउं ते समयमां तथा मारा घरकृत्य तथा लौकिक व्यवहारनां काममां, ए सघळा प्रसंगमां तने संन्निध जाणीने तथा तारे आश्रये रहीने तने प्रिय लागे एवी वर्तणुक करूं, गमे ते ठेकाणे होउं, तथा गमे तेवो प्रसंग मारे माथे आवी पडे, परंतु हुं तने न छोडतां तारा निर्माण करेले नीतिने रस्ते चा-

लुं अने तारा विना कोईनुं अवलंबन करुं नहीं. तुं चिदात्मरूप, सृष्ट वस्तुथी भिन्न, तथा सर्वांतर्यामी एक अनादि अनंत ईश्वररूपुं, एम मने तारी प्रेरणाथी समजायुं छे, माटे अधम भक्ति तथा नीची उपासना के जेथी तारा उपरना पूज्यभावमां अवरोध थाय, जेथी तारो महिमा घटे तथा तारा उपरनी मारी प्रीति ओछी थाय जेथी मारा मनोविकार तृप्त करवानी वासना वधे, तथा संसारना तुच्छ विषयो भोगववानी वृत्ति थाय एवी उतरती जातिनां अर्चन विधानो हुं कदी करुं नहीं, अने सदाकाळ तारी परम उत्कृष्ट शुद्ध प्रेमभक्ति उपर लक्ष रहे एवो तुं मने उपदेश तथा प्रेरणा करतो रहेजे. हुं तने भुली न जाउं अने सदा एज स्मरण राखुं के आ संसारमां रहेवानो मारो मुख्य हेतु तारी कृपा तथा तारो प्रेम संपादन करवानो छे. लोक व्यवहारना काममां पण मारो खरो लक्ष तारा उपर राखीने व्यवहार चलावुं; मारा मनमां एवा स्वार्थलोभ के लालच उत्पन्न थाय के तेना उपर आसक्त थईने तने भुली जाउं, तो एवी वासनाओनो मारा मनमांथी समूळ नाश करजे. संसारिक भोग तथा सुख उपर अति आसक्ति न राखतां यथाघटित प्रीति राखी-

ने तारा उपर पूर्ण अने साचो प्रेमभाव तथा दृढविश्वास रहे अने तारा सहवास विना बीजी कांइ पण इच्छा न थाय एवी मारी वृत्ति कर. हे दयालु पिता! हुं तने नम्रतापूर्वक विनाति करूंछुं के आ संसारमां रहुं त्यां सुधी हुं तारी पराभक्तिमां तत्पर रहीने मरण समये तारा उपर लक्ष राखीने, शांत तथा आनंद मय चित्तथी मारो आत्मा तने अर्पण करूं एवी वृत्ति राखवामां तुं मने सामर्थ्य आप.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

वसंत तिलका छंद.

हे विश्वनाथ विभु सत्य समर्थ देव,
सर्वत्रव्यापि करु नित्य तमारि सेव;
सर्वे स्थले वशि रह्या प्रभु आत्मराम,
साष्टांग नाथ तमने करु हुं प्रणाम. १
सर्वेश तारि करुणाथकि कार्य थाय,
निःशेष दुष्कृति जिवो तणि सर्व जाय;
देखुं दयानिधि दया सघळेज ठाम, साष्टांग नाथ० २
पादारविंद प्रभुना नमु जोडि हाथ,
कृत्यो महान करवा मति मागु नाथ;

राखुं निरंतर चिते प्रभु तारि हाम, साष्टांग नाथ० ३
जोता नथी जिवतणा अपराध पापो,
वात्सल्य भावथकि पोषण सर्व आपो;
माटे तमारु करुणानिधि सत्य नाम, साष्टांग नाथ० ४
आस्तिक्यभावथि नमुं तमने त्रिकाळ,
तारो त्रिलोकपति प्रेम थकी कृपाल;
पामुं परात्परपदे प्रभु हुं विराम, साष्टांग नाथ० ५
अज्ञानपाश करुणा करि कापि नांखो,
नित्ये प्रभू तम पदे मनवृत्ति राखो;
भक्तोनु पालन करो प्रभु सर्वयाम, साष्टांग नाथ० ६
संसारमां सकल मंगळ कार्य थाय,
संकष्ट विघ्न भय दुःख समस्त जाय;
अंते मळे समिपमुक्ति तणुंज धाम, साष्टांग नाथ० ७
विश्वेश छो सकल विश्व तणा विधाता,
त्राता तमे सकलमंगलशान्तिदाता;
सत्ये तमारि करुणा थकि थाय काम, साष्टांग नाथ ०८

झूलणा छंद.

अखिल ब्रह्मांडना नाथने नित्य हुं,
प्रेमभक्ती थकी पाय लागुं,

दुर्मती टाळि सन्मति सदा आपशो,
एज वरदान भगवान मागुं;
विषय मोहाब्धिमां मग्न अतिशय हुन्हुं,
अंतमां शीगती नाथ थाशे,
प्रभुकृपा जो हशे तोज भवबंधथी,
मुक्त थइ मुक्तिमार्गे जवाशे. १
निंद्यनिष्ठुर किधां कृत्य में अति घणां,
नाथ करवां क्षमा हाथ तारे,
दीनवत्सल दयानीधि निज दासनां,
विपति भय संकटो तुं निवारे;
शरणछुं चरण प्रत प्रणमि प्रणिपत करुं,
स्मरण हृदये धरुं नित्य तारुं,
विनति चित्ते धरो पाप प्रभु परहरो,
प्रेमथी सांभळो स्तवन मारुं. २
सत्य सच्चिद्घना साक्षि सर्वोत्तमा,
सर्वदा क्षेमकल्याणदाता,
परम करुणा थकी प्राणि मात्रो तणा,
चित्तने द्यो तमे शान्ति शाता;
अल्पमति छुं प्रभू स्तवन ते शुं करुं,

नम्र भावे तने नित्य वंदुं,
नीति सन्मार्गमां बुद्धि प्रेरी सदा,
सद्गती आपशो न्यायसिंधु. ३
धन्य तारी गती धन्य तारी कृती,
शूकसनकादिको को न पाम्या,
ऋषिमुनी वेद मंत्रे स्तुतीओ करी,
नेति अंते वदीने विराम्या;
प्रभु करो अनुग्रहो अवगुणो नवलहो,
भक्तनो करग्रहो रे कृपाला,
धर्म धारण किधो निज प्रजा पालवा,
राखु विश्वास हुं विश्वपाला. ४
सृष्ट वस्तू थकी भिन्न प्रभु छो तमे,
शुद्ध चैतन्य रूपे विराजो,
ज्ञान इच्छा क्रिया सबल शक्ती थकी,
विश्वमां पूर्ण प्रभुताथि गाजो;
भवपती प्रभु तने विस्तरी शुं कहुं,
कृति नथी तुं थकी कांइ छानी,
विनय भावे तने विनती हुं जे करुं,
सर्व लेशो तमे नाथ मानी. ५

द्वारतारे प्रभू आवि विनती करूं,
नव कदी चरणथी विमुख करशो,
पतितपावन प्रभू प्रार्थनाओ सुणी,
वरद शुभ हस्त मुज शीष धरशो;
योग्य नथि तदपि प्रतिपालना प्रभु करो,
प्रेमराखो सदा दास जाणी,
ए कृपानाथ उपकार अति ताहरो,
मानि नित्ये वदुं नम्र वाणी. ६
राखुं अभिलाष अविनाश पद पामवा,
योग्यता आपवी हाथ तारे,
सर्व अपराध करशो क्षमा दासना,
सत्य विश्वास आधार मारे;
नमि नमी नित्य प्रभु प्रार्थना हुं करूं,
चित्तमां प्रेम लावी स्विकारो,
सिद्धि आपो सदा शुद्ध उद्योगमां,
विघ्न आपत्ति सर्वे निवारो. ७
दासना दोष पर रोष नव लावशो,
भक्तनी सर्व छे लाज तुंने,
कामना मन तणी पूर्ण करिने सदा,

शरण राखो महाराज मुंने;
नित्य साष्टांग नमि नाथ तमने कहुं,
राखि संपूर्ण प्रभु प्रेमभक्ति,
चार पुरुषार्थ संपूर्ण हुं भोगवी,
पामु तारी प्रभू समिपमुक्ति.

छंद भूजंगी.

महाराज आनंददाता दयाळ,
दयादृष्टि छे आपनी सर्व काळ;
क्षमा नाथ सर्वे करो पापकर्म,
सदा आपशो नीतिना शुद्ध धर्म. १
सदा ऊपकारो तमारा जणाय,
अमो जीवने नित्य संतोष थाय;
भरुसो तमारो खरो छे अमारे,
तमारा विना भक्तने कोण तारे. २
मनोर्थो अमे मागिये प्रार्थनामां,
तमे नाथ जाणो किया योग्य तेमां;
कृपानाथ छो सर्व बाते समर्थ,
करो पूर्ण स्वामी रुडा सर्व अर्थ. ३

गायन.

पद.

तत् सत् ब्रह्मपद, प्रणमुं हुं नित्य प्रत,
पूर्ण करो अर्थ सत, करुणा करी कृपाळ;
अखिल ब्रह्मांड विषे, प्रभुता तमारी दिसे,
वर्णन न पूर्ण थशे, अल्पमति छुं हुं बाळ. तत्सत्०
अपराध छे अगाध, मुक्ति केम थाशे नाथ,
क्षमा मागुं मात तात, दीनजनप्रतिपाळ;
चित्त शान्ति आपो आप, सुणी दासनो विलाप,
उपकार छे अमाप, स्मरुं ते हुं सर्व काळ. तत् सत्० १

पद.

अपराध क्षमा करो मारो, हुं दास तमारो अपराध०
अनंत कोटि ब्रह्मांड रचीने, सत्ता थकी विस्तारो;
सर्व स्थळे करुणाओ देखुं, मानुं बहु उपकारो,
निराधारना आधारो. १ अपराध०
सद्धर्म नीतिए विचरवा, आप्यो मनुष देह सारो;
दयाघना दयादृष्टि करीने, ज्ञान विवेक वधारो,
कदी चित्तथी न विसारो. २ अपराध०

हुं अपराध अगाध करुंछुं, संकल्प दुष्ट विचारो;
निग्रह शक्ति कृपाकरी आपो, मंद मतिने सुधारो,
प्रबळ छे मनना विकारो. ३ अपराध०

श्रवण करी विनति प्रभु मारी, आशिर्वचन उच्चारो;
दीनदयाळ कृपा करी मारां, किल्बिष सर्व निवारो,
प्रभु विना एके न आरो. ४ अपराध०

स्वयंभू जगकर्त्ता तमेछो, जड तुल्य नथी आकारो;
वेदशास्त्र पुराणो प्रमाणे, सत्य कहे सूत्रकारो,
प्रभु सृष्ट वस्तुथी न्यारो. ५ अपराध०

अवगुण सामुं कदी नव जुवो, दुःख दारिद्र बिदारो;
संकट समये सहाय करीने, सन्निध आवी पधारो,
लज्जा प्रभु मारी वधारो. ६ अपराध०

तर्क करी ऋषि मुनियो विराम्या, पाम्या तमारा न पारो;
अल्प जीव हुं स्तुति शुं गाउं, भवसिंधुथी उतारो,
सफल करी जन्म अमारो. ७ अपराध०

हे ईश्वर जगदीश्वर स्वामी, शक्ति सबल बहु धारो;
शरण थई चरणे हुं वंदुं, दीन जाणी उद्धारो,
एज छे धर्म तमारो. ८ अपराध०

पद.

नियंता नाथरे तने नमि नमि करिये प्रणाम.

प्रभुता तारी त्रिभुवनमां व्यापी,
विभु तारो अमने सत्य विराम. १ नियंता नाथरे०

विश्व तणो उद्भव जे थकी छे,
जेमां सर्व वस्तु पामे परिणाम. २ नियंता नाथरे०

जीवप्रतिपालन नित्य करो छो,
प्रभु सच्चिद्घन अंतर्याम. ३ नियंता नाथरे०

ए शुभ गुण उत्तम महिमानी,
स्तुति करे ऋग् यजु अथर्व साम. ४ नियंता नाथरे०

दुरित कृति नव लक्षमां लेशो,
धारो तमे करुणासागर नाम. ५ नियंता नाथरे०

शरणागत सेवक जन तारा,
तारी खरी चित्तमां राखिये हाम. ६ नियंता नाथरे०

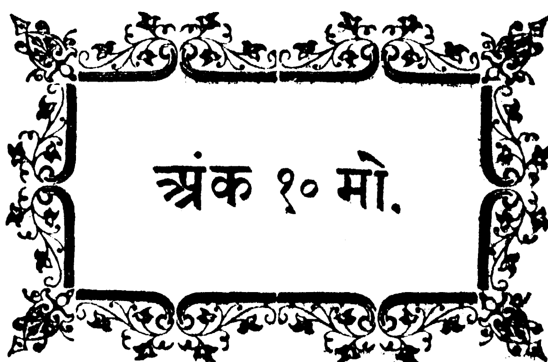
श्रवण करी प्रणिपत अमारी,
प्रभु परिपूर्ण करो शुभ काम. ७ नियंता नाथरे०

क्षमा करी अपराध अमारा,
आपो प्रभु सन्निध मंगल धाम. ८ नियंता नाथरे०

आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगराया जय जय जगराया,
अति अद्भुत अकलितछे(२)प्रभु तारी माया १ जयदेव०
सकल वस्तुना नाथ छो सत्ये स्रष्टा (२)
जिव तणि सर्व कर्त्तीना(२)छो निश्चय द्रष्टा २ जयदेव०
मुज जिवतर छे नाथ हाथ बधुं तारे, (२)
तुजविण कोइ नथी प्रभु(२)अन्य शरण मारे ३ जयदेव०
करजोडी परमेश पाय तने लागुं, (२)
तुज सन्निध आवी प्रभु(२)पाप क्षमा मागुं ४ जयदेव०
दया धर्मनुं मूल ए निश्चय मानुं, (२)
सदा सुधर्माचरणे (२) रहि सत्ये चालुं ५ जयदेव०
ए सन्मति महाराज मुज दिनने आपो, (२)
शुभ कीर्तन करि प्रभुनां(२)जपुं मंगल जापो ६ जयदेव०
दिनजनना प्रतिपाल दुःख सकल हरशो, (२)
करूणाकर करूणा करि(२)कर मारो धरशो ७ जयदेव०
करि प्रभुने हुं प्रणाम ध्यान धरुं चित्ते,(२)
मंगलकार्य करावो(२)मुज हस्ते नित्ये ८ जयदेव०




अंक १० मो.

छंद भुजंगी.

नमुं हुं परब्रह्म सच्चित्स्वरूप,
नमुं हुं सदा साक्षि आनंदरूप;
नमुं हुं प्रभू प्राणदाता दयाळ,
नमुं हुं तने सर्वदा सर्व काळ. १
शरीरादिना धर्मने आप जाणो,
नियंता तमे सर्वसाक्षी प्रमाणो;
महत्तत्व चिद्रूप छो विश्वकर्त्ता,
नमुं हुं नमुं हुं नमुं सृष्टिभर्त्ता. २
सहू इंद्रियोना गुणोने जुवो छो,
अधिष्ठाननुं ज्ञान बुद्धीथि द्यो छो;
तमे एक अध्यक्ष छो विश्वनाथ,
अती नम्र भावे नमुं जोडि हाथ. ३
सुषुप्ती समे इंद्रियो लीन थाय,
तमे तेज काळे करो छो सहाय;
सहू ठाम ठामे कृपा देखु तारी,
पुरा गूण गावा नथी शक्ति मारी. ४
जगत्सृष्टिमां सर्व सत्ता तमारी,
कृती सर्व देखुं हु आश्चर्यकारी;

अमे पामरो प्राणियो रे विकारी,
स्तुती शुं करे मंद बुद्धी अमारी. ५
रवींदू ग्रहोना तमे छोज कर्त्ता,
महत्तत्वने आप पोतेज धर्त्ता;
अती आदरे मानवी तारि शिक्षा,
नहीं मानशे पामशे दंड दीक्षा. ६
श्रुती वेदथी कोइ पाम्या न पार,
महीमा तमारो प्रभू छे अपार;
मती मंद शुं गूण गाउं तमारा,
करो हे कृपालू क्षमा दोष मारा. ७
गुरू छो प्रभू छो तमे स्वामि मारा,
स्मरूं हुं सदा ऊपकारो तमारा;
तमे सर्वविद्यासुबुद्धीप्रदाता,
तमे छो प्रभू सर्वना सत्य त्राता. ८
अती स्वल्प आ प्रार्थना छे अमारी,
कृपाथी तमे नाथ लेजो स्विकारी;
प्रभू प्रेमथी भक्तिनुं ज्ञान आपो,
दयादृष्टिथी दासनुं दुःख कापो. ९

हे षडैश्वर्यगुणसंपन्न भगवान! हुं सानंदांतःकरणथी तारी स्तुति करूंछुं; तारी अपार दयाना गुणानुवाद गाउंछुं. तुं मारुं प्रतिपालन करनार तथा सकळ सुखनो आपनारछुं. तुं मने सन्मार्ग बतावनार, भयसंकटथी बचावनार, तथा परलोकमां मारा आत्मानुं कल्याण करनार छुं. तारी सत्ताथी सूर्य प्रकाश पामेछे, तारी सत्ताथी चंद्रमा शीतळताथी प्राणियोनां शरीर तथा मनने शान्ति आपेछे; तारा नियम प्रमाणे असंख्य तारा तथा ग्रहगणो आकाशमां प्रकाशी रह्या छे. आ भूमंडळ जोतां पृथ्वी अति सुंदर वनस्पति, औषधि, अन्न, फळफळादि सुखकारक वस्तुओथी भरपूरछे; ए सर्व तें अमारा सुखने माटे सरजावेलां छे; तुं महा समर्थ प्रभु आ भूगोळ तथा बीजां अनेक ब्रह्मांडो धारण करी रह्योछे, तुं मने अन्न वस्त्र आपी मारुं पालणपोषण करेछे, सुख भोगववाने

---

१ भगवान एवुं परमेश्वरने विशेषण आप्युंछे "भग" एटले गुण, षट् (छ) गुण ईश्वरमां रहेला छे माटे "षडैश्वर्य गुणसंपन्न" एवुं विशेषण भगवाननुं छे. छ गुणनां नाम ॥ [१]ऐश्वर्यस्य समग्रस्य [२]धर्मस्य [३]यशसः [४]श्रियः। [५]वैराग्यस्याथ [६]मोक्षस्य षण्णां भगइतीरणा ॥ ए छ गुण भगवान शब्दनी व्याख्या विष्णुसहस्र नामना भाष्यमां श्रीमत् शंकराचार्ये करी छे. अथवा बीजी भग शब्दनी व्याख्या पुराणमां करी छे ते एछे के. [१]उत्पत्तिः [२]प्रलयंचैव [३]भूतानामा [४]गतिंगतिं [५]वेत्तिविद्या [६]मविद्यां चसवाच्यो भगवा निति:—

अनेक प्रकारना पदार्थो आपेछे. प्रत्येक श्वास लेती वेळा तारा अनुग्रह तथा दयानो मने अनुभव थाय छे, ज्यां ज्यां दृष्टि करुंछुं त्यां त्यां तारी दया देखाय छे, प्रतिक्षणे तारुं सारापणुं तथा दयाळुपणुं जोई सानंदाश्चर्य पामुंछुं.

जगतनी रचना तथा तेनी नियमपूर्वक योजना तारा उपकारनुं स्मरण करावे छे तथा उत्साहपूर्वक तारी स्तुति करावे छे. हे विश्वंभर विश्वनाथ! तुं सर्व चैतन्योनो चैतन्य छे; तुं मारुं संरक्षण करे छे; मारुं सर्व उपजीवन तारे हाथ छे. हुं क्षुधातुर थाउं छुं त्यारे तुं मने विश्रांति आपे छे, विपत्ति तथा दुःख मारे माथे पडे छे त्यारे मारा नेत्रमां आंसु भरेलां जोई जेम पिता पुत्रस्नेहथी पोताना बाळकोनुं आश्वासन करेछे ते प्रमाणे तुं मारा नेत्रनां आंसु तारा दयाळु हाथथी लोहीने मारा मननुं समाधान करे छे; ज्यारे कोई वेळा निराश थाउंछुं त्यारे तुं मने आशा तथा धैर्य आपे छे; आ संसारना लोक स्वार्थ अथवा द्वेषथी मारो त्याग करे छे त्यारे तुं मारी पासे आवीने मने सहाय थई मारा चित्तने आनंद आप छे. मारी वृत्ति पापकर्म करवानी थाय छे त्यारे तुं मारा मनने चेतावे छे के आ कुकर्म न करवुं. आ तारी केटली बधी

दया छे एनो हुं विचार करूंछु तो तारा उपकार कही बताववानी मारामां कांइ पण शक्ति नथी. हुं किया शब्दोथी ए उपकार कही बतावुं? हुं तने भुली जाउंछुं अने तने खोळतो नथी तोपण तुं मारी संभाल लेवानुं भुली जतो नथी. हुं दोष भरेलो छुं तथापि तुं तारी कृपाछाया नीचे मने राखे छे; अने जेमां मारूं सारूं तथा कल्याण थाय तेज तुं करे छे; हे दयाल! तारी दयानुं कोण वर्णन करी सके? तारी मारा उपर अपार दया तथा अपरिमेय सुतवात्सल्यता छे. तारा उपकारस्मरणपूर्वक हुं तने साष्टांग प्रणाम करूंछुं.

हे दयासागर जगदीश्वर! आ भूगोलना सर्व देशमां लोकोने तारा शुद्ध सत्य अने करूणामय स्वरूपनुं ज्ञान प्राप्त थाओ; पाखंडी, ढोंगी, खोटा, अने नास्तिक पंथोना मत नाश पामो;अने सत्य धर्मना सूर्यनो उदय थईने सर्व कुटुंब, सर्व देशीजन, तारी शुद्ध उपासना करी तारा मंगल नामोच्चारण पूर्वक तारी प्रार्थना करो अने तारो प्रताप, तारो महिमा जगतमां विस्तार पामो. हे भगवन्! (तव जयोस्तु जयोस्तु जयोस्तु)

तारो जयहो जयहो जयहो.

दोहरा.

सत्ताथी जे व्याप्त छे, जेथी थाय प्रकाश;
सृष्ट वस्तुथी पारजे, स्वायंभू अविनाश. १
एवा श्रेष्ठ महेशने, प्रणमुं वारंवार;
दीन दास जाणी सदा, कृपा करो विस्तार. २

उपजाति छंद.

जगत्बधुं जे बळथी प्रकासे, जेना प्रतापे स्थितिमांज भासे;
कृपा दयाओ जगमां जणाय, जेनी कळाओ न कदी कळाय३
एवा परात्मा रहि साक्षि रूप, जुवे जगत्नी रचना अनूप;
नमुं नमुं ते प्रभु आदि देव, एकाग्र चित्ते करु नित्य सेव४
अग्रे तमे छो वळि मध्यमां छो, प्रभू तमे अंत विषे रह्योछो;
तमे किधी छे रचनाज भारे, सृष्टी बधी हाथ प्रभू तमारे५

उपेंद्रवज्रा छंद.

ऋषी मुनीओ नहि कोइ जाणे, स्वरूप जेनुं नहि को प्रमाणे;
कळा जिवोथी न कदीं कळाय, प्रभूमहीमा सघळे जणाय६
व्रतस्थ जे साधु जनो महान, करे प्रभूनुं निश दीन गान;
महा मुनी मंगल मार्ग पामे, महा प्रभूना पदमां विरामे. ७

इन्द्रवज्रा छंद.

हे विश्वना देव दयानिधान, आपो मने सद्गतिनुं ज्ञान;
उत्कृष्ट ए अर्चननुं विधान, एकाग्र चित्ते धरु तारु ध्यान.८

मंदाक्रांता छंद.

विश्वाधीशा विनयथि नमुं नित्य चर्णे तमारे,
शर्णे राखो तुजविण नथी अन्य आधार मारे;
भक्तिद्वारे प्रभुपद मळे एज विश्वास मारे,
सर्वात्मारे विपति समये आवजो शीघ्र वारे. १
कृत्ये सामुं प्रभु नव जुवो दोष अत्यंत थाय,
देवा तारो द्विज जन गणी नित्य रे'जो सहाय;
अंतर्यामी अकलित कळाओ कदी ना कळाय,
अल्पज्ञोथी प्रभु स्वयम करी स्तूति तारी कराय. २
आ संसारे भ्रमित जिवनी भक्तिथी मुक्ति थाशे,
सर्वे तेनां त्रिविधि जनितो दुःख संताप जाशे;
सत्कर्मोने अनुसरणथी सत्य भक्ती गणाशे,
सत्ये तारा अनुग्रह थकी विश्वसिंधू तराशे. ३
अज्ञाने में अगणित चुको जे किधी ते शमावो,
ऐहीकामुष्मिक सुख थवा शुद्ध क्रीया बतावो;

पूर्णात्मारे प्रणत जनने दीन जाणी निभावो,
आ संसारे जनहित तणां कार्य रूडां करावो. ४
सत्ता तारी जड चर विशे पूर्णताथी प्रमाणुं,
स्त्रष्टा स्वामी सगुण तमने सर्वथी श्रेष्ठ मानुं;
अंतःशुद्धी विण बधि वृथा बाह्य क्रीया हु जाणुं,
सर्वोत्कृष्टा शुभफलप्रदा प्रेमभक्ती वखाणुं. ५
विद्यादाता अविहित क्रिया थी सदा दूर राखो,
सद्धर्मोनी सदय चितथी सन्मती नित्य दाखो;
दोषो मारा प्रभु नव लही एज विश्वास आखो,
अज्ञानोना अति दृढ तमे पाशने कापि नांखो. ६
सर्वाध्यक्षा सकल जगमां शक्ति तारी अगाध,
साक्षी सर्वान्तरगत तमे विश्वव्यापी अजात;
प्राणीओनुं पुषण करता छो तमे मात तात,
साष्टांगे हुं अति विनयथी वंदु विश्वाधिनाथ. ७
प्रातःकाले प्रभु करु तने नित्य हुं वंदनाओ,
सत्क्रीयाओ सफलित थवा मागुछुं वांछनाओ;
सायंकाळे प्रणमि करु हुं प्रेमथी प्रार्थनाओ,
मागुं नित्ये शयन समये पूर्ण तारी कृपाओ. ८
माया तारी अतिगहन छे को थकी ना पमाय,

निश्चे तारा अनुप पदनुं माप कोथी न थाय;
शक्ती तारी त्रिभुवन विशे पूर्णताथी जणाय,
नित्ये तारी परम करूणाथी जिवोथी जिवाय. ९

सप्रेमांतःकरणथि करूं मानसी अर्चनाओ,
चर्णे तारे नमन करिने याचुछुं याचनाओ;
श्रद्धा भक्ती थकि तुज पदे राखु हुं भावनाओ,
मागुं नित्ये मन वचनथी सर्व पापक्षमाओ. १०

सत्तानी जो करु हु तुलना तुच्छ हुं प्राणि भासुं,
तारी देवा अतिशय दयाथीज विश्वे निवासुं;
सृष्टी केरा सबल नियमो निरखि चित्ते उलासुं,
अंतर्यागे यजन करिने प्रेमभावे उपासुं. ११

वंदुं विश्वाधिपति तमने विघ्न सर्वे निवारो,
बुद्धीदाता सतत अमने सूचवो सद्विचारो;
भक्तीभावे विनति करु ते लक्षमां सर्व धारो,
विश्वोद्धारा विभु करि कृपा विश्वसिंधूथि तारो. १२

छंद वंशस्थ.

नमी नमी नाथ दयानिधी तने,
प्रणाम सर्वे करिये सदा अमे;

दया करी दुःख बधां निवारशो,
प्रसन्नताथी भवसिंधु तारशो. १
विनंति विश्वेश चित्ते विचारशो,
घटीत जाणो प्रभु ते स्विकारशो;
सदा सुनीती सुमती बतावशो,
कृपा करी पाप थकी बचावशो. २

गायन.

पद.

मंगल समय आज, स्मरीने जगाधिराज,
मळी भक्तनो समाज, स्तुतियो तमारी गाय;
जगत्तंत्र विश्वनाथ, सघळो तमारे हाथ,
शक्ति आपनी अगाध, सहु वस्तुमां जणाय.मंगल समय०
सत्कार्यमां सदाय, करशो तमे सहाय,
हरशो बधा अपाय, करूणाथी कार्य थाय;
प्रभुनुं प्रभुत्व जाणी, प्रेमभक्तिभाव आणी,
अमे सर्व अल्प प्राणी,प्रणमीए लागी पाय.१मंगल समय०

पद.

प्रभुता तमारी छे मोटी, प्रभु परमात्मारे प्रभुता०

जगरचना अति गहन कीधीछे,
कृति नथी किंचित् खोटी १ प्रभुता०
जड चैतन्य विशे प्रभु भासे,
अद्भुत तारी हथोटी २ प्रभुता०
आ संसारे जन्म आपीने,
जुवो अमारी कसोटी ३ प्रभुता०
कृपाघना करुणा करशो तो,
नव लागे दुःख सोटी. ४ प्रभुता०
तुज पद पंकजमांज अमारी,
वृत्ति निरंतर च्होटी. ५ प्रभुता०
करद्वय जोडी प्रभु तुज चरणे,
करिये प्रणामो कोटि. ६
प्रभुता तमारी छे मोटी,
प्रभु परमात्मारे प्रभुता०

पद.

परब्रह्म प्रणाम करूं तमने त्रिविधी परिताप शमावो सदा.पर०
सद्गुणथी भरपूर प्रभु सर्वेश्वर सत्य मुक्तिप्रदा,
अवगुण दोष असंख्य करूं करुणा विण नाथ गती नकदा१.
परब्रह्म प्रणाम करूं०

पद.

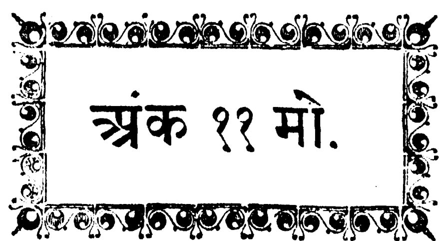
तारोरे दयाल मने दीन गणी तारोरे. तारोरे०
शरण आवीने हुं, करूंछुं पोकारोरे दयाल०
दूर त्वरित करो दुर्मति प्रभु बालक छुं अज्ञानरे,
बालक बालक बालकरे; क्षण क्षण क्षण मानु
प्रभु उपकारोरे १ दयाल०

आरति.

जयदेव जयदेव जयजयजयकारी जयजयजयकारी,
जगदुत्पादक पालक(२)शक्ति सबल धारी १ जयदेव०
दृढतर छे विश्वास प्रभुपदमां अमने(२)
आशय भक्त जनोनो(२)सर्व विदित तमने २ जयदेव०
मंगलकारि महेश मंगलगुण आपो(२)
आज्ञांकित सेवकनां(२)संहरशो पापो ३ जयदेव०
जगतारक जगनाथ जगदीश्वर दाता(२)
संकट दुख भयहारक(२)सर्वजनत्राता ४ जयदेव०
सगुणरूप साक्षात् साष्टांगे नमिये(२)
वाक्कायामनथीप्रभु(२)भक्ति विशे रमिये ५ जयदेव०
प्राणपति परमेश प्राणिपतने सुणशो(२)

अनुग्रहथकी अमारा(२)अवगुण नव गणशो ६ जयदेव०
पूर्ण कृपाथकि नाथ निर्मल मन करशो(२)
प्रेमल भक्ति तमारी(२)हृदय विशे भरशो ७ जयदेव०
अति अद्भूत अचिंत्य छे प्रभुनी शक्ति(२)
आलोके सुख आपो(२)परलोके मुक्ति ८ जयदेव०




अंक ११ मो.

ललित छंद. ४

प्रणमु हुं पर--ब्रह्म देवने, सुमति आपशो, सर्वदा मने;
प्रभु धरो षडै--श्वर्य लक्षणो, भवपती प्रभू,प्रार्थना सुणो. १
परम ब्रह्मनुं, गान गाउछुं, अति कृतार्थ हुं, नाथ थाउछुं;
दिन तणां करो,नित्य पोषणो,भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. २
अनुग्रहो करो--छो तमे सदा,नव वळी सके,पाडतो कदा;
प्रभु करो सदा, भक्तरक्षणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ३
अनिति दुष्कृती,में किधी अति, शरणछुं मने,द्यो रुडी मति;
दुर करो दया--नाथ दुर्गुणो,भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ४
भ्रमित छुं प्रभू,भ्रांतिसागरे, तुजविना न को,साह्यता करे;
सबल सेतु छे,तुं दया तणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ५
प्रभुप्रसादथी, पूर्णता मळे, प्रभुप्रसादथी, दीनता टळे;
प्रभुस्वभावमां, छे दया गुणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ६
विपति दुःख सं--कष्टने समे,सहनशीलता, आपशो तमे;
दिनजनो तणां, दुःखने हणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ७
प्रभु कृपा द्रुमो-नीलता निचे, सुखनिवास द्यो, रे दयानिधे;
नव जुवो तमे, जीवदूषणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ८
सुहृद बंधुनी, सन्मती करो, दुरजनो तणी, दुर्मती हरो;
सुचवशो मने, सर्व सद्गुणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. ९

शुभ पदाब्ज हुं, नित्य देवना, प्रणमि अर्पुंछुं, पुष्प प्रेमना;
सकल शांतिनी, आशिषो भणो, भवपती प्रभू, प्रार्थना सुणो. १०

हे जगत्कर्त्ता कृपाळु पिता! आ समये अमे अमारा हृदयमां तारूं मंगळ ध्यान धरीने तने प्रेम सहित प्रणाम करिये छिये. आ संसारमां अमने जन्म आपवानो तारो केवो रूडो अने गंभीर हेतु छे, अने अमारां कर्तव्य कर्म संबंधी उत्तर आपवानुं काम केटलुं भारेछे, तेनो अमे विचार करिये छिये त्यारे अमे केवळ लज्जायमान तथा भयभीत थइये छीए कारण के अमारे अहीं आवीने जे करवुं जोइये ते कांइ कर्युं नथी; तारा प्रत्ये अमारो शो धर्म छे, अमारा मित्र तथा मनुष्य भाइओ प्रत्ये अमारो शो धर्म, तथा अमारे पोते अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे शी रीते वर्तवुं जोइये, ते सघळा धर्म अमे जाणिये छिये, ते छतां ते धर्म जेवा जोइये तेवा बजावी सक्या नथी; सारा सार विचार करवाने तें अमने विवेकबुद्धि आपी छे तथापि तेनी प्रेरणा प्रमाणे चालवाने अमे पूर्ण लक्ष आप्यो नथी. ए अमारो केटलो भारे अपराधछे. हे मंगलमय प्रभु! अमारा शरीरनी तथा मननी

नबळाई तुं जाणेछे. अमारां कुकृत्य सामुं न जोतां तारा दयाळु स्वभावथी अमारा उपर दयादृष्टि करीने अमारा सघळा अपराध क्षमा कर; अने अमारा आत्मानुं कल्याण थाय एवो मंगल मार्ग अमने बताव. अमे पतित छिये तथापि तुं अमारूं रक्षण करे छे, ए तारो अमारा उपर मोटो उपकार छे. हे प्राणदाता प्राण रक्षक! अमे तारे शरण छिये. तें अमने जीव आप्यो छे. पितानी पुत्र उपर प्रीति होय छे. ते प्रमाणे तारा दीन रंक बाळक उपर प्रेम राख. परिणामे सर्व प्राणियो तारा मंगळ धामे आववाना छे.अमारा देह तथा आत्मानो संबंध छुटे त्यारे उजळे मोहोडे तारा पवित्र धामे आवी सकाय एवी वर्तणुके चालिये, तारी आज्ञा पाळिये अने तने विसरी न जइये, एवी सदाकाळ अमने प्रेरणा कर.सद्गुणी थवानो अमे श्रम तथा उद्योग करिये तेमां तुं सहाय था. तने सदा काळ सन्निध जाणीने अमे सद्धर्मे चालिये एवुं अमने सामर्थ्य आप. आ अमारी मागणी, हे जगदीश्वर! तुं कृपा करीने अंगीकार कर.

हे मंगळमय महाधिराज महासमर्थ सर्वव्यापक सच्चिदानंद परमब्रह्म परमेश्वर! अमे तारे पवित्र चरणे प्रेम

सहित अभिवंदन करिये छिये. आ जगत ताराथी उत्पन्न थयुं छे, अने तुं जीवोनुं रक्षण करे छे. अमे तने जोई सकता नथी पण तुं अमने जुवे छे. आ जगतमां तारा सरजेला सर्व पदार्थोमां तारी योजना तथा शरीर पिंजरमां गोठवेली घटित वस्तुओ तथा तेमां मुकेली यांत्रिक युक्ति तथा आकाशमां ग्रहमंडलनी शोभा तथा तेओना भ्रमण तथा अस्तोदयना सुंदर नियमो निरखवाथी तारी अपार शक्ति अपार डहापण अने अपार करूणा छे एम अमने समजाय छे. तुं जाणे आ ब्रह्मांड रूपी पडदानी पाछल रहीने करूणा भरेली विशाळ दृष्टिथी तारी रचेली विश्वरचनाने जुवे छे. हे दयानिधि! अमे निर्मल मनथी तारूं ध्यान धरी तारो महिमा गाइये छिये. तारी साची अने प्रेम सहित भक्ति ए अमो जीवोनो धर्म छे; परंतु हे दिव्य पिता अमे अमारा धर्मथी केटला बधा आडे रस्ते चढ्या छिये तेनो विचार करिये छिये त्यारे अमे केम बचीशुं, अमारी वले शी थशे, एवा विचारथी भयभीत थइये छिये. जाणे अजाणे थयेला अनेक पापनी क्षमा मागी हवे पछी अपराध नहीं करवानुं वचन आपीए छिये. अमने रूडो मार्ग देखाड. तारी दया विना अमने पांशरो पंथ

जडवानो नथी; माटे भुला पडेला तारा रंक बाळकोनी दीनवाणी सांभळी अमने पवित्र अने रूडो मार्ग बताव. तथास्तु.

स्त्रग्धरा छंद.

शांती रूपे विराजो शुभवरद विभू स्वामि विश्वाधिभूप,
सत्ता सर्वत्र धारो सकल सुख करो सर्वना साक्षि रूप;
भक्तोनुं श्रेय कर्त्ता भवभयहरता भक्तिमार्गे जणाओ,
एवा कारूण्यमूर्ती प्रभुपद नमिने नित्य मागुं कृपाओ. १

शार्दूलविक्रीडित.

वंदुं हुं परमेश व्याप्त विभुने वंदुं जगाधीशने,
वंदुं सर्वशरण्य सत्यपदने वंदुं सदा ईशने;
वंदुं देव दयानिधी चिदघना वंदुं हु विश्वेशने,
वंदुं हुं परमात्म पूर्ण प्रभुने वंदुं परब्रह्मने. १
जेनी सर्व ऋषी मुनी स्तुति करे स्तोत्रे महासुंदरे,
वेदोथी महिमा महान उचरी भक्तीपथे संचरे;
जेनुं ध्यान धरे निरंतर चिते योगी जनो जे बधा,
जेनो अंत अनंत पामि नसके ते ब्रह्म वंदुं सदा. २
जे इच्छा थकि भूमि पर्वत जलो तत्वो थयां दीपितां,
जेणे सूर्य शशी ग्रहादि भुवनो कीधां बहू शोभितां;

जे सत्ता थकि राशि चक्र भगणो भासे महामंडले,
ते विश्वेशतणी अचिंत्य गतिने जीवो कदी ना कळे. ३
जेणे विश्व विशे विचित्र कृतिथी वस्तू सृजावी बधी,
जेनी नित्य प्रते प्रजापर दिसे प्रीती दयाओ घणी;
जे छे सत्य समर्थ कार्य करवा कारुण्यमूर्ती सदा,
ते विश्वंभर सर्व पूर्ण करशो भक्तो तणी कामना. ४
जेनी शक्ति समस्त विश्व पसरी जेमां दया छे भरी,
जेमांथी अद्भूत सृष्टि निसरी जेथी स्थितीमां रही;
जेनो पार अपार को नव कळे सत्ताथि व्यापे सदा,
एवा ब्रह्म समर्थ सत्य प्रभुने नित्ये करूं वंदना. ५
विश्वाधीश वरिष्ठ नित्य तमने हर्षे करीने नमुं,
अंतर्यामि समर्थ नाथ तमथी शुं गुप्त राखी सकुं;
हुं अज्ञान प्रभू महान महिमा विस्तारथी शुं कहुं,
वाणीनोज विलास मात्र करिने विश्वास तारो धरूं. ६
तारो नाथ अनाथ दीन मुजने दृष्टी दयानी करो,
प्रेमेथी प्रतिपालना करि प्रभू संताप सर्वे हरो;
आपोरे वरदान मान मुजने सामीप्यमुक्ती तणुं,
सर्वज्ञ प्रभु शक्तिमान तमने शुं हुं कहुं रे घणुं. ७
इत्यादी सुख प्राप्तिनी प्रभु मती जेवी रहेछे घणी,

तेवी वृत्ति सदा निरंतर हजो तारीज भक्ती तणी;
तारूं ध्यान चिते निरंतर वसे एवी मती आपशो,
शर्णे राखि सदा दयानिधि तमे संकष्ट सौ कापशो. ८
पूर्णात्मा परमेश ब्रह्म विभु जे सर्वत्र व्यापी रह्या,
जेना सात्विक गूण मुख्य करिने साधू जनोए कह्या;
एवा स्वामि समर्थ सत्य तमने पाये हु लागी सदा,
मागुंछुं शुभ धर्म कर्म करवा सद्बुद्धि सद्वासना. ९
ब्रह्मांडाधिपती नमुं विनयथी विद्यापती भूपति,
भक्ती ज्ञान विवेक शांति सुमती आपी करो सद्गति;
राखुंछुं विशवास आश्रय पुरो पूरो सदर्थो सदा,
दीनानाथ दया करी दुर करो दारिद्र्य दुःखापदा. १०
स्वामी सर्व समर्थ सत्य सवळी संपूर्ण सत्ता धरो,
मिथ्या मानुषियत्न जाय सघळुं ज्यारे कृपा ना करो;
माटे हुं दिन दास आश धरिने मागुं तमारी कृपा,
कार्यो श्रेष्ठ विशे सहाय थइने संतोष आपो सदा. ११
वांधीछे अवधी त्यहां लागि मती जीवो तणी चालशे,
तेथी पार गये घणो भ्रम थशे भ्रांती वहू भासशे;
माटे ते अवधीज मध्य रहिने धर्मध्वजा धारवी,
शिक्षाओ प्रभु तारि मान्य करिने नीती न वीसारवी. १२

जोडीने प्रभु हाथ नाथ तमने नित्ये करूं प्रार्थना,
प्रीती पूर्ण करी पुरीज करजो सर्वे रूडी कामना;
कृत्यो में नबळां किधांज सघळां संभाळि लेजो मने,
आव्योछुं शरणे कृपानिधि बधी लज्जा रहीछे तने. १३
सर्वात्मा प्रभु शर्णछुं नहि विजो आधार आश्रो धरूं,
प्रेमेथी तमने प्रणाम करिने नित्योपकारो स्मरूं;
लज्जा छे तुज हाथ नाथ चितमां दोषो न वीचारशो,
ऐह्यामुष्मिक सूख आपि अमने संसारथी तारशो. १४
सर्वात्मा सकलेश्वरा सुखकरा सर्वज्ञ सच्चिदघना,
सर्वांतर्गत सत्य नित्य विभुछो सन्मार्गबुद्धिप्रदा;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिप्रपालनगुणो धारो तमे सर्वदा,
साष्टांगे नमि नाथ नित्य तमने मागुं हु पापक्षमा. १५

उपेंद्रवज्रा छंद.

अपार लीला प्रभुछे तमारी,न चालशे त्यां गतितो अमारी;
तमे दयाळू अति ऊपकारी,स्थिती अमारी प्रभु ल्यो विचारी.१
विदीत छे सर्व अमारि वात, प्रसन्न रे'शो विभु विश्वनाथ;
मनोर्थ माग्या प्रभु प्रार्थनामां,स्विकारशो अर्थ घटीत तेमां.२
क्षमाकरी नाथ समस्त पापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो;

प्रभू अमारा नहि दोष जोशो, कृपा करी आशिष पूर्ण देशो. ३

गायन.

पद.

सगुण समर्थ सत्य, प्रभुने स्मरुं हुं नित्य,
आपो धर्म नीति व्रत, वंदुंछुं हुं वारवार;
निरंजन निराकार, नित्य शुद्ध निर्विकार,
शक्तिनो न पामुं पार, मानुं प्रभु उपकार.
सगुण समर्थ०
भवपति भगवान, तमे पूर्ण बळवान,
विश्वमां बिराजमान, विनति करो स्वीकार;
सुणी प्रार्थना त्वरित, मति द्यो मने पुनीत,
पावन करी पतित, करशो तमे उद्धार.
सगुण समर्थ० १

पद.

जय जगत्राता, जगतप्रख्याता, त्रिभुवनत्राता;
तुज शुभ गुण ऋषिमुनिजन गाता, सन्मतिदाता.
जय जगत्राता० १.
एक तमे अद्वितीय अजाता, अकल अबाधा;

कर्ता अद्भुत कृतिथी गणाता, विश्वविधाता.

जय जगत्राता० २

साक्षि सदा सच्चिद्घन ज्ञाता, शुभ गुण धाता;
नव कदि मन बुद्धिथी कळाता, दिनजननाथा.

जय जगत्राता० ३

ब्रह्म परात्पर, मुक्तिप्रदाता, प्रमुख मनाता;
प्रेम थकी प्रणमुं पितु माता, प्रभु साक्षाता.

जय जगत्राता० ४

पद.

जगदीशने शीश नमावुं, प्रभु मन भावुं जग०
में अवगुण अपार किधा जे, विगतथी शुं हुं गणावुं;
क्षमा प्रभु करुणा करी करशो, वधु कहीने शुं जणावुं,
कियुं अन्य शरण हुं लावुं. जगदीश० १
जेवी स्थितीमां अहि मने राखो, तेवी स्थितीथी निभावुं;
विधि निषेधनो नियमो मानुं, भक्तिनो भाव विभावुं,
तोज प्रभु मन भावुं. जगदीश० २
दीनदयाल स्वभाव तमारो, ए मन धैर्य धरावुं;
प्रभु शुभ चरणे प्रेमभक्तिनां, पुष्प सदैव वधावुं,

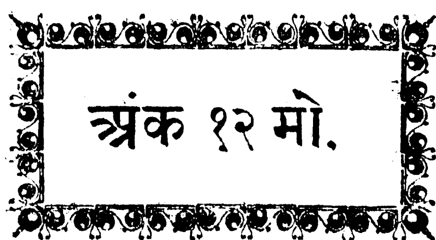
दुरित कर्म सर्व हठावुं. जगदीश० ३
शमदमादिकसाधनतीर्थे, स्नान करी शुद्ध थाउं;
विश्वपतिनुं स्मरण करीने, नीतिपथे नित्य जाउं,
प्रभुकृपामृतफळ खाउं. जगदीश० ४
वृत्ति स्वच्छ पवित्र राखीने, सर्व विकारो शमावुं;
ए शुभ शुद्ध मती मने आपो, मंगळ गुण हुं गाउं,
अंते प्रभुधामे आवुं. जगदीश० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय मुक्तिदाता जय मुक्तिदाता,
सर्वांतर्गत ज्ञाता(२)सृष्टितणा धाता १ जयदेव०
लीला तारि अपार अति अद्भुत भासे(२)
अतुल पराक्रम तारुं(२)नव वर्णन थाशे २ जयदेव०
अनुपमछे औदार्य उत्तम गति आपो(२)
विश्व विशे विश्वेश्वर(२)सद्धर्म स्थापो ३ जयदेव०
सर्वाधार समर्थ शुभ सन्मतिदाता(२)
अति करुणामय गुणथी(२)प्रभुछो प्रख्याता४ जयदेव०
अवगुण दोष अपार मनमां नव धरशो(२)
सुतवात्सल्य स्वभावे(२)संरक्षण करशो ५ जयदेव०

जगदाधीश दयाल द्यो चितने शांति(२)
करुणा कारि करशो प्रभु(२) पापतणी क्षांति ६ जयदेव०
सदाकाल सर्वेश सहुमें रहिये(२)
ए निर्मल मति आपो(२)विनति करी कहिये ७ जयदेव०
प्रेमभक्तिथी नाथ नित्य करिये सेवा (२)
पावन करि सेवकने(२)द्यो सद्गति देवा ८ जयदेव०




अंक १२ मो.

अहो विश्वनियंता नाथरे, नमुं नमुं;
तमने जोडीने बेउ हाथरे, नमुं नमुं. १
सर्व प्राणीतणा मात तातरे, नमुं नमुं;
तमे जाणो अंतरनी वातरे, नमुं नमुं. २
परब्रह्म प्रभु परमेशरे, नमुं नमुं;
विश्वव्यापी विभु विश्वेशरे, नमुं नमुं. ३
सर्व सृष्टि तणा आधाररे, नमुं नमुं;
एक नित्य अखंड अपाररे, नमुं नमुं. ४
नमुं आद्य अनंत अविकाररे, नमुं नमुं;
नमुं विश्वपतिने वारं वाररे, नमुं नमुं. ५
तारी सत्ता सृष्टिमां जणायरे, नमुं नमुं;
कळा तारी कोथी न कळायरे, नमुं नमुं. ६
महा मुनिनी मति तो भमायरे, नमुं नमुं;
स्तुति तारी ते हुंथी क्यम थायरे, नमुं नमुं. ७
दीनबंधु छो तमे दयावंतरे, नमुं नमुं;
तमे रहो सदा क्षमावंतरे, नमुं नमुं. ८
तमे सच्चिद्घन अविनाशरे, नमुं नमुं;
पुरो भक्तनी सर्व रुडी आशरे, नमुं नमुं. ९
तमे दयासिंधु छो दयालरे, नमुं नमुं;

सदा सेवकनी ल्यो संभाळरे, नमुं नमुं. १०
तमे सात्विकगुणनिधानरे, नमुं नमुं;
करो नित्य कुशळ कल्याणरे, नमुं नमुं. ११
आवुं चरण समीप हुं बाळरे, नमुं नमुं;
प्रतिपाळन करो कृपाळरे, नमुं नमुं. १२
प्रेमभावथी प्रभुपाय लागुंरे, नमुं नमुं;
पापकर्मनी क्षमा नित्य मागुंरे, नमुं नमुं. १३
मागुं कृपा तमारी महाराजरे, नमुं नमुं;
राखो दास तणी तमे लाजरे, नमुं नमुं. १४
एक आश्रय धारूं तारो सत्यरे, नमुं नमुं;
नथी केवानी वधु अगत्यरे, नमुं नमुं. १५
दुष्ट दुरित सर्व कर्म कापोरे, नमुं नमुं;
नीति धर्म तमे मने आपोरे, नमुं नमुं. १६
उपकार करो छो अत्यंतरे, नमुं नमुं;
शरणे राखो मने भगवंतरे, नमुं नमुं. १७
सर्व कार्य करवा छो समर्थरे, नमुं नमुं;
कृपाविना न सरे कांइ अर्थरे, नमुं नमुं. १८
तमे सत्य सर्वज्ञ शक्तिमानरे, नमुं नमुं;
मने आपो अभय वरदानरे, नमुं नमुं. १९

जय जय जय जगतातरे, नमुं नमुं;
जय जय अचिंत्य अजातरे, नमुं नमुं. २०
नमुं नमुं हुं नमुं दिन नीशरे, नमुं नमुं;
कृति सामुं न जोशो जगदीशरे, नमुं नमुं. २१
मानुं तारो बहु उपकाररे, नमुं नमुं;
करो विनति तमे अंगिकाररे, नमुं नमुं. २२
करो वृत्ति विमल विश्वनाथरे, नमुं नमुं;
करो क्षमा महा अपराधरे, नमुं नमुं. २३
शिर साष्टांग करूं हुं प्रणामरे, नमुं नमुं;
कृपासिंधु पुरो शुभ कामरे, नमुं नमुं. २४

हे ज्ञानसिंधु हे दयासागरा, हे परम कृपाळु भगवान! अमे तारे शरणे आव्या छिये. तमने पगे लागी वरदान मागीए छीए के अमने सदाचार पाळवानी मति आपो. तमारी दयाथी अमने ज्ञान थयुं छे के साचाई, प्रमाणिकपणुं, न्याय दया क्षमादिक सुनीतिना गुणो अमारामां हशे तोज अमे तारी कृपा संपादन करवाने लायक थईशुं. अमारी खातरी थइ छे के कुकर्मो नही करीशुं. दुर्गुणो तजीशुं अने सदाचार पाळी तारी भक्ति दृढ श्र-

द्वाथी करीशुं तोज अमारुं कल्याण थशे, माटे सदाकाळ सद्गुणो अमे पाळिये, कोई साथे वैरभाव राखिये नहीं, विपत्ति तथा दुःखनी वेळा धीरज राखी तारो आश्रय मागिये, दोलत अधिकारादिकना अभिमानथी चढी ज-इये नहीं, सर्व मनुष्य भाइयो साथे सभ्यता, नम्रता, अने सलाह संपथी चालिये, दररोज तारी भक्ति तथा उपास-ना करीने तारी अमारा उपर दया कृपानो उपकार मानि-ये, गमे तेवुं संकट पडे पण तने अणगमतां काम करिये नहीं एवी रीते रूडी चाले चालवानुं अमने सामर्थ्य आप. हे करूणासागर! तारी अमारा उपर घणीज दया छे. कदि कोइ वखते अमने दुःख पडेछे पण तेनो जो अमे पूरो विचार करिये तो ए दुःख पडवामां पण तारी दया-नो संकेत होय छे. परम पिता! तुं केवो दयालु छे! तारो अमारा उपर दयाभाव छतां अमे तने भुली जइने अ-वळे रस्ते चालिये छिये. अमारां सत्कर्म घणांज थोडां छे, माटे तेनुं फळ मागवानो अमारो कांइ दावो नथी, अ-ने फळनी इच्छा राख्या विना सत्कर्मो करवां ए अमारो धर्मछे, तथापि अमे भुलीए छीए. अमारे तो एटलुंज बो-लवुं जोइये के अमे अपराधी छिये, अमे अपराधी छिये.

आ संसारमां अमारे सदाकाळ रहेवानुं नथी. अमारा भाविकाळनी अमने खबर नथी. मरण वेळा तारा विना अमारो कोई त्राता नथी. परलोकमां अमने सद्गति आपवानुं तारे पोतानेज हाथ छे. तुं सर्व शक्तिमानछुं. तारा प्रसादथी मधुरवायु वाय छे, तारा प्रसादथी समुद्रमां तरंगो उछळे छे, तारा प्रसादथी आ सर्व विश्व प्रकाशी रह्युं छे. तने पूज्य मानी तारी भक्ति करवी ए अमारो धर्म छे. तारे कशानी अपेक्षा नथी. अमारुं आधीनपणुं बतावी तारी प्रार्थना करवी ए गुण अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे अमारा आत्मामां स्वभाविक रीते तें मुकेलो छे; एवुं छतां अमे तारी प्रार्थना न करिये तो अमे ठमारा तथा धर्मभ्रष्ट कहेवाइये; माटे प्रेमपूर्वक तारी भक्ति तथा प्रार्थना करवानुं भुली जइये नहीं एवी अमारा अंतःकरणमां चेतवणी आपतो रहेजे.

हे महाप्रतापी कृपालु परमेश्वर! अमे साचा अने पवित्र अंतःकरणथी, तारुं ध्यान करी, श्रद्धा रूपी चंदन अने भक्ति रूपी अक्षत, तारे मंगलचरणे अर्पण करी तने प्रेमपुष्पनी माळा चढावी अमे अमारीप्रार्थना समाप्त करिये छिये. तुं प्रसन्न चित्तथी अमारुं संरक्षण कर.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

उपेंद्रवज्रा छंद.

परात्परा ब्रह्मपदे हु नित्ये, नमी विनंती करू एक चित्ते;
सुणो तमे प्रार्थन मंत्र जापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. १
विना प्रभू तुं नथि कोइ अन्य, विना प्रभू तुं नथि को शरण्य;
विना प्रभू कोण सुणे विलापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. २
जगत् क्रिया तूं थकि सर्व चाले, विना प्रभू शक्ति न पत्र हाले;
प्रकाश पाम्या प्रभुनाप्रतापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ३
दिसे तमारी सघळी लिलाओ, दिसे तमारी सघळी क्रियाओ,
दिसे तमारी करूणा अमापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ४
कृपाथकी मंगल कार्य थाय, कृपाथकी सर्व अरिष्ट जाय;
कृपाथकी जाय त्रिवीधि तापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ५
करूं तने अर्पण सर्व कर्म, निभावि ल्यो जाणि प्रभू स्वधर्म;
कृपा करी संकट सर्व कापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ६
दयाघना अंकित छुं तमारो, दयाथि दोषो सघळा निवारो;
शिरे अमारे वरहस्त थापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ७
सदा तने वंदन विश्वनाथ, अमे करीए प्रभु जोडि हाथ;
क्षमा करो नाथ समस्त पापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ८

शार्दूलविक्रीडित.

हे विश्वेश्वर हे जगत्त्रयगुरु सर्वज्ञ सच्चिद्घना,
कौटुंबी जन मित्र प्राणि सघळा जे आ जगत्मां रह्या;
आ देशे वसता विदेश फरता प्राणी समस्तो तणां,
पापो सर्व क्षमा करी प्रभु तमे संतोष आपो सदा. १

प्रभुपरपद मोटुं मोक्षकल्याणदाता,
ऋषि मुनि जन सर्वे चित्तथी नित्य गाता;
करगरि प्रभु मागुं कष्ट कापीज नांखो,
शरिरपतन वेळा पाळिने पास राखो. १

अखिलभवपतीनी प्रार्थना श्रेयकारी,
सकलदुरितहारी पुण्यकारीज सारी;
भणि भजन करूंछुं चित्तने शान्ति आपो,
चरण शरण राखी संहरो सर्व तापो. २

सेनिका छंद.

विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो, सर्वव्याप्त पूर्ण ब्रह्म सत्य छो;
प्रेम भक्तिथी नमुं परात्परा, शर्ण राखजो मने प्रभू वरा. १
सर्वकाल ध्यान तारु हुं धरूं, नित्य धर्म कार्यमां हु संचरूं;
साह्यता तमारि मागु चिद्घना, सिद्ध थाय वांछितार्थ कामना. २

नम्र भावथी विनंति हुं करूं, शीश प्राणनाथेन पदे धरूं;
विश्वपाल छो समर्थ रे तमे, अल्प दीन सर्व जीव तो अमे. ३
अर्पु सर्व कर्म मात तातने, तारशो तमे मने अनाथने;
धैर्यतो सदा दयाल आपशो, दासना समस्त दोष कापशो. ४
अल्प बुद्धि जीवनी विचारशो, सर्व विघ्न कष्टने निवारशो;
द्यो तमे मती रूडी दयाघना, पापकर्मनी प्रभू करो क्षमा. ५
निंद्य कर्म नित्य नाथ थायछे, न्यूनता दयानि ना जणायछे;
ए तमारू छे प्रभू प्रभुत्वरे, शुं स्तुती करूं हु ते महत्वरे. ६
सृष्टिकार्य हाथ सर्व नाथने, जाणि ल्यो तमे अमारि वातने;
हाथ जोडिने करूं हु वंदना, मानि ल्यो तमे अमारि अर्चना. ७
शान्ति सर्व विश्वमां सदा करो, भक्तनी विपत्ति आपदा हरो;
दीन दास जाणिने जगत्पति, आपशो कृपाथि नाथ सद्गति. ८

शालिनी छंद.

स्वामी सर्वात्मा प्रभू प्राणनाथ, सर्वे जीवोना तमे मात तात;
अंतर्यामी आप जाणो अमारां, जे जे कीधां कृत्य सारां नठारां. १
माफी आपो दुष्कृतीनी दयाल, दृष्टी राखो प्रेमनी सर्व काल;
अर्थी माग्या प्रार्थनामां अमे जे, स्वीकारी ल्यो जे प्रभूने गमे ते. २
प्रीतीभावे वंदिये जोडि हाथ, शांती आपो विश्वमां विश्वनाथ;
भक्ती आपो शुद्ध साचीतमारी, सत्कार्योमां वृत्तिराखो अमारी. ३

गायन.

पद.

नमुं नित्य विश्वपति, आपो मने शुद्धमति,
अगम्य तमारी कृति, कदि ना कळाय नाथ;
शरण तमारुं धरुं, बधु विनति शुं करुं,
विदित छे विश्वनाथ, तमने समस्त वात. नमुंनित्य०
विश्वमां करुं निवास, राखीने तमारी आश,
करशो नहीं निराश, विभु मात तात भ्रात;
पूज्यजाणी आपुंमन, तमने कृपानिधान,
करो मने नीतिमान, प्रणमुंछुं प्राणनाथ. १ नमुंनित्य०

पद.

विश्वनाथ तुं विना न कोइ साह्यकारी;
निर्मळ निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी,
सच्चिद्घन साक्षि सर्वसंकटभयहारी. १
विश्वनाथ तुं विना०
निंद्य कृत्यथी दयाळ ल्यो तमे उगारी,
भवपति भवसिंधु थकी द्यो मने उतारी. २
विश्वनाथ तुं विना०

सत्यदेव एक एम श्रुति वदे पुकारी,
सत्य धर्म आपि मने राखो सदाचारी. ३
विश्वनाथ तुं विना०

पद.

प्राणपति सुणो विनति अमारी,
विनति अमारी विज्ञप्ति अमारी प्राणपति०
मंदमतिथी प्रभु स्तुति शी थाय,
अकल गति छे गहन तमारी. प्राणपति० १
विदित तने अंतरनो आशय,
अतिशय शुं वदिये विस्तारी. प्राणपति० २
विपरीत कृतियो विभु नव जोवी,
करुणासागर छो उपकारी. प्राणपति० ३
मंगल कार्य करावो जगतमां,
जगदीश्वर द्यो भवथी उतारी. प्राणपति० ४

पद.

कृतिसामुं प्रभु कदि नव जुवो रे;
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० १
विषयमहोदधिमां हुं मग्न,

दयानिधि दया करी कर ग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० २
साष्टांगे तुज चरणे वंदी,
स्मरण करूं सदा प्रभुअनुग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० ३
परमात्मा प्रभु प्रणत जनोनां,
मनवांच्छित तमे परिपूर्ण करोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० ४

आरती.

जयदेव जयदेव जयसविता धाता जयसविता धाता,
सर्वोत्तमपददाता (२) प्रणतजनत्राता जयदेव० १
शांताकार शरण्य शिव शुभ गुणधारो(२)
भवमोहाब्धि थकी प्रभु(२) कर ग्रहिने तारो जयदेव० २
रविशशिवन्हिप्रकाश ज्यां कांदि नव जाशे(२)
त्यां प्रभु स्वयंप्रकाशे (२) सच्चिद्घन भासे जयदेव० ३
ते परब्रह्म परेश पदपंकज प्रणमुं(२)
प्रेमाक्षत अर्पण करि(२) तत्पदमां विरमुं जयदेव० ४
अतिशय छे अपराध अति लज्जा पामुं (२)

केवल कृपास्वभावे(२) प्रभु जोशो सामुं जयदेव० ५
भवतारक भगवंत भक्ति करूं तारी(२)
ब्रह्मध्यानपरायण(२) वृत्ति रहो मारी जयदेव० ६
संध्या समये नित्य स्मरू करूणासिंधु(२)
प्रेमथकी प्रणमी प्रभु(२) मंगलपद वंदुं जयदेव० ७
जगदाधार दयाल शुभ दर्शन देशो(२)
ध्यानार्चनवंदनविधि(२) प्रभु मानी लेशो जयदेव० ८




अंक १३ मो.

ललित छंद.

नमु नमुं महा--राजने नमुं, परम भक्तिना, रंगमां रमुं;
नव बिजो प्रभू, जाणु हुं विधि, शरण राखशो, रे दयानिधि. १
हृदयमां रुडुं, ध्यान हुं धरुं, प्रभु उपासना, प्रेमथी करुं;
सकळ शांतिना, छो महोदधि, शरण राखशो, रे दयानिधि. २
महत तत्वहे, मंगळप्रदा, विनयपूर्वके, वंदु हुं सदा;
प्रभु दया करी, द्यो रुडी मति, शरण राखशो, रे दयानिधि. ३
जगतमां सहू, वस्तुओ विशे, घटित योजना, नाथनी दिसे;
नव स्तुती थशे, अल्प जीवथी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ४
प्रभु कृपा दया-नुं निधान छो, सकळ प्राणिनुं, शांतिस्थानछो;
तुजपदे सदा, राखु हुं रति, शरण राखशो, रे दयानिधि. ५
प्रणमिने पर-ब्रह्मने भजुं, दुरित वासना, सर्व हुं तजुं;
प्रभु बचावशो, पाप कर्मथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ६
असत मार्गथी, वृत्ति वाळशो, दिन गणी दया, नाथ पाळशो;
शुभ क्रिया कदी, में नथी किधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ७
तुजविना मने, कोण तारशे, दिन तणां दुखो, कोण टाळशे;
पतित प्राणि छुं, मंद अल्पधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ८
सकळ कार्यमां, तारि साह्यता, अति अवश्य छे, रे जगत्पिता;
सफळ सौ क्रिया, थाय तुं थकी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ९

परम प्रेमनी,पुष्प अंजलि,प्रभुपदे सम-र्पु वळी वळी;
भवपती करो,आत्म उन्नति,शरण राखशो,रे दयानिधि.१०

ॐ परमात्मने नमः

हे जगत्कर्त्ता! हे सर्व माणसना महापिता! अमे तमारे शरणे आवी अमारा अपराधनी क्षमा मागीए छीए. अमे पामर प्राणी छीए. अमारी बुद्धि थोडी अने अमारुं ज्ञान छेक अल्पछे. तारी हजुरमां आववाने अमे केवळ अयोग्य छीए. कमअकलथी अने दुष्ट बुद्धिथी अमे जाणे अजाणे अगणित पाप कर्यांछे, तेने माटे पश्चात्ताप करीने तमारी पासे माफ मागीए छीए. क्षणे क्षणे अमारी मति फरे नहीं, आ पश्चात्तापनी असर अमारा मन परथी घसाई ना जाय,एवा उपाय कृपा करी अमने सुझाड. अमारा अज्ञाननो नाश थाय एवा तमारा तेजनो प्रकाश अमारा अंतःकरणमां करो. प्रभाते सूर्यनां कीर्णोंथी जेम रात्रिनुं अंधारुं नाश पामेछे तेम तमारा ज्ञान रूपी कीर्णोंथी अमारा मनना अंधारानो नाश करो,अने मुक्ति पामवानां साधन बतावो. तमारी प्रेरणा अने तमारी सहायता विना आ सर्वोत्तम कार्यने माटे अमारां सघळां प्रयत्न नि-

ष्फळ जायछे; माटे हे दयानिधि! करूणा करो.अमे दीन जनो तमारा भाविक भक्त अने गरीब दास तेमना उपर मेहेरनी नजरे जुओ.अमे भुला पडेला प्राणीओने खरे रस्ते चढावो. जेवो उपकार आज सुधी कर्योछे तेवोज हवे पछी करजो. निर्लज्ज थई घणी वार अमे तमारा उपकारने विसारी दीधोछे. दुःखमां तमने संभारीए छीए ने सुखने समे उन्मत्त थई तमने भुली जईए छीए. ए अमारी केवी मुरखाइ छे. एवां पाप न करीए एवी अमारी इच्छा छे ते सफळ करो. अमारी मुरखाइनो पार नथी. हे प्रभु! अमारा अपराध अने अमारा अज्ञाननो पार नथी. वेहेम रूपी दैत्य अमारा आत्माने अधम गतिए पहोचाडे छे अहंकार अने वेहेम अमने उंधी मति सुझाडेछे.कांइ सुख थयुं, के दान मळ्युं के जस मळ्यो तो अमारी चतुराइथी अमारा डहापणथी, अमारा नसीबथी,फलाणानी उपासनाथी के कृपाथी ते प्राप्त थयां एम मानी पापना उंडा खाडामां पडीए छीए. आ जगतनो कर्ता हर्ता, मालीक, अने नियंता तमारा विना बीजो कोइ नथी,अने तमारा करेला नियमो उपरांत कांइ थतुं नथी, ए भुली जई तारीं प्रेम भक्तिमां चुकीए छीए, ने बीजा कोइ उपर विश्वास राखीए

छीए. एवा वेहेम अने अंधाराना कुवामांथी अमने काढो. ओ प्रभु! अमने काढो अने तारो. वेहेम रूपी नदीना वेहेता पुरमां अमे, अमारा स्नेहीओ अने अमारा देशीओ तणाया जायछे; दया करो; प्रभु! दया करो;दया करीने अमने उगारो. अमने वेहेमनी जाळमांथी छोडवो अने तमारा रे तमारा एकलाना आस्तिक भक्त करो. अमने खरी श्रद्धा बक्षो, अमने ढोंगना खाडमाथी काढो ने पुण्यने मार्गे चढावो.हे विश्वाधिपति महाराज!अमारां एवां धन्य भाग्य क्यांथी के अमारी सघळी दुर्वासना, अमारा सघळा वेहेम, अमारुं सर्व अज्ञान नाश पामे अने अमे सद्‌गुणी थई तमारे एकलानेज शरणे आवी रहीए, मात्र तमारी एकलानीज पराभक्ति अने मानसिक सेवा पूजाथी पवित्र थई तमारी कृपा पामवाने योग्य थईए अने मोक्ष पामीए. हे दीननाथ, दयासागर, कल्याणकारी प्रभु! भाविक भक्तने तारनार भगवान! अमारी आ दीन याचना सांभळो, अमारी आ अरज स्वीकारो. अमने परमार्थ बुद्धि आपो,अमारी मति निर्मळ करो; अमे तमारी पराभक्ति अने अमारा देह आत्मानो वियोग थये आत्मानी मुक्ति मागीए छीए ते आपो. तथास्तु.

वंशस्थ छंद.

नमी नमी नित्य जगादिनाथने,
नमी नमी सत्य प्रभू अजातने;
नमी पराभक्तिथि ध्यान हुं धरूं,
पदारविंदे अभिवंदना करूं. १
अतर्क्य शक्ती प्रभु को न पामशे,
विचारना वेग बधा विरामशे;
प्रसन्न थै नाथ मने निभावशो,
सुनीतिनो मार्ग सदा बतावशो. २
पळे पळे हुं बहु पातको करूं,
तथापि तारी प्रभु आश हुं धरूं;
स्थिती तमे दासनि चित्त धारशो,
कृपा करी नाथ भवाब्धि तारशो. ३
विना प्रभू को नथि अन्य तारक,
विना प्रभू को नथि पापहारक;
तमे हरो सर्व विपत्ति आपदा,
तमे करो रक्षण मारु सर्वदा. ४
पदे पदे हुं तमने प्रमाणुछुं,
दया तमारी सघळे हु जाणुछुं;

उपासु हुं प्राणपती प्रभू सदा,
न पामु हुं दुःख दयानिधी कदा. ५
असंख्य पापो प्रभु नित्य थाय छे,
तथापि तारी करूणा जणाय छे;
अनन्य भावे करू भक्ति ताहरी,
मती करो निर्मल नाथ माहरी. ६
तमारि सत्ता थकि तो हलाय छे,
तमारि सत्ता थकि तो चलाय छे;
कृपा करीने वरदान द्यो तमे,
सहाय थाशो प्रभु कष्टने समे. ७
प्रभू तमारो अपराधि हुं थयो,
अनीतिना पंथ प्रते बहू गयो;
कृपानिधे पाप समस्त कापशो,
सदा मने सन्मति नाथ आपशो. ८
समर्पु चर्णे निज सर्व कर्म रे,
तमेज जाणो मुज चित्तमर्म रे;
दयाघना दास गणी दया करो,
कदी उपेक्षा प्रभु नाथ ना करो. ९
कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करूं,

प्रभूपदे मस्तक नित्य हुं धरूं;
अनाथ जाणी निज शर्ण द्यो प्रभु,
विना दया हुं क्षण एक ना निभुं. १०
विधी निषेधो निशदीन मानु हुं,
सदा तने सन्निध नाथ जाणु हुं;
नमी नमी हुं प्रभु पाय लागुछुं,
क्षमा महादोष तणी हु मागुछुं. ११
तमेज मारा प्रभु मात तात छो,
तमेज मारा सहु मित्र भ्रात छो;
विनंति सर्वे चितमां तमे धरो,
कृपा करी पाप समस्त संहरो. १२

रथोद्धता छंद.

वंदु नित्य परमात्म ब्रह्मने, वंदु सत्य विभु विश्ववंद्यने;
वंदु प्रेम थकि हुं कृपाघना, शर्ण अन्य नथि तुं प्रभू विना. १
दीनवत्सल तमे दयानिधि, स्तूतिनो हु नव जाणु रे विधि;
वारवार नमिने हु चिद्घना, प्रेमथी करू तमारि प्रार्थना. २
एक देव तमने उपासुछुं, नित्यनाथ शरणे निवासुछुं;
अल्पमंद प्रभु मारि छे मति, मात्र तारि करुणा थकी गति. ३

ब्रह्म पूर्ण प्रभु रे अनन्य छो,सर्व भक्त जनना शरण्य छो;
सृष्टिसूत्र प्रभु धारिने रहो, सर्वनी स्थिति तमे चिते लहो. ४
शक्ति छे सबळ नाथ तारिरे,सर्जिछे सकळ वस्तु सारिरे;
दीनवत्सल करो तमे दया,मागु नित्य प्रभु पापनी क्षमा. ५
विश्ववंद्य विनती चिते धरो,भक्तनां विपति संकटो हरो;
मानु नित्य प्रभुना अनुग्रहो,दास जाणि कर भक्तनो ग्रहो.६
विश्वनाथ विभु विश्व संचरो,कृत्य सामु कदि लक्ष ना करो;
मात तात तमने नमुं सदा, पामु हुं न त्रिविधीनि आपदा.७
वंदना करु हु प्रेम भक्तिथी, प्रेरशो प्रभु कृपाथि सन्मति;
प्राणनाथ प्रतिपालना करो,रूडी आश भक्तनी तमे पुरो. ८

आर्या गीति.

जय जय जय जगदीश्वर,ईश्वर अनुपम अतर्क्य अद्वितिय,
अविचल अनंत गुणमय, सच्चिद्‌घन शुद्ध छो अपरिमेय. १
सत्य तमे जगकर्त्ता, संशय नथि कांइ चित्तमां अमने,
शक्ति सबळ मानीने,वंदन करिये क्षणे क्षणे तमने. २
आस्तिक भक्त जनोजे, प्रभुनुं अस्तित्व सत्य चित धारे,
नास्तिक ऊर्मि उपजतां, ततक्षण तेने निवारि धिक्कारे. ३
अंतर निर्मळ नथि तो, बाह्याचार्योओ बधी वृथा जाय,

सत्य पराभक्तीछे, ते थकि प्रभुनुं प्रसन्न चित थाय. ४
भक्ति विना नथि मुक्ती, सत्य सकल एज शास्त्र सिद्धांत,
ए थकि प्रभुपद मळशे, टळशे भवविषयमोहनुं ध्वांत. ५
आर्या स्तवे करूंछुं, प्रभुप्रार्थन हुं यथामती तारूं,
नम्र वचन उच्चारूं, मन थकि तमने कदी न वीसारूं. ६
अभिवंदन प्रभु चरणे, निशदिन करु हुं सदा तने नाथ,
ऐहिक आमुष्मिक सुख, आपो अति चित प्रसन्न थइ तात. ७

छंद उपजाति.

सच्चिद्घनानंद प्रभू समर्थ, करो सदा मंगलकार्य सत्य;
भक्तो मळी मंगल गीत गाय, करो सदा नाथ तमे सहाय. १
दयाघना देव तमे अमारी, लेशो विनंती चितमां विचारी;
जणाय तेमां थकि योग्य सारी, कृपा करीने प्रभु ल्यो स्विकारी. २
प्रभू तमारी तुलना न थाय, सदा तमारी करूणा जणाय;
तमे महा मंगल मार्ग दाखो, सत्संगतीमां निशदीन राखो, ३

मालिनी छंद.

अवगुण अपराधो, छे अमारा अगाध,
क्यम करि परलोके, सद्गती थाय नाथ;

श्रवण करि अमारा, स्वामि सर्वे विलापो,
अतिशय करुणाथी, पापनी माफि आपो. १

गायन.

पद.

धन्य धन्य धन्य धन्य, धन्य आजनो सुदीन,
मळी सर्व भक्त जन, करिये अमे प्रणाम;
सद्गुण नीम धारी, स्तुति करिये तमारी,
अर्चा एजछे अमारी, तमने अंतर्याम.
धन्य धन्य धन्य धन्य.
निर्मळ आपो मति, विश्वंभर विश्वपति,
तमविना नाथ नथी, अमने बिजो विराम;
भरुंसो छे नाथ भारे, भगवंतनो अमारे,
करशो कृपाळ तमे, परिपूर्ण रुडुं काम.
धन्य धन्य धन्य धन्य. १

पद.

विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत, विधाता०
अतर्क्य अगोचर रूप तमारुं,
व्यापी रह्या सत्ता थकी भगवंत. विधाता १

वेद स्तुति तारी करिने विराम्या,
पाम्या नहीं तारो पुरो प्रभु अंत. विधाता २
संरक्षण सर्व काल करो छो,
प्रभु दीनवत्सल छो दयावंत. विधाता ३
कर्म तणुं भोक्तृत्व निश्चय छे,
शुभाशुभ क्रिया थशे फलवंत. विधाता ४
परमात्मा समदृष्टि जुवो छो,
सरखा तमे गणो दरिद्री श्रीमंत. विधाता ५
अवलंबन आधार तमारो,
राखी अमे रहिये सदा निश्चिंत. विधाता ६
विधि निषेधनी आज्ञा मानी,
अमे अनुसरिये तारो भक्तिपंथ. विधाता ७
अभिवंदन नम्र थई अमे करिये,
कृपा करी रहो तमे क्षमावंत. विधाता ८

आरति.

जयदेव जयदेव जय शान्तिदाता जय शान्तिदाता,
दिव्य पिता प्रभु त्राता(२)त्रिभुवन विख्याता जयदेव० १
एक अखंड अनंत अजरामर साचा, (२)

स्तुति गावा प्रभु तारी(२)नब चाले वाचा जयदेव० २
सृष्टिनियम साक्षात (२)निरखी आनंदुं, (२)
जगकर्त्ता जाणी प्रभु(२) प्रेम थकी वंदुं जयदेव० ३
प्रभु सर्वज्ञ समर्थ शुभ सन्मति आपो, (२)
कृपाघना करुणा करि(२)क्षमा करो पापो जयदेव० ४
कृपाविना किंचीत कार्य नहीं सरशे, (२)
सद्गुणि भक्त तमारा(२)भव सागर तरशे जयदेव० ५
जगतारक जगवंद्य जगदीश्वर देवा, (२)
मानि दयानिधि लेशो(२)दिन जननी सेवा जयदेव० ६
करुणादृष्टि दयाल दिनजन पर करशो, (२)
घटित विनंति अमारी(२)चित्त विशे धरशो जयदेव० ७
मानि बहु उपकार प्रणमुं प्रभुचरणे, (२)
कृपाकरी सेवकने (२)राखो निज शरणे जयदेव० ८





अंक १४ मो.

छंद भुजंगी.

नमीए सदा सच्चिदानंदरूप,
नमीए सदा सर्वविश्वाधिभूप;
नमीए सदा दीनबंधू दयाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. १

तमे छो अमारा प्रभू अन्नदाता,
तमे छो अमारा सदा सत्य त्राता;
पराभक्तिभावे अमे विश्वपाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. २

कृपाथी करो सर्व रुडुं अमारुं,
कृपाथी करो सर्व सृष्टीनु सारुं;
कृपाथी करो रक्षणो सर्व काळ,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ३

तमे प्राणिना सांभळीने विलापो,
करोछो कृपाथी क्षमा सर्व पापो;
अमे दीनता नम्रताथी त्रिकाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ४

प्रभू प्रार्थना लक्षमां सर्व धारो,

अमारां बधां संकटोने निवारो;
अमे पामरो प्राणियो अज्ञबाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ५
किधां पापकर्मो अमे उग्र भारे,
तमारा विना कोण तेने निवारे;
करो नाथ दृष्टी दयानी विशाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ६
कृपाथी तमे सांभळो विश्वनाथ,
विनंती करी जे अमे जोडि हाथ;
विटाई वळी विश्वनी मोहजाल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ७
करीए अमे अर्चनाओ तमारी,
कृपाथी पुरो वांछनाओ अमारी;
अमे अर्पिये प्रेमनी पुष्प माल,
नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

हे जगतना स्वामी, महा प्रभु, प्राणनाथ! अमारा खरा प्रेमथी करेला आ नमस्कार स्वीकारजे. अमारी

तारा उपर दृढ श्रद्धा छे. अमे खरा आकीनथी मानीए छीए, के पृथ्वी, वायु, अग्नि, प्राणी, पर्वत, सागर, वृक्षो, तत्वादिक सघळी वस्तुओनो, चंद्र, सूर्य, नक्षत्रोनो सरजनार तुं एकलोछे. ए सर्वने माटे तें नियमो रच्याछे. तारी तुल्य बीजुं कोइ नथी; पूजावा योग्य तारा विना बीजुं कोइ छेज नहीं. आखा विश्वमां, असंख्य ब्रह्मांडोमां सर्वेनो रक्षक, सर्वनो पाळनार, सर्वनो आधार, तुंज छे. तारो महिमा अपार छे. तारी दयानो भंडार अखुटछे. तारा उपकार अनुप छे. तारी पवित्रता अने सारापणुं केम वर्णी सकाय? जे डहापणमां कौशल्यमां अने चतुराईमां परिपूर्ण छे, जेनामां कशी अपूर्णता नथी, कोइ खोड नथी, जे सर्व शक्तिमान अने अति दयालु तथापि न्यायी छे, जे सघळी जगाएछे, बधुं जुवेछे ने सांभळेछे, जे कांइ विसरतो नथी, कोइ बीजाने विद्यमान राख्या वगर तथा कोइ रूपधारण कर्या विना मात्र पोतानी इच्छाथी जे धारे ते करी सकेछे, एवा अति प्रतापी क्षमावंत भगवानने दंडवत् प्रणाम करी वंदन करीए छीए. तमने योग्य जणाय तो अमारी प्रार्थना सांभळो. अमारा अपराध क्षमा करो. अमे सुमति अने सुज्ञान मागीए छीए. इंद्रीओने

अने मनोविकारने सुनीतिनी योग्य मर्यादामां राखवानी प्रेरणा करो अने शक्ति आपो.तारी सहायता विना रूडां कर्म करवाने करेलां अमारां सघळां प्रयत्न व्यर्थ जायछे.अमारी धारणा अने अमारा संकल्पो खोटा छे. तारुं धार्युं मात्र सत्यछे. अमे मिथ्याभिमानी दुष्ट माणस आ लोकमां जस प्राप्त करवाने,मोटा कहेवडाववाने अने भुंडां काम करवाने केवा तत्पर थइये छीए, केवो उमंग राखीए छीए! लाभ मेळववाने अने स्वार्थ साधवाने केवा तत्पर रहीए छीए! अने रूडां पुण्यनां कर्म करवामां केवा मंद छीए, केवा धीमा छीए! इंद्रियादिकनां क्षणिक सुख भोगववाने केटला आतुर छीए! मरणनो भय भुली जई केवा प्रपंच करीए छीए! अमारा अमर आत्माना मोक्षनी, तेना नित्यना सुखनी चिंता केटली थोडी राखीए छीए! आ संसारनी क्षणभंगुर मालमिलकत उपर अमर्याद आसक्ति राखी मायानी एटले अज्ञाननी मोहजाळमां लपटाईने बंधाई रह्या छीए. तारी वास्तविक भक्तिनां खरां साधन छोडी आडे मार्गे, पापने रस्ते जइये छीए. अमने आंख्यो छे तो पण अंध छीए. अमे अज्ञानी छीए, अमे मूर्ख छीए. अमे पापना अंधारा कुवामां पड्या छिये. दया क-

री अमने एमांथी काढो. सत्यज्ञानरूपी अजवाळुं आपो. तमारी सत्य भक्ति, तमारी अनन्य भक्ति, तमारी पराभक्ति रूपी दीवो अमारा अंतःकरणमां प्रदीप्त करो. आ जगतमां सत्य मार्गे चालीए, तारा उपर प्रेम राखीए, तारा आश्रय, डह्यापण अने सामर्थ्य उपर श्रद्धा राखीए, तारो भय राखीए, अने सुनीतिथी वर्तिये तोज अमारा मननो मेल जाय. बीजा कोइ बाहारना उपचारथी जवानो नथी. जळथी के साबुथी के बीजा कशाथी ते धोवावानो नथी. सरोवर नदी के समुद्रना पाणीथी मन चोखुं थतुं नथी. ए मेल जाय तोज अमारां मन पवित्र थाय. अपवित्र मनथी करेली सेवा, मलिन अंतःकरण छतां करेली भक्ति तुं न स्वीकारे, माटे अमारां मन पवित्र करवानी अमारी महेनत सफळ कर. हे महा प्रभु! अमारा उपर प्रसन्न था. अमारां मन निर्मळ, करी भक्तिरसथी भर के आ संसारमां रही पाप ना करीए अने पुण्यशाळी थई मुक्ति पामीए. तथास्तु.

अनुष्टुप छंद.

नमुं परात्पर ब्रह्म, परमात्मा महेश्वर;
नमुं हुं जगदाधार, नमुं हुं जगदीश्वर. १

नमुं विश्वेश विश्वात्मा, नमुं हुं प्राणरक्षक;
नमुं हुं करूणाकांत, नमुं कल्याणकारक. २
नमुं सर्वजगद्व्यापी, नमुं प्राणपति प्रभु;
नमुं चैतन्यरूपात्मा, सच्चिदानंद ईश्वर. ३
अनंत नित्य निर्लेप, सृष्टिकर्ता सदाशिव;
मुक्तिदाता नमुं नित्ये, नमुं हुं भक्तवत्सल. ४
जगन्नाथ जगत्त्राता, जगदुत्पत्तिकारक;
स्वयंभू सर्व लोकेश, नमुं सर्वत्र व्यापक. ५
नमुं सर्वाद्य अव्यक्त, सर्वांतर्यामि उत्तम;
न्यायकर्ता जगद्धाता, नियंता परमेश्वर. ६
विश्वंभर विभु वंदुं, वंदुं हुं विश्वपालक;
जगद्वंद्य जगाधीश, प्राणदाता प्रजापति. ७
उपकारी कृपासिंधु, नीति सज्ज्ञानवर्धक;
नमुं ज्येष्ठ नमुं श्रेष्ठ, शरण्य शान्तिदायक. ८
भयत्राता भवाधीश, भक्ताभिष्टफलप्रद;
अद्वितीय अनाद्यंत, जयदाता जगत्पति. ९
नमुं नमुं प्रसन्नात्मा, प्रेरक द्योतनात्मक;
सर्वाधार सदा वंदुं, सर्वतत्वप्रकाशक. १०
नमुं सर्वेश सर्वात्मा, सर्वसिद्धिप्रदायक;

स्वतंत्र सर्वविद्वंदुं, वंदुं सत्वगुणान्वित. ११
शुद्ध मुक्त सदाशान्त, नमुं दुष्कर्मनाशक;
शक्तिमान् ज्ञानवान् वंदुं, वंदुं विश्वार्त्तिहारक. १२
नमुं हुं सविता धाता, भक्तिदाता भवेश्वर;
सर्वसाक्षी सदा वंदुं, वंदुं सद्बुद्धिदायक. १३
नमुं देव महादेव, महामांगल्यकारक;
महत्तत्व नमुं नित्ये, सर्वलोकप्रकाशक. १४
नमुं नमुं जगत्स्वामी, सर्वाधीश नमुं नमुं;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिकर्ता, नमुं हुं करुणाकर. १५
अज एक अनाद्यंत, अविचिंत्य अगोचर;
नमुं साष्टांग हुं नित्ये, सत्य सर्वज्ञ तारक. १६
शत मंगल नामेथी, स्तुति कीधी यथामति;
स्वीकारी सर्व ते लेशो, आपशो नित्य सन्मति. १७
तमारे शरणे राखी, भक्त संरक्षणो करो;
सदा वात्सल्य भावेथी, दुःख दारिद्रने हरो. १८
कोट्यावधि महादोशो, किधाने करूछुं सदा;
तमारो दास जाणीने, करुणाथी करो क्षमा. १९
अनन्यभक्तिभावेथी, करुं हुं अभिवंदना;
प्रसन्न थइने पूरो, मनवांच्छितकामना. २०

इंद्रवंशा.

स्वेच्छा थकी सृष्टि तमे प्रभू किधी,
स्वेच्छा थकी ते उपसंहरो बधी;
अद्भूत छे देव तमारि तो कृति,
चाले नहीं त्यां जिव अल्पनी गति. १
कोटयावधी दोष किधा दयानिधि,
जाणुं नहीं हुं उपशांतिनो विधि;
नित्ये मने सन्मति नाथ आपशो,
संसारसिंधू थकि पार पाडशो. २
स्रष्टा तमे सृष्ट पदार्थ सर्वना,
साक्षी तमे छो प्रभु सर्व कर्मना;
सर्वेश सर्वांतरयामिने सदा,
साष्टांग वंदी प्रभु मागुछुं क्षमा. ३
आधार बीजो नथि नाथ तुं विना,
नित्ये करूंछुं प्रभुपादसेवना;
भक्तो तणी सर्व विपत्तियो हरो,
कल्याण मांगल्य तमे सदा करो. ४
पादारविंदे नमि पाय लागुछुं,
सत्कार्यमां नाथ सहाय मागुछुं;

दृष्टी दयानी प्रभु नित्य राखशो,
निःशेष दोषो सहु कापि नांखशो. ५
कूटुंबि मित्रो स्वजनो जनो बधा,
पामे नहीं किंचित दुःख आपदा;
आरोग्यता आपि करो सहायता,
राखो जगत्मां प्रभु सर्व शांतता. ६
नीती प्रमाणे अनुवर्तनो थशे,
त्यारे कृपा पूर्ण तमारि तो थशे;
माटे विनंती करु वार वाररे,
स्वीकारवाने करशो न वाररे. ७
दुर्वासनाथी प्रभु दूर राखशो,
सन्मार्ग सद्धर्म मने बतावशो;
संकष्ट मारां प्रभु सर्व कापशो,
सामीप्यमुक्तीपदलाभ आपशो. ८

वसंततिलका छंद.

विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत,
इच्छा अमारि सघळी घटिताघटीत;
भक्तो तणी विनति सर्व चिते विचारी,

लेशो हशे घटित जे प्रभु ते स्विकारी. १
पुत्रो पिता समिप आवि समस्त मागे,
तेमां थकी घटित अर्थज तात आपे;
ए न्याय राखि परिपूर्ण करो सदर्थ,
सर्वे सुकार्य करवा प्रभु छो समर्थ. २
सर्वे कुकर्म करूणा करिने शमावो,
सद्धर्म कृत्य करवा सुमती बतावो;
भक्तो मळी स्तवन नित्य तमारु गाय,
प्रेमे करी प्रभु तमे करशो सहाय. ३

गायन.

पद.

वंदुं परब्रह्मचरण, करूंछुं शुभनामस्मरण,
भजुंछुं भवदुःखहरण, मंगळ दिन मानुं आज. वंदुं०
संगीत गीत गाउं, चिद्घन प्रत नित्य धाउं,
प्रणमी कृतार्थ थाउं, जय जय जगदधिराज. वंदुं०
अतिशय मुज दुष्टकृति, क्यम करी प्रभु पामुं गति,
थर थर थर कंपुं प्रभु, करूणा करी राखो लाज;

अविचल प्रभु भक्ति आपी, त्रिविधिजनित कष्ट कापी,
मुज शिर वरहस्त थापी, करशो हितकारी काज. वंदुं० १

पद.

जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर अविचलशुभपददाता,
तत्व महत थकि व्याप्त विभु त्रिगुणात्मक विश्वविधाता,
दुर्मति टाळि मति शुभ द्यो दयादृष्टि करी दीननाथा.
जय जय०

प्रभु परमकृपाल, जनप्रतिपाल, दीनजनबंधु, दीनदयाल,
चरण तमारे नमुं हुं त्रिकाळ, करूणादृष्टि करो विशाल--
शरणागत सेवक सर्वे तुज मंगळयशगुणगाता. १
जय जय हे जगदीश्वर०

प्रभु कृपानिधान, बहु बळवान, नव कोई भासे ब्रह्म स-
मान, पूज्य मानीने करूं शुभ ध्यान, कृपाघना मुज द्यो
वरदान--विश्वनाथ विश्वंभर विभु छो विश्वविषे विख्याता. २
जय जय हे जगदीश्वर०

सर्वांतर्यामी, प्रभु निष्कामी, विश्वस्वामी, अविचळधामी,
सचराचर छो प्रभु निजगामी, भक्ति विषे मुज वृत्ति वि-
रामी, दयानिधी दिनवत्सल देवा सदा करो सुख शाता. ३
जय जय हे जगदीश्वर०

परब्रह्म महेशा, प्रभु परमेशा, प्रकृतिपरेशा, विभु विश्वेशा, प्रणमुं तमने प्रभु दिन निशा, दूर करो मुज दुरित अशेषा--दिव्यपिता परमेश्वर तमने निरखुं सदा साक्षाता. ४

जय जय हे जगदीश्वर०

जय अपरंपार, छो अविकार, भक्तजनोना प्रभु आधार, अविचल पद आपो दातार, सदा तमारा स्मरूं उपकार--आद्य निरंजन निर्मळ अविचल त्रिभुवनना प्रभु त्राता. ५

जय जय हे जगदीश्वर०

जन मंगलकारी, बहु उपकारी, भक्त जनोना भवभयहारी, यथामति आ विनति उचारी, कृपा करीने ल्यो स्वीकारी--पूर्ण करो प्रभु आश अमारी, आद्य अनंत अजाता. ६

जय जय हे जगदीश्वर०

सुख शान्ति प्रदाता, प्रभु प्रख्याता, प्रेम भावथी नमुं जगत्राता, आद्य अनंत अखंड अजाता, सर्व कर्मना प्रभु छो ज्ञाता--परमात्मा परलोक विषे प्रभु समिपमुक्तिफलदाता. ७

जय जय हे जगदीश्वर०

हुं शरण तमारे, आव्यो द्वारे, चडशो वारे, संकट भारे, तुज विण प्रभु ते कोण निवारे, सर्व अर्थ सेवकना सारे--सदा तने साष्टांगविधिथी नमुं नमुं नमुं पितु माता. ८

जय जय हे जगदीश्वर०

पद.

सच् चिद्घनना स्वरूपमां विरामुंरे   सच् चिद्०
अंतरवृत्ति विमल थया विना,
बाह्याचरण सर्व छे नकामुंरे.   सच् चिद्० १
कृपाघना करुणादृष्टिथी,
जुवो नित्ये सेवक जन सामुंरे.   सच् चिद्० २
नीतिसद्धर्माचरण थकी हुं,
सदा तारो प्रसाद पूर्ण पामुंरे.   सच् चिद्० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय जगदुद्धारा जय जगदुद्धारा,
अविनाशी अविकारा(२)विभु अपरंपारा   जयदेव० १
नमी दंडवत् नाथ नित्य तमने भजिये, (२)
मंगलकारी तमारुं (२) नाम मुखे जपिये   जयदेव० २
सच्चिद्घन सर्वेश संरक्षण करशो, (२)
प्रेमलभक्ति तमारी (२)मुज हृदये भरशो जयदेव० ३
त्राता त्रिभुवन नाथ सद्गुणना दाता, (२)
दया करो दिनजन पर(२)दिव्य पिता माता जयदेव० ४
शाष्टा सत्य समर्थ मंगल मति देशो, (२)

स्तुतिवंदनप्रार्थनाविधि (२) विभु मानी लेशो जयदेव० ५
अकल कळा न कळाय करुणामय तारी (२)
दया करी मुज दिनने(२) मति आपो सारी जयदेव० ६
प्रेम थकी परमेश माफ करो पापो, (२)
विश्व विशे विश्वेश्वर(२)सुख शान्ति आपो जयदेव० ७
विनति अमे महाराज करिये नित्य तमने, (२)
घटित मनोर्थ हशे जे(२)प्रभु आपो अमने जयदेव० ८




अंक १८ मो.

ललित छंद.

परम इष्टने, पाद पंकजे, प्रति दिने परा-भक्तिपूर्वके;
परम प्रेमनी, पुष्पअंजली, अरपिये अमे, भक्तमंडली. १
सृजित वस्तुमां, ब्रह्मभावना, भ्रमित जीवनी, क्लिष्ट कल्पना;
अखिल विश्वनो, आद्य एकजे, नव कदी थशो, व्यक्त मात्र ते. २
सृजित वस्तुथी, भिन्न सत्यछो, सबल शक्तिथी, व्याप्त नित्यछो;
विदित जीवनां, कृत्य आपने, प्रभु क्षमा करो, सर्व पापने. ३
प्रभु परात्परा, पूर्ण छो तमे, परमभक्तिथी, पूजिये अमे;
दुरगुणो थकी, दूर राखशो, सुनितिनो सदा, मार्ग दाखशो. ४
सकल सृष्टिना, नाथ नायक, सकल विश्वमां, शांतिदायक;
नमि नमी अमे, पाय लागिये, रूडि मती महा-राज मागिये. ५
दुरित कृत्यतो, थायछे अति, अवकृपा तथा-पी थती नथी;
अनुग्रहो अमे, नित्य मानिये, प्रभुकृपा थकी, शांति पामिये. ६
जय जगेश्वरा, क्षेमकारक, जय भवेश्वरा, भक्ततारक;
प्रभु सुणो तमे, नम्र प्रार्थना, पुरि करो रूडी, सर्व कामना.
शुभ उपासना, आज आ समे, करि प्रभूपदे, वंदिये अमे;
विनति सांभळी-ने तमे बधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

श्री जगदीश्वर महाप्रभु परमपवित्र भगवानने साष्टांग नमस्कार करूंछुं. सर्व ब्रह्मांडना नाथ विश्वाधिपति महाराज! तमारे शरणे आव्योछुं. मारा अपराध क्षमा करो, मारां पाप बाळी नांखो. अने मने मुक्ति आपो. आ जगतमां जीवुं त्यां सुधी तारी भक्ति शुद्ध भावथी करूं, तारी प्रीति अर्थे अने मारो धर्म जाणी परमार्थ करूं, सदाचरणवडे पुण्यशाली थाउं, अने तारा प्रेमने पात्र थई सद्गति पामुं, ए मारी मनकामना छे. एज मारे मागवुं छे. बीजुं शुं इच्छुं? बीजुं शुं मागुं? तारी कृपाथी बीजो कोई पदार्थ मोटो नथी. तुं मुज दीन उपर प्रसन्न था, एज मारे मागवानुं छे. मारे बीजुं कांई जोईतुं नथी. आ संसारनां सुख दुःख कर्मादिक कारणोने संयोगे उत्पन्न थाय छे, ते बधां कारण मारा समजवामां आवतां नथी. हुं तो केवळ तारा उपर भरोसो राखी रह्योछुं. जे साधनोनी बक्षीस तें करी छे तेनो रूडो उपयोग यथाशक्ति करीने सदा तारो पाड मानुंछुं. अनित्य सुखो भोगवतां छतां ते उपर आसक्त थतो नथी. कल्याणकारी! तारा अनुग्रह रूपी नित्यनुं सुख संपादन करवाने आतुर रहुंछुं.

मारा मनने दृढ कर के ए नित्यनुं सुख मेळववाने सदा उद्यममां रहुं, निरंतर मंडयो रहुं; आ संसारनां क्षणिक सुखना लोभे अने क्षणिक दुःखना भयथी आडी वाटे न जाउं; सुख समे तारा सुनीतिना नियमोने आधीन रहुं; अने दुःखनी वेळा मारा खरा आकीनथी चाली, श्रद्धापूर्वक तारी अनन्यभक्ति छोडुं नहीं; अने तने दोष न देतां धीरजथी जे थाय ते सहन करूं; एवी मति आप. मारी आ अरजमां कांई अयोग्य होय तो मारी भूल माफ करजे. अमे तारां अज्ञान छोरूं छीए. धनादिकनी अने इंद्रियना भोगनी तृष्णा सुनीतिनी घटित मर्यादामां राखवानुं सामर्थ्य नम्रतापूर्वक मागीए छीए ते करूणा करी आपो. सदुद्योगथी ने सत्य मार्गे जे मळे तेमां राजी रहीए, एवो संतोष आपो. संकट समय सावध रही सद्धर्मनां कर्मो चुकीए नहीं, खोटे रस्ते चढीए नहीं एवी बुद्धि देनार सर्वशक्तिमान महापिता विना बीजुं कोई नथी. हे मायाळु पिता परब्रह्म परमात्मा! भक्तोना अंतःकरणमां ज्ञाननो प्रकाश करनार! मारा मनने अंधकार नाश करी मारी सकल दुर्वासना दूर करो. मने वेहेमना दरीआमां डुबवा न देशो. मने पाखंडना खाडामांथी काढो. मने संसारसागरथी तारो. तमारा ज्ञान

रूपी अमृतनुं मने पान करावो के मारो आत्मा तमने पामे. शांतिः शांतिः शांतिः

तोटक छंद.

परब्रह्म परात्पर विश्वपति,
नमिने तमने करुछुं विनति;
प्रभु व्यष्टि समष्टि विषे विचरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १

प्रभुता प्रभु तारि दिसे सघळे,
तुज पार पुरो अमने न मळे;
प्रगट्यो परिपूर्ण प्रताप खरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. २

भुमिमंडळ सुंदर शोभि रह्युं,
तुज शक्ति थकी भरपूर थयुं;
प्रभुनाथ तमे भवताप हरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ३

गगने ग्रहराज विराजि रहे,
प्रभुनी प्रभुतानु प्रमाण कहे;
सचराचर सृष्टि विषे पसरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ४

ग्रह गोळ विचित्र गतीथि फरे,
परब्रह्म तणो प्रतिबोध करे;
प्रभु निर्मित नीम थकी न फरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ५
प्रभुना पदपंकजने प्रणमुं,
शुभ ध्यान धरी मनमां विरमुं;
वरहस्त तमे मुज शीश धरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ६
शुभ मंगळ नाम मुखेथी जपुं,
निज कर्म बधां तमने अरपुं;
मुज चित विशे प्रभु भक्ति ठरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ७
अविनाश पदे अभिलाष धरूं,
भवसागर नाथकृपाथि तरूं;
मुज चित्त थकी कदिना विसरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ८
मुज अंतर भाव थकी विनवुं,
विभुनाथ तने वदवुं शु नवुं;
शरणागत जाणि ग्रहोज करो,

करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ९

करूणाथकि दुःख विपत्ति टळे,
करूणाथकि नाथप्रसाद मळे;
करूणाथकि कार्य समस्त सरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. १०

जिवना अवगूण तमे न गणो,
मुज आश्रय आप कृपाज तणो;
प्रभुरे करूणामृत वृष्टि करो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. ११

अवलंबन सत्य प्रभूपदनुं,
शुभ कार्य करो सघळा जननुं;
मुज चित्त विशे प्रभु शांति भरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. १२

प्रभु अंतरयामि अनादि तमे,
तमने सुनिती शुभ मार्ग गमे;
निज भक्त तणी रुडि आश पुरो,
करूणानिधि कष्ट समस्त हरो. १३

अपराध अगाध हु नित्य करूं,
प्रभु तारि कृपा थकि मात्र तरूं;

मुज मंद मती सघळी सुधरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १४
अभिवंदन विश्वपतीचरणे,
करिने रहुछुं प्रभुने शरणे;
शुभ आशिरवाद सदा उचरो,
करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १५

छंद भुजंगी.

परात्मा प्रभू चिद्घना चित्स्वरूप,
सदानंद आनंददाता अनूप;
अनिर्वाच्य शक्ती तमारी अपार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार: १
नियंतृत्व कर्तृत्व सत्ता तमारी,
दयासिंधु दीसो बहू ऊपकारी;
सहू शास्त्रनो एज सिद्धांत सार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. २
षडैश्वर्यसंपन्नप्रभूछो समर्थ,
पुरो सेवकोना तमे सर्व अर्थ;
कृपावीण क्रीया न थाशे लगार,

जगदूंद्यने वंदिये वारवार. ३

रची कोटि ब्रह्मांडना सर्ग पोते,
महच्छक्तिथी व्याप्त छो पूर्ण ज्योते;
तमे प्राणदाता प्रभू निर्विकार,
जगदूंद्यने वंदिये वारवार. ४

तमारा प्रभू विश्वमां नीम साचा,
अमो जीवना सर्व संकल्प काचा;
थशे जे किधुंछे तमे नीरधार,
जगदूंद्यने वंदिये वारवार. ५

अमे अल्प प्राणी बधा देहधारी,
तमे ना जुओ दुष्कृतीओ अमारी;
क्षमावो अमारा सहू दुर्विकार,
जगदूंद्यने वंदिये वारवार. ६

तमे क्षेमकल्याणआरोग्यदाता,
तमे सर्वनाछो प्रभू सत्यत्राता;
अमे दीनताथी उभा आवि द्वार,
जगदूंद्यने वंदिये वारवार. ७

प्रभूपादमां जोडिने बेउ हाथ,
क्षमा पापनी मागिये विश्वनाथ;

उतारो विभू विश्वसिंधूथि पार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ८
सदाचार नीती अमे आचरीए,
तमारा सदा ऊपकारो स्मरीए;
करो तेज भक्ती तमे अंगिकार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ९
अमारी अभीवंदना मानि लेजो,
कृपाधीश नित्ये शुभाशीष देजो;
करो सर्वदा भक्तने ऊपकार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १०
कुटुंबी अमारा वळी मित्र प्यारा,
रहेते शरीरे सुखी सर्व सारां;
सदा सूचवो तेमने सद्विचार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ११
अमे रंक प्राणी अती दीन बाळ,
नमीए तने दीनबंधू दयाळ;
अमारी करो आ विनंती स्विकार,
जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १२

गीति.

परमात्मा परमेशा, प्रणिपतपूर्वक प्रणाम करु नित्ये,
आपो दान अभय मुज, दुस्तरभवसिंधुथी हु तरु सत्ये. १
करुणाकर कर धरशो, हरशो मुज सकल दुःख संताप,
प्रेमल दृष्टि थकी प्रभु, करशो मुज रंकनां क्षमा पाप. २
नित्य निरंतर देखो, सेवक जननी बधी कृती तात,
नविन नथी के'वानुं, जाणो मुज सकल हृदयगत वात. ३
शरण सुखप्रद तारुं, ग्रहण किधुं छे अमे जगाधीश,
विमुख विभू नव करशो, वंदन करिये तने अहोनीश. ४
अति उपकार तमारा, क्षण प्रतिक्षणमां दिसे दयासिंधु,
दिनवत्सल दिनबंधू, तुज शुभ चरणे सदा हु अभिवंदुं. ५
भोगववां कृत कर्मो, ए प्रभु निर्मीत नियम छे नित्य,
लाभ समिप मुक्तीनो, मळशे सद्धर्म कृत्यथी सत्य. ६
नाम कृपासिंधू ते, सार्थक करशो दयानिधी देवा,
थर थर थर कंपुछुं, किंचित तारी नथी किधी सेवा. ७
साष्टांगे नमु तमने, कृति सामुं प्रभु कदापि नव जोशो,
राखो लाज अमारी, शरणागतना क्षमा करो दोषो. ८
भाव थकी प्रभु तमने, भजशे तेनां त्रिविधि दुख टळशे,
ईश्वर प्रसाद मळशे, संचित सकल शुभ धर्म कृत फळशे. ९

जय जय जय करूणाब्धे, जयजयकारो करो तमे देवा,
प्रेमथकी परमेश्वर, सेवक जननी स्विकारशो सेवा. १०
नम्र विनंति अमारी, करूणा करिने तमे चित्ते धरशो,
तेमां घटित हशे जे, ते ते इच्छा तमे पुरी करशो. ११
प्रेमाक्षत अर्पण करि, प्रार्थन करिये सदा अमे तमने,
सद्गति प्राप्त थवाने, सन्मति देशो दयानिधी अमने. १२
शरणे रही तमारे, ध्यान तमारूं हृदय विशे धरिये,
स्तवन भजन कीर्त्तन करि, शिर साष्टांगे प्रणाम प्रभु करिये. १३



गायन.

पद.

शुभ गुण गाय गाय मंगळ पद ध्यायध्यायरे,
शुभ गुण गाय०
सुंदर नरनारी मळिमंडळ लागे प्रभुने पायरे,
शुभ गुण गाय०
करूणामय दृष्टिथी तमारी,
दुरित कृति सर्व जाय जायरे,
धन्य धन्य धन्य धन्य, धन्य सच्चिद् घन,
मंगळ कृत्य नित्य थाय थायरे. शुभ गुण० १

पद.

नमु जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर, परपद मंगल दाता;
जगदुद्धारक जनसुखकारक, दुखपरिहारक त्राता. १
नमु जगदीश्वर०

षड्गुणयुत भगवंत तमे छो, विश्वतणा विभु धाता;
ऋषि मुनियो तुज शुभ महिमाना, मंगल यश गुण गाता. २
नमु जगदीश्वर०

एक तमे अद्वितिय स्वरूपे, विश्व विशे विचरो छो;
सदा निरंतर भक्त जनोनी, प्रभु संभाल करो छो. ३
नमु जगदीश्वर०

धन्य कृतीछे जगरचनानी, कदि नव जाय वखाणी;
यथाघटित नियमो बांध्याछे, करुणा चितमां आणी. ४
नमु जगदीश्वर०

शक्ति सबल सर्वेश्वर तारी, विश्व विशे रहि व्यापी;
मानुषि जिवने घटित नियमथी, मतिमर्यादा आपी. ५
नमु जगदीश्वर०

सृष्ट वस्तुथी स्रष्टा भासो, परमात्मा भगवान;
त्रिगुण शक्ति तें धारि तथापी, सात्विक गूण प्रधान. ६
नमु जगदीश्वर०

मिथ्या भासित मथी थयुं आ, सृष्टि तणुं मंडाण;
अति चातुरिथी सर्व वस्तुमां, नियम किधो निर्माण. ७
नमु जगदीश्वर०

देहाकृतिमां अति अद्भुतजे, यांत्रिक युक्ति जणाय;
ते थकि प्रभु कर्ता छो तेनां, मुख्य प्रमाण गणाय. ८
नमु जगदीश्वर०

ग्रहगण गगने गणितनियमथी, अति शोभाथि प्रकासे;
उपग्रह ग्रहयुतियो अस्तोदय, निरखी चित्त उलासे. ९
नमु जगदीश्वर०

आस्तिकजन सानंदाश्चर्ये, प्रभुमहिमाने माने;
वारवार वीचार करीने, ब्रह्मपदे विश्रामे. १०
नमु जगदीश्वर०

अभिवंदन दिनवत्सल तमने, करिये वारंवार;
श्रवण करो करुणानिधि सर्वे, दिन जनना उच्चार. ११
नमु जगदीश्वर०

भवसागरथी तरवा तारी, करुणा रूपी नौका;
प्रेमथकी सन्मार्ग बतावो, तो तरिये निःशंका. १२
नमु जगदीश्वर०

विकट विभू भवपंथ घणोछे, जिवथी कदि न तराय;

दयानिधी करुणा करशो तो, नहि ते दुस्तर थाय. १३
नमु जगदीश्वर०

कृती अमारी प्रभु नव जोशो, दोष किधा छे भारे;
मातपिता शिशुना अवगुणने, चितमां कदि नव धारे. १४
नमुं जगदीश्वर०

आसंसारे शुभ कर्मोनी, मति आपो जगदीश;
सदाचरणथी भक्ति तमारी, करिये प्रभु हरनीश. १५
नमु जगदीश्वर०

जगदीश्वर जगवंद्य तमारी, अकळ कळा न कळाय;
सत संकल्पो छे प्रभु तारा, मिथ्या कदि नव थाय. १६
नमु जगदीश्वर०

भक्ति विना नीती निष्फल छे, कदि करवो न वियोग;
विना नीति भक्ती करवाथी, थाय न शुद्ध प्रयोग. १७
नमु जगदीश्वर०

सत्य वचन सद्धार्माचरणो, सद्विद्या सत्संग;
चित्तार्पण प्रभुचरणे करवुं, ए भक्तीनुं अंग. १८
नमु जगदीश्वर०

अवलंबन आधार तमारो, छे साचो भगवंत;
भय संकट संताप निवारो, करुणा करि अत्यंत. १९

नमु जगदीश्वर०

बिनय थकी साष्टांगे तमने, वंदन करिये नाथ;
कृपाघना करूणादृष्टीथी, क्षमा करो अपराध. २०

नमु जगदीश्वर०

शरण तमारूं ग्रहण किधुं छे, प्रभु करशो न निराश;
अविचल पद परमात्मा आपो, जाणि तमारो दास. २१

नमु जगदीश्वर०

जय जगदीश्वर जय परमेश्वर, जय परब्रह्म परेश;
प्रसन्न थइ प्रेरो सद्बुद्धी, विनवीए विश्वेश. २२

नमु जगदीश्वर०

प्रेम थकी आज्ञाओ तारी, सेवक जन जे पाळे;
परमात्मा पोतानो तेने, जाणि सदा संभाळे. २३

नमु जगदीश्वर०

मन वाणी कायाथी तमने, करिये कोटि प्रणाम;
ऐहिक सुख आपो प्रभु अमने, परलोके निजधाम. २४

नमु जगदीश्वर०

आरति.

जयदेव जयदेव जय सृष्टिकर्ता जय सृष्टिकर्ता,
संकट भय दुख हर्ता(२)विश्वतणा भर्ता जयदेव० १
जय जगवंद्य दयाल जय करूणामूर्ति(२)
मंगल महिमा गावा(२)वाणि नथी पुरती जयदेव० २
जय चैतन्यस्वरूप गुण गणना गणतां(२)
ऋषि मुनि सर्व विराम्या(२)लक्ष्य स्थले जातां जयदेव० ३
नथि धरता अवतार नथि प्रभुनी प्रतिमा(२)
विश्वेश्वर व्यापक प्रभु(२)चिद्घन परमात्मा जयदेव० ४
अंतर्यामि अज्ञात अनुपम अविकारी(२)
मानसि मंगल अर्चा(२)प्रभुने प्रियकारी जयदेव० ५
मळिने भक्तसमाज आराधन करिये(२)
मुक्ति पदे मळवा प्रभु(२) आश सदा धरिये जयदेव०६
दिनजन दोष दयाल नव लक्षे धरशो(२)
दुर्मति टाळि दयानिधि(२)शुभ सन्मति देशो जयदेव०७
करिये सर्व प्रणाम प्रेमथकी तमने(२)
पूर्ण कृपाथकि करशो(२)प्रभु पावन अमने जयदेव० ८

कठिण शब्दनो कोश.

अखंड.	भाग थाय नहि. जेना अंश थाय नहि ते होय नहि.
अखिल.	सर्व, कुल, बधुं.
अगम्य.	न जणाय एवा, न पामी शकाय एवा.
अगाध.	अपार.
अगोचर.	इंद्रियोना जाणवामां न आवे एवा.
अग्रे.	आगळ, पहेला.
अघ.	पाप, अपराध, गुन्हो.
अङ्कित.	सेवक, दास, चाकर, नोकर.
अचिन्त्य.	विचारमां आवी शके नहि एवो.
अजर.	जेने घडपण नहि, जे वृद्ध थता नथी ते.
अंजलि.	खोबो, पोश.
अजात, अज.	जन्म रहित. जे अवतार लेता नथी ते.
अतर्क्य.	विचारमां न आवी शके, जेनो तर्क थई न शके ते.
अतुल.	जेनी बरोबर बीजुं नहि.
अत्युग्र.	मोटुं, भारे, महा.

अदृश्य.	देखाय नहि तेवा.
अद्भुत.	आश्चर्य कारक, चमत्कारी.
अद्वितीय.	जेना जेवो बीजो नथी.
अधिष्टान.	मोटुं धाम.
अध्यक्ष.	मुख्य, प्रमुख.
अध्यात्मिक.	आत्मानुं.
अनन्यभक्ति.	एक ईश्वर विना बीजा कोइ देव उपर भक्ति न राखवी.
अनादि.	आरंभ वगरना.
अनाद्यंता.	जेनो आरंभ अने अंत नथी.
अनिर्वाच्य.	कही शकाय नहि, वर्णवी शकाय नहि.
अनुकंपा.	माया, दया, करूणा.
अनुग्रह.	उपकार, महेरबानी, कृपा.
अनुपम.	जेने कोइ जोडे सरखावी शकाय नहि.
अनुभवुं.	भोगववुं.
अनुवर्त्तन.	लागलागट करवुं.
अन्तः	मांहेनुं, अंदरनुं, अंतरनुं, मननुं.
अन्तर्गत.	मननी छानी वात.
अन्तर्याग.	मानासिक पूजा.

अन्तस्थ. मनमां रहेली.

अन्य. बीजुं.

अन्योन्याकर्षणो. एक एकना खेंचवानो.

अपरिमेय. मापी शकाय नहि तेवा, मापमां न आवे एवा.

अप्रतिम. जेनी मूर्त्ति नथी, जेनी छबी नथी.

अपाय. दुःख, कष्ट, सन्ताप.

अबाध. निर्दोष.

अब्धि. सागर, मोहाब्धि एटले मोहनो सागर.

अभाव. न होवुं.

अभिलाष. इच्छा, आशा, उमेद.

अभिवंदन. नमस्कार.

अभीष्ट. इच्छेलुं, सारूं, भक्ताभीष्ट एटले भक्तनुं इच्छेलुं, सारूं फळ आपनार.

अभेद्यपट. प्रवेश न थाय एवा पडदामां.

अभ्युदयमां. चढती कळामां, सारा वखतमां.

अमर. जेने मरण नहि.

अरिष्ट. अमंगळ, पीडा, संताप.

अर्चन. सेवा, पूजा.

अर्थ. सार, फळ, लाभ.

अर्भक.	बाळक, छोरु.
अल्पधी.	थोडी बुद्धिवाळा.
अल्पज्ञ.	थोडुं जाणनार, अणसमजु. अल्प एटले थोडुं, ज्ञ जाणनार.
अवकृपा.	गेरमहेरबानी.
अवगणना.	न गणगारवुं.
अवलंबन.	आशारो.
अविद्या.	अज्ञान. माया एटले जगत्.
अविनाश.	नाश नहि पामे तेवुं, सदाकाळ रहे एवुं.
अविहित.	मना करेला, जे करवानी ना कहेली ते, निषेध.
अव्यक्त.	माणसनी दृष्टिवडे देखाय नहि एवा.
अस्तित्व.	होवापणुं.
आर्तिहारक.	आर्ति एटले दुःख, संताप. हारक एटले हरण करनार, लइ लेनार.
आशय.	इच्छा, इरादो, हेतु, मतलब.
आश्वासन.	दीलासो, धीरज.
इष्ट.	सारुं, प्रिय, वाहालो.
ईश.	धणी, स्वामी, राजा.

उत्पादक.	उत्पन्न करनार, सरजनार.
उद्भव.	उत्पन्न.
उन्नति.	उंची अवस्था. उत्कृष्ट स्थिति.
उपकृति.	उपकार, पाड.
उपग्रह.	ग्रहनी पाछळ फरनार. चंद्र ए पृथ्वीनो उपग्रह छे. बृहस्पतिने चार चंद्र के उपग्रह छे. केटलाक बीजा ग्रहोने पण उपग्रहो छे.
उपशांति.	शांति.
उपसंहार.	समेटी लेवुं.
उपाधि.	मोह जाळ. विषयो, पदार्थो, कारणो.
उपेक्षा.	विसारवुं, भूलवुं.
उभय.	बेउ.
ऊर्मि.	उछाळो, तरंग, मनोवृत्ति.
ऐहामुष्मिक.	आ लोक अने परलोक. ऐहिक एटले अहीनुं, आ संसारनुं अने आमुष्मिक एटले परलोकनुं के मुआ पछीनुं.
औदार्य.	उदारपणुं.
औषधी.	वनस्पति.
कटाक्ष.	जराक नजर करवी, सहज जोवुं.

कन्द. संग्रह, मूळ.

करुणाब्धि. दयाना सागर.

कर्त्तृत्व. कर्त्तापणुं.

कर्तुमकर्तुम् अन्यथाकर्तुम्. कर्तुम् करवाने. अकर्तुम् न करवाने. अन्यथा कर्तुम्, बीजां रूप करवाने.

कर्त्तव्य. करवा योग्य. (कर्त्तव्य कर्म एटले फरज, धर्म, जे काम आपणे करवां जोइए ते.)

कामदा. इच्छा पूरी पाडनार.

कारुण्य. करुणा, दया.

किल्मिष. पाप.

क्लिष्ट. ताणी तोशीने बेसाडेलुं. खोटी.

कुपित. कोपायला, क्रोधायमान थयेला.

कृतज्ञ. करेलो उपकार जाणवो.

कृतघ्न. करेलो उपकार भूली जवो.

कृतकृतार्थ. आ जत्गमां जे करवानुं ते करी चूकेलो थाउं.

कृपा. महेर.

कृपाघना. घणी कृपावाळा.

क्रम.	अनुक्रम.
गहन.	न कळाय एवी, न समजाय एवी.
गुणान्वित.	गुणयुक्त, गुण भरेला, अन्वित एटले युक्त के भरेला.
ग्रहुं.	लउं.
ग्रहगण.	ग्रहोनां टोळां.
ग्रहयुति.	एक ग्रह बीजा ग्रह के सूर्य उपर थइने जतो जणाय ते.
ग्रहराज.	सूर्य.
घाटी.	कठण मार्ग, मुशकेल वखत.
चमत्कृती.	अचरत पमाडे एवां कामो.
चिद्घना.	मोटुं चैतन्य, परमेश्वर.
चिद्रूप.	चैतन्यरूप, चिदात्मा.
जगत्रयगुरु.	त्रण जगत्ना गुरु.
जगन्निवास.	जगत्मां व्यापी रहेला.
जनित.	उत्पन्न थयेला, उपजेलां.
तत्पद.	परमेश्वर, ते पद.
तदनुसार.	ते प्रमाणे, तेने अनुसरीने; तद् एटले तेवुं, अनुसार प्रमाणे.

तंत्र.	रचना, जगत्तंत्र एटले जगत्‌नी रचना के गोठवण.
तोषो.	संतोष.
त्राता.	तारनार, रक्षण करनार.
त्रिभोवन.	त्रिलोक (जुओ)
त्रिलोक.	१ स्वर्ग, २ मृत्युलोक, ३ नर्कलोक.
त्रिविधि.	त्रण प्रकारना, १ अध्यात्मिक एटले शरीर अने मन संबंधी संताप जेवा के खेद, शोक, रोग इत्यादि. २ आधि भौतिक-सृष्टिना उत्पात जेवा के भूकंप, रेल, दुकाल, आग, इत्यादि. ३ आधि दैविक-अकस्मात दैविकोप, जेवा के विजळीनुं पडवुं, कोगळीयुं इत्यादि.
दिनमणि.	सूर्य.
दीक्षा.	उपदेश. दंड दीक्षा एटले सजारूपी उपदेश.
दुरित.	पापी, नठारूं.
दुष्कर्मो.	खोटां काम, नठारां कर्मो.
दुस्तर.	तरवो कठण पडे, मुशकेलीथी तराय.
दृक्.	नजर, दृष्टि.

दृढतर.	अति दृढ.
द्योतनात्मक.	प्रकाशमान.
द्रष्टा.	जोनार.
द्रुम.	झाड.
द्वय.	बंने.
धाता.	निर्माण करनार, पेदा करनार.
धृति.	धीरज.
ध्वजा.	झुंडो, नीशान, वावटो.
ध्वांत.	घोर अंधारुं.
निगम.	वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथो.
निग्रह.	वश करवुं.
निज.	पोताना.
नित्य.	सदाकाळ के अनंत काळ सूधी रहेनार.
नित्यमेव.	सदा, रोज रोज, नित्य.
निदान.	नक्की.
निंद्य.	वखोडायलुं, निंदायलुं.
निधान.	भंडार.
निपात.	पडवुं.
निमग्न.	डुबेलुं, लपटायलुं.

नियंता. नियम चलावनार, सर्व अधिकार चलावनार राजा, वधा ब्रह्मांडने नियममां राखनारा.

नियंतृत्व. नियंतापणुं.

निर्वृत्त. टाळी नाखवुं.

निर्मित. निर्माण करेला, ठरावेला.

निवारो. दूरकरो, नाशकरो, कहाडी नाखो.

निशमणि. चंद्र.

निःशेष. बीलकुल, अशेष, वधां, तमाम.

निषिध मनाकरेला, जे करवानी ना कहीछे, अविहित, निंद्य.

निष्ठा. श्रद्धा, विश्वास, अचळ प्रीति.

निष्ठुर. नठारो, खोटो, माठो.

नेति. एवो नथी, कशा जेवो नथी, कोइ जेवो नथी. न+इति--नेति ए श्रुति छे.

नौका. वहाण, नाव.

न्युनता. ओछापणुं, उणु, कमी,

पंकज. कमळ.

पंगु. पांगळो.

पतन. पडवुं, मरवुं.

पदारविंद (पादारविंद). चरणकमळ.

परब्रह्म. मोटा ब्रह्म, सर्वव्यापक ईश्वर.

परमपद, परपद. मोक्षपद.

परमात्मा. परमेश्वर.

परा. दूर, भिन्न, जुदा.

परात्परा. सर्वथी श्रेष्ठ.

परात्मा. मोटा आत्मा, परमात्मा.

पराभक्ति. उत्तम प्रकारनी भक्ति.

परायण. वळगेली.

परेशा. मोटा ईश्वर.

पाणी. एना बे अर्थ छे, १. हाथ, २. जळ.

पादपद्म. चरण कमळ.

पादाब्ज. चरण कमळ.

पामर. तुच्छ, हलका, नीचा.

पारमार्थिक. परलोकनुं.

पाश. फांदो, जाळ, बंधन.

पुंज. ढगलो.

पूर्वक. साथे, थी, जोडे.

पृथक्. जूदा, निराळा.

प्रकृतिपरा.	जगत्थी जुदा.
प्रतिज्ञा.	वचन, कबुलात.
प्रदाता.	आपनार.
प्रदीपित.	प्रकाशित.
प्रणत.	नमेला, पाय पडेला.
प्रणमुं.	पगे लागुं.
प्रणिधान.	ध्यान, लक्ष.
प्रणिपत.	प्रणाम, नमस्कार.
प्रपालन.	पाळवाना.
प्रभा.	महिमा, खूबी.
प्रभुत्व.	मोटाइ, वडाइ, प्रभुता.
प्रभुवरा.	महाप्रभु.
प्रयास.	महेनत, श्रम, तसदी.
प्रवृत.	परोवायली, लागेली.
प्रशंसा.	वखाण, तारीफ.
प्रसाद.	कृपा, महेरबानी.
प्राणायाम.	प्राण वायुने रुंधवो.
प्रेमल.	प्रेमवाळी.
प्रेरवो.	सुझाडवो.

बलिष्ठ. सर्वथी बळवान.

बाधा. हरकतो, अडचणो, संकट.

भगण. तारा, नक्षत्रो.

भर्ग. तेज, ज्ञान अने शक्ति.

भवधरा. संसारने धारण करनार, जगत्‌ने आधार आपनार.

भासे. प्रकाशे.

भोक्तृत्व. भोगववापणुं.

भ्रमित. जुदो पडेलो, भमेलो.

भ्रमण. फरवुं, गति.

भ्रांति. भूलावो.

मग्न. डूबी गयो, लपटाइ गयो.

महत्व. मोटाइ, प्रताप.

महच्छक्ति. महत् अने शक्ति एटले मोटी शक्ति.

महान्तो. महापंडित, मोटा साधु.

महेश. मोटा ईश्वर.

महोदधि. महासागर.

माया. प्रपंच, खटपट.

मुक्त. छूटा.

मूक.	मूगो, बोबडो.
यथा.	जे प्रमाणे, जेटलुं.
यद्वातद्वा.	जेम तेम.
याचवुं.	मागवुं, जाचवुं.
यातना.	दुःख, पीडा.
याम.	पहोर (दिवसना), गति करनारा.
युत.	युक्त.
युवा.	जुवानी.
रति.	प्रेम, स्नेह.
रवींदु.	सूर्य चंद्र.
रिष्ट.	माठुं, खोटुं.
लक्ष्य.	जोवानुं ते.
लता.	वेलो.
लिप्त.	गरक, फसाइ जवुं.
वत्सल.	वहालो, प्रीय (भक्त वत्सल एटले जेने पोताना भक्त वहाला छे.)
वन्दूं.	नमुं.
वंद्य.	नमवा योग्य.
वन्हि.	अग्नि.

वर. वरदान, बक्षीश. (उपरी, धणी).

वरण्य. वखाणवा जोग.

वरद. कृपालु, सुखकारी.

वरिष्ट. सर्वोत्तम, सउथी मोटी.

वाक् कायामनथी. वाणी, शरीर, अने मन एटले बोलवुं, करवुं अने धारवुं.

वांच्छा. इच्छा.

विकर्म. दुष्ट काम.

विकार. बगडेली मनोवृत्ति.

विडंबना. दुःख, संताप.

विदारो. दूर करो.

विधाता. मोटो निर्माण करनार, ठरावनार.

विधान. विधि, सेवानो प्रकार.

विनयभाव. नम्रता.

विपत्ति. दुःख, संकट, आपत्ति, आपदा.

विबुद्ध. वधारे बुद्धिवाळा.

विभु. सर्व व्यापक, बधे ठेकाणे हाजर.

विमळ. मेल वगरनुं, चोखुं.

विमुख. दूर, आगळ, आघुं.

विराजमान.	शोभायमान.
विराम्या.	थाक्या.
विश्वाधीशा.	विश्वना अधीश एटले उपरी.
विश्वेशा.	विश्वना धणी, ब्रह्मांडना स्वामी.
विश्वंभर.	जगत्नुं भरण पोषण करनारा.
विषय.	इंद्रियोना सुखनुं भोगववुं.
विषाद.	खेद.
विहित.	जे करवाने कहेलुं छे, सारां काम, घटारत.
विज्ञप्ति.	विनंति, अरज, मागवुं.
विज्ञान.	विशेष ज्ञान, सर्व जाणनार, विशेष वात जाणनार.
वृथा.	मिथ्या, फोगट, नकामुं.
वृष्टि.	वरसाद.
व्रतस्थ.	नियम पाळनारा.
व्यष्टि.	पृथक् पृथक् वस्तुमां.
व्यापी.	व्याप्त, पसरेला.
व्योम.	आकाश.
शमदमादि.	एटले शम, दम, तप, तितिक्षा, समाधान, अने श्रद्धा. शम एटले मननी शांति. दम

एटले मननो निग्रह अथवा मननुं मारवुं, मनने कह्यामां राखवुं. तप एटले भक्ति करवामां काळ काढवो, तथा सारां कामनो विचार करवो तथा सारां काम करवां. तितिक्षा एटले आपत्तिनी के दुःखनी वेळा धीरज राखवी, गभराववुं नहि, अने परमेश्वरनी इच्छाने आधीन रहेवुं. समाधान एटले मनने संतोषमां स्थिर राखवुं. श्रद्धा एटले ईश्वर एक छे अने तेज पूज्य छे, एवो दृढ विश्वास राखी ते प्रमाणे वर्त्तवुं.

शरण्य. रक्षण करनार, पाळनार, बचावनार.

शशी. चंद्र.

शान्ताकारा. शांन्ति करनार, शाता करनार.

शाप. दुःख.

शिव. कल्याण करनार, मंगळकारी.

शिशु. बाळक.

शीघ्र. उतावळ.

श्रुति. वेद एटले ज्ञानना ग्रंथ.

श्रे.	कल्याण, शुभ, सारुं.
षडैश्वर्य.	छ ऐश्वर्य. (प्रार्थना गद्य १०मी नी टीपमां जुवो)
सगुण.	जेनामां संपूर्ण अने सर्व सारा गुण छे.
संकल्प.	ठराव, जे वखतनुं नकी कर्युं होय ते.
संचित.	एकठुं करेलुं, भेगुं करेलुं.
सर्ग.	सृष्टि, रचना.
सतत.	सदाकाळ,हमेश.
सद्धर्म.	साचो धर्म, रुडो धर्म.
सद्य.	तुरत.
सन्निध.	पासे, समीप, नजीक, ढुंकडुं.
सन्ध्या.	परमेश्वरनुं ध्यान करवानो समय के संधि.
सन्मति.	सारीबुद्धि, सारो विचार.
संपूज्य.	रुडी रीते पूजवा लायक.
समष्टि.	समुदाय.
समीप मुक्ति.	मुवा पछी परमेश्वरनी पासे रहेवुं ए समीप मुक्ति.
संरक्षार्थे.	सारा रक्षणने माटे.
सर्वविद्.	बधुं जाणनार, सर्वज्ञ.

सर्वथा. हरेक रीते, बधे प्रकारे.

सर्वज्ञ. बधुं जाणनार.

सर्वात्मा. परमात्मा.

सर्वान्तर्यामि. सर्वना अंतःकरणनी वात जाणनार, सर्वना मनमां पेसीने जोनारा.

सर्वादि. सउथी पहेला.

सर्वोत्कृष्ट. सउथी सारो.

सविता. उत्पन्न करनार, जगत्कर्त्ता.

संसाराब्धि. संसार सागर.

संस्कार. कर्म, काम.

सहनशीलता. खमी रहेवानो गुण.

सहस्रधा. हजारवार.

संहार. नाश. संहार करवो एटले नाश करवो.

स्वयंभू. स्वतःसिद्ध, कोइनाथी उत्पन्न थएला नहि.

स्वर्गापवर्ग. मोक्षधाम, परमसुखधाम.

स्वल्प. नानुं, सहेलुं, टूंकुं.

सात्विक. सारा.

साधु. सद्गुणी माणस, ईश्वर.

सानंदाश्चर्य. आनंद साथे आश्चर्य, हरखनी जोडे अचंबो.

साष्टांग. आठ अंगथी.

सिंधु. समुद्र, दरीओ, सागर.

सुखप्रदा. सुख आपनार.

सुतवात्सल्य. पिता प्रेम, बापनुं छोकरां उपर हेत.

सुधा. अमृत, अमरत.

सुरवर. देवमां मोटा, सुर एटले देव, वर एटले मोटा, के उपरी.

सुषुप्ति. घोर निंद्रा, भरउंघ.

सृजाव्या. कर्या.

सृजित. सरजेलुं.

सृष्ट्युत्पत्ति. जगत्नु पेदा थवुं.

सेतु. पुल.

स्तव. स्तोत्र, स्तवन.

स्थिरचर. जड चैतन्य.

स्त्रष्टा. सरजनार, बनावनार, परमेश्वर.

हरा, हर्त्ता. लेइ लेनार, नाश करनार.

हरि. पाप हरण करनार परमेश्वर. संस्कृत कोशमां हरि शब्दनो अर्थ विष्णु के कृष्ण कर्यो छे, पण गूजरातना जूना अने नवा

	कविओए ए शब्दने जगत्कर्त्ता अने नियंता परमेश्वरने अर्थे वापर्यो छे. प्रार्थना समाजना बधा ग्रंथोमां एज अर्थे राख्यो छे, हरि एटले परब्रह्म परमेश्वर.
हितार्थ.	फायदाने वास्ते, हित एटले गुण के फायदो ने अर्थ एटले काजे, वास्ते.
हुताशन.	अग्नि.
क्षणु, अणु.	पळ, जरावार.
क्षति.	नुकशान, दुःख, पीडा.
क्षांति.	क्षमा, माफी.
क्षेमधाम.	सुख मळवानुं ठेकाणुं,क्षेम एटले खेम के सुख ने धाम एटले ठेकाणुं,



शुद्धि पत्रक.

पानुं.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	२	जयप्रभु.	जगत्प्रभु.
६	८	सृष्टा.	स्रष्टा.
११	१	प्रंणत.	प्रणत.
२०	२	मुजाडेछे.	मुझाडेछे.
३५	१३	अंतस्थ.	अंतःस्थ.
३७	९	दारिद्र.	दारिद्र्य.
४२	१६	करूणासिंधु.	करूणासिंधु.
४३	५	सुरेश.	महेश.
५०	१८	मारि.	मारी.
५५	११	शिखरणी.	शिखरिणी.
७३	४ने५नी वच्चे	(कांई नथी)	गायन.
८९	६	ब्रह्मपदे.	ब्रह्मपदे.
१०१	१०	अमारी.	अमारि.
११०	,,	तो.	के.
१३२	१३	भरूसो.	भरूंसो.
१५२	१	४	(काढी नांखवो)

પાનુ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૧૫૩	,,	પ્રેમના.	પ્રેમનાં.
૧૫૯	૮	ઐહ્વામુષ્મિક.	ઐહામુષ્મિક.
૧૬૧	૧૫	નિષેધનો.	નિષેધના.
૧૭૨	૫ ને ૬ વચ્ચે	(કાંઈ નથી)	માલિની છંદ.
૧૭૩	૧	પ્રાણનાથેન.	પ્રાણનાથને.
૧૮૩	૭	ખાડમાથી.	ખાડમાંથી.
૧૮૭	૧૦	રુડી.	રુડિ.
,,	૧૩	સચિદ્‌ઘન.	સચ્ચિદઘન.
૨૦૦	૧૫	દારિદ્ર.	દારિદ્રય.
૨૧૦	,,	(છેડે કાંઈ નથી)	૭
૨૨૦	૧૭	સચચિદ્‌ઘન.	સચ્ચિદ્‌ઘન.
૨૨૩	૧૫	સદ્ધાર્માચરણો.	સદ્ધર્માચરણો.



जाहेर खबर.

अमदावाद प्रार्थना समाजनां पुस्तकोनुं मूल तथा मळवानां ठेकाणां.

पुस्तकोनां नाम.		किम्मत.
ईश्वर प्रार्थना माळा सुधारेली ने वधारेली		रू.आ.पा.
आवृत्ति २जी.		१-०-०
धर्मतत्व दरेक आंकने माथे.		०-०-६
ईश्वर प्रार्थना माळा पहेली आवृत्तिना		
आंक १-२-३-४-५-६ दरेकनो.		०-२-०
प्रार्थना पोथी भाग १-२-३ दरेकनी.		०-०-६
आरति भाग१ बीजी आवृत्ति.	,,	०-०-३
आरति भाग२ मोटा अक्षरनी.	,,	०-०-६
,, नाना अक्षरनी.	,,	०-०-३
मंगळ स्तोत्र.	,,	०-०-९
ईश्वर नित्योपासना.	,,	०-०-२
गायन भाग.	,,	०-६-०

आ ग्रंथो अमदावादमां ट्रेनिंगकालेजमां उपमंत्री मेहेताजी मोहनलाल कल्याणजीनी पासे तथा गुजरात वरना-

क्युलर सोसाईटीनी आफीसमां कवि दलपतरामनी पासे; तथा अमदावाद युनाईटेड प्रींटींग अने जनरल एजंसीनी आफीसमां मामानी हवेलीमां; बोरसदमां रावसाहेब मोतीलाल लालभाईनी पासे; राजकोटमां ट्रेनिंगस्कुलमां आजम हरगोविंद दुवारकांदासनी पासे; मुंबईमा दामोदर ईश्वरनी पासे; वडोदरामां रावबहादुर मणिभाई जसभाईनी पासे; तथा सुरतमां ललु जमनादासनी पासे. ठा. मोटा रस्ता उपर; जेने जोईए तेने आ ठेकाणे मळशे.